नववर्ष विशेषांक
जनवरी-2023
मूल्य-40/-
वर्ष 13
अंक 4
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
बसंत पंचमी साधना
अघोर गौरी साधना
साबर साधना-सर्वोन्नतिदायक नखनिया प्रयोग

रायपुर (छ.ग.) एवं जमशेदपुर में

आनो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वत:

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ||

श्री, ऐश्वर्य एवं बुद्धिमत्ता का सुखद सहयोग : लक्ष्मी रूपेण संस्थिता सा.

भाग्य लेखन एवं बुद्धि-विकास में सहायक : तांत्रोक्त सरस्वती साधना

घर में वास्तु दोष नष्ट कर सुख व शान्ति स्थापन में सहायक : वास्तु दोष निवारण साधना

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

आयुर्वेद

योग

यात्रा

स्तोत्र

प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद

पूजनीया माताजी

(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक

श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक

राजेश कुमार गुप्ता
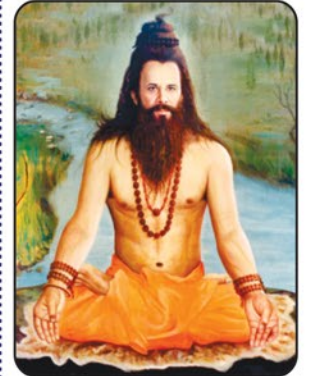
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक **श्री अरविन्द श्रीमाली** द्वारा **नारायण प्रिण्टर्स** नोएडा से मुद्रित तथा 'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' कार्यालय : हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति 40/-

वार्षिक 405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039

WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अत: उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अत: इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अत: पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

रथ शरीरं पुरुषस्य राजन्नात्मा
नियन्तेन्द्रियाण्यस्य चाश्वा:।
तैरप्रमत्त: कुशली सदश्वैर्दान्तै:
सुखं याति रथीव धीर:।।

(विदुर नीति 2/59)

मनुष्य का शरीर रथ है, बुद्धि सारथि है और इंद्रियां इसके घोड़े हैं। इनको वश में करके सावधान रहने वाला चतुर एवं धीर पुरुष काबू में किए हुए घोड़ों से रथी की भांति सुखपूर्वक यात्रा करता है।

चंचल इन्द्रियाँ

एक बच्चे का मन हमेशा ऊंट की सवारी करने का करता था। वह हमेशा सोचता कि ऊंचाई पर बैठकर नजारा देखने का आनंद कैसे लिया जाय? इसी ताक में लगा रहता। एक दिन उधर से एक सौदागर गुजरा। गांव के समीप नदी बहती थी, वहाँ उसने ऊंट से सामान उतारा और नदी में स्नान करने लगा। ऊंट को अकेला और खाली पाकर बालक उस पर जा बैठा। ऊंट की तो आदत होती है , बैठते ही भागने की। बच्चे को पीठ पर चढ़ाए वह लक्ष्यविहीन भाग खड़ा हुआ। ऊंट की भाग-दौड़ से बच्चे का शरीर छिलने लगा। बच्चा रोने लगा, चोट से लहूलुहान बालक से मार्ग में किसी यात्री ने पूछा, 'बेटा! कहाँ जाओगे?' बालक बोला-'जाना तो घर था, पर अब तो यह ऊंट जहां ले जाएगा वहीं जाना पड़ेगा।

जब सुख की इच्छाएं इन्द्रियों के वश में हो जाती हैं और उन पर हमारा कोई कन्ट्रोल नहीं रहता। तब हमारी यही दशा होती है क्योंकि इन्द्रियां ऊंट के समान हैं। उन पर सवार मनुष्य अपना रास्ता भूल जाता है। फिर उनके वश में होते हुये जहाँ इन्द्रियां ले जाएं वहीं भटकना पड़ता है।

अत: सद्गुरु इन इन्द्रियों को वश में कर उनका उपयोग करने का मार्ग बताते हैं, जिससे हम उनका सदुपयोग करते हुए अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

गुरु और शिष्य

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।
दुराच्च कमानाय प्रतिप्राणायाक्षये।
आस्मा अशृष्वन्नशा कामेना जनयत्स्वः।।

हे परमेश्वर स्वरूप सद्गुरु दिव्य शक्तिमय मेरा मन जो जागते हुए भी भटकता रहता है, संचारी भावों से ही युक्त रहता है, संकल्प विकल्प से युक्त रहता है, सुषुप्तावस्था में भी मन की कृति भटकती ही रहती है, मेरा मन दिव्य ज्योतियों से जाग्रत होकर सदा ही शुभ के संकल्प से युक्त हो जाए।

मुझे बार-बार कामना करते हुए इस ईश्वरीय हृदय में प्रतिपालन के लिये आशाओं को सुनकर सद्गुरु प्राप्त हो गये और अपने संकल्प द्वारा उस अनन्त सुख आनन्द को मेरे भीतर उत्पन्न कर दिया है।

यजुर्वेद और अथर्ववेद के इन श्लोकों से आज का प्रवचन प्रारम्भ करते हुए अपने शिष्य और जगत् के कल्याण की ही इच्छा रखता हूँ–

भ्रम जाल में, संसार के विषयों में आसक्त व्यक्ति किस प्रकार साधक शिष्य बनकर गुरुमय होकर परमानन्द की प्राप्ति कर सकता है? कैसे गुरु और शिष्य एकाकार हो सकते हैं? उन्हीं संशयों का निवारण करता हुआ परमपूज्य सद्गुरुदेव का यह ओजस्वी प्रवचन–

प्रश्न यह है कि यदि शिष्य दोष करे, यदि शिष्य गलती करे या गुरु की आज्ञा का पूरी तरह से

पालन नहीं करे तो गुरु को क्या दोष होता है? शिष्य को क्या दोष लगता है और उसका परिमार्जन कैसे हो? लगभग वैसा प्रश्न है और दूसरा प्रश्न है कि द्वैत और अद्वैत की स्थिति में कौन सी स्थिति ज्यादा श्रेयस्कर है और कैसे? यह द्वैत और अद्वैत की स्थिति वैदिक काल से है, वैदिक काल में भी एक मंत्र है यजुर्वेद का–

दवा सो पवदना यजोवासे व: सतं दाह वैदो सतं

क्या हम जो कुछ देखते हैं वह बिल्कुल एक अलग है और जो कुछ हम लोग हैं वह बिल्कुल अलग हैं और अगर दोनों अलग-अलग हैं तो यह अद्वैत है और यदि दोनों अलग-अलग नहीं हैं तो क्या ऐसा डिफरेन्स सिर्फ महसूस होता है? ऐसा अलगाव महसूस होता है और आगे की मीमांसा, आगे के उपनिषदकार इस प्रश्न को लेकर के बहुत जूझे और यह द्वैत के बाद अद्वैत का विचार, मन में द्वैत और अद्वैत की लड़ाई वैदिक काल से लगाकर आज तक भी चलती आई है। कुछ लोग कहते हैं कि इस संसार में द्वैत है क्योंकि माया अलग चीज है ब्रह्म अलग चीज है, तीसरी कोई चीज संसार में है ही नहीं। जो कुछ है वह पूरा संसार और जिस संसार के हम भी एक प्राणी हैं, एक सदस्य हैं, एक पदार्थ हैं हम, जैसे रुई एक पदार्थ है, जैसे हवा एक पदार्थ है, उसी प्रकार से हम भी एक पदार्थ हैं और वैज्ञानिक भाषा में एक पदार्थ में भार होना चाहिए। पदार्थ उसको कहते हैं जो जगह घेरता हो, पदार्थ

उसको कहते हैं जिसमें घनत्व होता है और मनुष्य में घनत्व भी है, मनुष्य जगह घेरता है और मनुष्य में भार है इसीलिए मनुष्य भी पदार्थ की श्रेणी में ही आता है और दूसरी है यह माया। जब उपनिषदकार या वैदिककार यह कहते हैं–

'अहं ब्रह्मास्मि द्वितीयो नास्ति'

मैं ब्रह्म हूँ और साथ-साथ एक बात और कह रहा है यहाँ दूसरी कोई चीज है ही नहीं। जब मैं ब्रह्म हूँ तो फिर यह पत्नी क्या है और मैं ब्रह्म हूँ तो यह पुत्र क्या है और मैं ब्रह्म हूँ तो फिर यह पंखा, यह लाईट, यह रोशनी, यह सुख, यह सामग्री की वस्तुएँ, यह विलास का यह ऐश, आराम, भोग-विलास का यह सब क्या है?

क्योंकि शास्त्र तो झूठ है नहीं और शास्त्र में यह कहा है 'अहं ब्रह्मास्मि' क्योंकि संसार में केवल मैं हूँ 'अहं' और अहं शब्द बना है पूरे संस्कृत की वर्णमाला का सारगर्भित स्वरूप, क्योंकि वर्णमाला का प्रथम अक्षर 'अ' से शुरू होता है और अंतिम अक्षर 'ह' है। अ आ ई से शुरू करते हैं और य, र, ल, व, श, ष, स, ह। अ से लगाकर ह तक जितने वर्ण हैं और उस बीच में जितने नाम आते हैं, पशु-पक्षी, कीट-पतंग, आदमी वह सब कुछ मैं हूँ।

इसीलिए, शास्त्र ने कहा 'अहं', उसने मनुष्य के लिए अहं नहीं कहा वह सब कुछ मैं ही हूं और श्रीकृष्ण ने भी गीता में यही बात कही जो 'अहं ब्रह्मास्मि' में शब्द आया उसी 'अहं' की व्याख्या गीता में हुई और गीता के दसवें अध्याय में हम पढें तो श्रीकृष्ण अर्जुन को कह रहे हैं

कि मैं, वृक्षों में पीपल का पेड़ हूँ, ऐसा नहीं कि मैं कृष्ण हूँ वह कह रहे हैं कि मैं नदियों में गंगा नदी हूँ, मैं, पहाड़ों में हिमालय हूँ, मैं, धातुओं में स्वर्ण हूँ इसका मतलब कहने का यह है कि 'अहं ब्रह्मास्मि' मैं ब्रह्म हूँ और अगर तुम मुझको पत्ता समझ सकते हो, पेड़ समझ सकते हो, मुझे नदी समझ सकते हो, मुझे धातु समझ सकते हो, वह जो कुछ भी समझ सकते हो वह मैं स्वयं ही हूँ।

यह तो उन लोगों की विचारधारा है जो अद्वैत मानते हैं। यह अद्वैत मानने वाले लोगों के चिन्तन हैं, एक विचार है, एक धारणा है और उस विचार को भी हम बिल्कुल नैगलेक्ट नहीं कर सकते हैं, मना नहीं कर सकते हैं, क्योंकि वह स्वयं कह रहे हैं कि मेरे अलावा संसार में जो कुछ है वह है ही नहीं। द्वैत को मानने वाले भी विचारक हैं और वे कहते हैं कि 'अहं' मैं तो हूँ इसको हम मना नहीं कर रहे मगर मेरे अलावा भी कोई दूसरी चीजें हैं जो मेरे ऊपर प्रभाव डाल रही हैं जो मेरे ऊपर प्रभाव डाल सकती है तो दूसरी कोई चीज जरूर है। वह यह नहीं कह रहे कि तुम पीपल के पेड़ हो, इसको हम भी मानते हैं और तुम नदी हो यह भी हम मान लेते हैं, और तुम हिमालय हो यह भी हम मान लेते हैं मगर तुम पर अगर दूसरी चीज का प्रभाव पड़ता है तो फिर दूसरी चीज जरूरी है जिसका प्रभाव पड़ता है। और हम पर प्रभाव पड़ता है सर्दी का, गर्मी का, परिस्थितियों का, गाली का, प्रसन्नता का, सम्मान का, असम्मान का, बीमारियों का, रोग का, सुख का और दुःख का।

इसका मतलब है ये चीजें कुछ और हैं जो हम पर प्रभाव डालती हैं और प्रभाव कोई दूसरी चीज डाल सकती है क्योंकि अगर तुम खुद प्रभाव ही हो तो फिर ये कभी गर्मी, कभी सर्दी क्यों हमेशा व्याप्त होती है अगर कोई दूसरी चीज है नहीं, व्याप्त होने वाली कोई चीज है ही नहीं तो कभी तुम रोते हो, कभी तुम प्रसन्न होते हो ऐसा क्यों होता है? इसीलिए लोग कह रहे हैं कि नहीं, एक ही चीज नहीं है द्वैत है दो चीजें अलग-अलग हैं एक चीज 'ब्रह्म' है और दूसरी वे सारी चीजें हैं जो इस ब्रह्म पर प्रभाव डालती हैं जिसको 'माया' कहा गया है इसीलिए इन दोनों की अलग-अलग विद्वानों ने अलग-अलग तरह से व्याख्या की है और कोई भी शास्त्र कोई भी चिंतन तभी आगे बढ़ता है जब कहीं विरोध होता है। विरोध नहीं हो तो शास्त्र आगे नहीं बढ़ सकता है क्योंकि मैं एक ही लाइन की व्याख्या अपने ढंग से करूंगा तो दूसरा व्यक्ति, अलग

ढंग से करेगा।

जो भारतीय कानून बनाये गये हैं उसकी पुस्तक प्रकाशित है और दो वकील उस पुस्तक में एक ही लाइन के दो अलग-अलग अर्थ निकालते हैं। एक कहता है नहीं इस कानून का यह अर्थ है, दूसरा वकील कहता है नहीं यह अर्थ है लाईन एक ही लिखी है, दोनों के लिए कानून की पुस्तक अलग-अलग नहीं है, किन्तु दोनों उसके अर्थ अलग-अलग निकालते हैं। ठीक उसी प्रकार से द्वैत और अद्वैत-मूल वस्तुस्थिति आत्म है, प्राणश्चेतना है और इस प्राणश्चेतना के उन लोगों ने दो अर्थ निकाले हैं जिसको 'ब्रह्म' कहा गया है जिसको 'माया' कहा गया है। प्रश्न यहीं नहीं समाप्त होता है यहाँ तो मैंने तुम्हें यह समझाया कि द्वैत का अर्थ क्या है अद्वैत का अर्थ क्या है और विद्वानों ने द्वैत क्यों कहा और विद्वानों ने अद्वैत क्यों कहा और प्रारम्भ से लगाकर आज तक अद्वैत को भी मानने वाले सैकड़ों ऋषि, संन्यासी, विद्वान हुए और द्वैत को मानने वाले भी सैकड़ों ऋषि, संन्यासी, विद्वान हुए।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या गुरु और शिष्य अद्वैत है या द्वैत है? यह प्रश्न जरूरी है और इसका उत्तर शंकराचार्य ने अत्यन्त ही प्रमाणिक ढंग से दिया है और मैं शंकर या शंकराचार्य का उदाहरण इसीलिए देता हूँ कि वे साक्षात शिव के स्वरूपमय है और शिव अपने आप में पूर्णतः देव हैं जिनको कि देवता ही नहीं महादेव कहा गया है और उन्होंने जो कुछ व्याख्याएँ की जो कुछ चिंतन किया, जो कुछ तर्क दिया, जो कुछ बात कही वह अपने आप में अत्यन्त सारगर्भित और महत्वपूर्ण है और जहाँ गुरु और शिष्य का प्रसंग आया वहाँ पर उन्होंने शंकराचार्य ने स्पष्ट रूप से कहा–

पूर्णं सदैव पूर्ण मदैव रूपं गुरुवै वाताम
पूर्ण मदैव शिष्यं

शिष्य गुरु से अलग है, शिष्य गुरु नहीं है और गुरु शिष्य नहीं है वह दोनों एक अलग-अलग हैं इसीलिए अलग-अलग हैं कि जीवन में अद्वैत है ही नहीं, अद्वैत केवल अपने आप को छलावा देना है और सही अर्थों में देखा जाय तो अद्वैत के मीमांसाकारों ने अंत में हार स्वीकार की है और द्वैत, यह सिद्धांत

मानने वालों ने अपने आप को सही ढंग से प्रतिपादित किया। जिन्होंने यह कहा कि माया और ब्रह्म अलग-अलग है। इस बात को अधिकतर विद्वानों ने स्वीकार किया और प्रतिशत के हिसाब से कहें तो यह 90 प्रतिशत और 10 प्रतिशत है। 10 प्रतिशत विद्वानों ने कहा अलग-अलग नहीं है, 90 प्रतिशत विद्वानों ने वेद से लगाकर इस बात को कहा कि माया अलग है, ब्रह्म अलग है और माया व्याप्त होती है ब्रह्म पर भी क्योंकि ब्रह्म किसी शरीर में स्थित है ब्रह्म अलग खड़ा नहीं हो सकता। वह ब्रह्म जब शरीर में स्थित है तो वह शरीर उस माया से व्याप्त होता है, जब मैं सुख अनुभव करता हूँ तो ब्रह्म अनुभव नहीं कर रहा मैं अनुभव कर रहा हूँ, मैं जो कि मेरा शरीर है मैं गर्मी महसूस कर रहा हूँ, मैं सर्दी महसूस कर रहा हूँ, मैं प्रसन्न हो रहा हूँ, मैं उदास हो रहा हूँ। क्योंकि ब्रह्म तो निर्विकार है, निर्लिप्त है और निर्विकार है तो उसके ऊपर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ता है, वह एक अलग चीज है। इसीलिए गुरु और शिष्य भी अपने आप में द्वैत है। शिष्य की एक मर्यादा है, गुरु की एक मर्यादा है। गुरु एक तत्व बोध है, शिष्य भी एक तत्व बोध है या यों कहा जाय कि गुरु का एक अंश बोध स्वरूप है। जो गुरु अपने आप में पूर्ण है उसका एक घटक, एक कण, एक चिंतन, शिष्य है मगर शिष्य अपनी क्रियाओं के माध्यम से अपने चिंतन के माध्यम से अपने विचारों के माध्यम से गुरु की ओर बराबर बढ़ता हुआ उसमें पूर्णतः लीन हो सकता है और लीन होकर के अद्वैत बन सकता है क्योंकि शिष्य की अपनी एक स्थिति है क्योंकि जीवन का जो आनन्द शिष्य में है वह गुरु में नहीं है, जो चिंतन शिष्य कर सकता है गुरु नहीं कर सकता। गुरु एक मर्यादा में बंधा हुआ है। उस मर्यादा के बाहर गुरु नहीं जा सकता मगर शिष्य के सामने दोनों रास्ते खुले हैं क्योंकि उसका चलने का एक रास्ता है गुरु एक स्थिर है, एक जगह खड़ा हो गया है और गुरु खड़ा हो गया है उस ब्रह्म को पूर्णतः आत्मसात करके क्योंकि वह स्वयं ब्रह्म स्वरूप है। गुरु नहीं रहा गुरु स्वयं ब्रह्म बन गया है जो ब्रह्म बन गया तो उसके लिए शरीर, माया, मोह, ऐश, आराम, भोग, विलास एक अन्य साधन बन गए जो कि उस पर व्याप्त नहीं होते प्रभाव डालते हैं, व्याप्त नहीं होते वह दुःख आने पर भी दुखी नहीं होता, सरल भाव से लेता है। प्रसन्नता

आने पर भी खिलखिलाता है, एकदम से उछलता नहीं है सहज भाव से लेता है। दुख आ गया तो ठीक है, सुख आ गया तो ठीक है अगर शाम को हलवा-मिठाई मिल गई तो ठीक है, सूखे टुकड़े मिल गए तो ठीक है अगर ऐसा चिंतन उसके मानस में सहज रूप से है तो वह गुरु है। गुरु की लिमिटेशन है क्योंकि गुरु अपने ज्ञान के माध्यम से बढ़ता-बढ़ता उस ब्रह्म तक पहुँच गया है जहाँ निर्विकार है किसी प्रकार का विकार नहीं है और संसार में शास्त्रों ने 36 विकार बतलाये। 37वां कोई विकार नहीं। 36 विकार में—काम, क्रोध, मोह, लोभ, लालच, स्वार्थ, ऐश, आराम, चिंतन, निद्रा, झूठ, छल, कपट, व्यभिचार, ममता, अटेचमेंट, स्नेह, हर्ष, शोक यह सब संचारी भाव हैं और संचारी भाव आते हैं और चले जाते हैं। संचार का मतलब है गतिशील, एक ही भाव स्थिर नहीं रहता जिनमें एक ही भाव स्थिर नहीं रहता उनको शिष्य कहते हैं और एक ही भाव में स्थिर रह जाते हैं उनको गुरु कहते हैं। इसीलिए गुरु अपने आप में अद्वैत है शिष्य अपने आप में द्वैत है, शिष्य धीरे-धीरे अद्वैत की स्टेज में आ सकता है, वह आ सकता है अपने आप में गुरु को स्थापित करके और अपने आप में गुरु को स्थापन करने की क्रिया का प्रारम्भ होता है दीक्षा से और अंतिम स्थिति बनती है जब पूर्ण रूप से गुरुमय हो जाता है उसके सामने गुरु ही चिंतन में दिखाई देता है वह अगर राम की प्रशंसा करता है तो ऐसा लगता है कि मेरे सामने मेरे गुरु खड़े हैं, आज गुरुदेव ने धनुष बाण हाथ में ले लिया है, क्या बात है? यह चिंतन जब उसके शरीर में, चिंतन में, विचारधारा में समाहित हो जाता है तो संचारी भाव खत्म हो जाते हैं क्योंकि तुलसीदास वृन्दावन गए और वृन्दावन में जाकर के उन्होंने कृष्ण के दर्शन किए तो उन्होंने कहा कि—

तुलसी मस्तक तब नभै
धनुष बाण ल्यो हाथ।

मैं आपको प्रणाम तो करता हूँ मगर मुझे कुछ सान्निध्यता अनुभूत नहीं होती, ऐसा तब हो सकता हूँ जब तुम्हारे हाथ में धनुष बाण हों, क्योंकि वह पूर्ण राममय हो गए थे। बांसुरी हाथ में लिए हुए व्यक्ति को वह पहचान ही नहीं पा रहे था उनको बड़ा अटपटा लग रहा था कि यह ऐसे कैसे हैं और वह साफ कह रहा है कि तुलसी मस्तक तब

नभै धनुष बाण ल्यो हाथ और ठीक यही स्टेज जो तुलसी की राम के प्रति बनी। वह स्टेज शिष्य की गुरु के प्रति बनती है क्योंकि जब वह उस राम की मूर्ति के दर्शन करता है तब भी उसको वही गुरु का चेहरा दिखाई देता है वह गुरु का शरीर आज तो बड़े नये रूप में है, पीताम्बर पहने हुए है और आज तो बड़े ही प्रसन्न मुद्रा में है और जब वह गुलाब का पुष्प देखता है तो उस गुलाब के पुष्प में उसको गुरु का चित्र दिखाई देता है कि आज कितने सुन्दर ढंग से यह मुस्कुरा रहे हैं और उसको गुलाब के पुष्प में भी गुरु के साक्षात बिम्ब दिखाई देते हैं।

यह दिखाई देने की क्रिया तब बनती है जब धीरे-धीरे शिष्य गुरु की ओर समर्पित होता है। मैंने कहा प्रारम्भ उसका दीक्षा से है, दीक्षा का मतलब है धीरे-धीरे शिष्य नजदीक आता है। शिष्य का मतलब है नजदीक आना और नजदीक की परिभाषा है बिल्कुल एक हो जाना उसको नजदीक कहते हैं। शिष्य का मतलब है निकट, निकटतर, निकटतम और पूर्णत: एक हो जाना।

यह शिष्य की क्रिया है यह शिष्य की गुरुमय बने की क्रिया है और शिष्य की पूर्णता तब है जब गुरुमय बनता है इसलिए गुरु और शिष्य दोनों अलग-अलग हैं, बीच में डिफरेन्स है, वह पांच फीट का हो सकता है वह डिफरेन्स तीन इंच का हो सकता है। यह डिफरेन्स पांच फुट या तीन इंच का क्यों होता है जिसमें संचारी भाव ज्यादा होंगे वह उतना ही गुरु से दूर रहेगा क्योंकि कभी उसको क्रोध आयेगा, कभी उसको स्वार्थ आयेगा, कभी उसका चिंतन दूषित होगा, कभी वह उदास रहेगा तो सारा उसका जीवन का क्षण संचारी भावों में ही व्यतीत हो जायेगा। वह उदास है, परेशान है, यह ऐसा हो गया वह ऐसा हो गया, वह गुरुचिंतन छूट जायेगा वह दो घंटे जो चिंतन किया वह दो घंटे जो गुरुमय होना था वह छूट जायेगा। वह गुरु चिंतन होना था वह उस चिंतन में चला गया। फिर उसके बाद कि अगर मुझे पांच हजार रुपये मिल जाए तो मैं ऐसा कर दूंगा वह आधे घंटे पांच हजार मिल जाएंगे तो क्या कर दूंगा आधा घंटा फिर उसमें चला गया और फिर सोचा कि शादी हुई नहीं, शादी होती तो लोग बहुत खुश हैं और मैं उस प्रकार की राय नहीं करता जो लोग शादी करने के बाद करते हैं मैं उसको

सुखी रखता तो दो घंटे यह सोचने में खर्च हो गए। यह संचारी भाव उसको घेरे रखते हैं, घंटे तो दिन में 24 ही हैं और उन चौबीस घंटे में 12 घंटे नींद के, इसका मतलब तुम्हारी आयु यदि साठ साल है तो साठ साल में तुम्हारी 16 वर्ष बाल्यावस्था में चले गए, उतने दिन तुम्हारे हाथ में थे ही नहीं, तुम्हें नेकर पहनना आता ही नहीं था, तुम्हें खाना नहीं आता था, तुम्हें पीना नहीं आता था, तुम्हारी मां ने तुम्हें पीना सिखाया। तुम्हारे चाचा जी ने उठना सिखाया, बोलना सिखाया। 16 साल की अवस्था तुम्हारी वह चली गई, पीछे रहे तुम्हारे 44 साल में से 22 साल नींद में चले गये। पीछे रहे 22 और उन 22 सालों में भी तुम 20 इन संचारी भावों में व्यतीत कर दोगे तो गुरु के हिस्से में तुम्हारे कुल जिन्दगी के दो वर्ष रहे इसीलिए पूरी जिन्दगी बीतने पर भी गुरु और शिष्य के बीच में जो पांच फीट की दूरी है। वह बनी रहती है इसलिए जहां उसने प्रश्न किया है कि जहाँ शिष्य गलती करे और गलती शिष्य तब ही करता है जब उसमें संचारी भाव जाग्रत होते हैं या उसके ऊपर संचारी भाव हावी होते हैं और जब संचारी भाव हावी होते हैं जितने संचारी भाव हावी होंगे उतना ही शिष्य कमजोर होगा उतना ही शिष्यत्व से दूर होगा, क्योंकि उन संचारी भावों को हटाने के लिए एक ही क्रिया है वह गुरुमय बने और गुरुमय बनने के लिए निरन्तर गुरुमंत्र जाप करें।

यदि आपने देखा होगा तो कुछ घटनाएँ ऐसी होती हैं कि मजनू को पूछा गया कि तुमने खुदा देखा, राजा ने बुलाकर पूछा तो उसने कहा बिल्कुल देखा, और जी भर के देखा है, राजा ने पूछा, कैसा है? मजनू बोलो, ठीक लैला की तरह ऐसी आंख है ऐसी नाक है ऐसी कान ऐसा खुदा, उसका और कोई चिंतन नहीं, वह पूर्ण लैलामय हो गया था और कोई चिंतन ही नहीं था जब राजा जैसा आदमी पूछता है तुमने खुदा देखा तो कहता है, हां देखा है वह दम के साथ कह रहा है और जो विवरण दे रहा है अपनी लैला का दे रहा है और आप किसी प्रेमी को शुरू-शुरू में देखें, कच्चा प्यार जिसको कहते हैं उसकी आँख में एक ही तस्वीर गूंजती रहती है वह ऐसी है उसका चेहरा गुलाब की तरह मुस्कुराता है, आँखें हिरणी की तरह है वह सारी गाय, भैंस,

बकरी, सारी उसमें जोड़ देता है नारी शरीर रहता ही नहीं उस नारी शरीर में फूल पौधे, गुलाब, चमेली, पत्तियाँ, केवड़ा मोगरा और सांप की तरह लट और खजूर की तरह आँखें और फल की तरह होंठ वह सब पेड़, पंछी, पशु बना कर खड़ा कर देता है। वह नारी शरीर कहाँ चला गया वह उसके मानस में कुछ नहीं क्योंकि वह संचारी भाव जाग्रत हो गया और शिष्य में जब संचारी भाव जाग्रत होगा जितना भाव जाग्रत है उतना गुरुत्व कम रहेगा इसलिए मैंने कहा कि पूरे जीवनभर भी वह पांच फुट की दूरी बनी रह सकती है और यदि चाहे तो छह महिने में भी वह गुरु के चरणों में पहुँच सकता है इसलिए गलती तब होती है जब उसमें संचारी भाव होते हैं। गुरु ने आज्ञा दी और तुमने पूरा किया अब तुम उसमें संचारी भाव जोड़ोगे तो वह दूरी पांच से साढे छह फीट बन जायेगी वह एक फीट पीछे सरकेगी, आगे की ओर नहीं बढ़ेगी क्योंकि तुम उसमें बुद्धि लगाओगे कि गुरु ने एक घंटे में आने को कहा डेढ़ घंटा हो जायेगा तो गुरुजी कौन सी फांसी दे देंगे और चले जायेंगे। क्या बात है? लेट कैसे आए? गुरुजी मार्ग में गाड़ी पंचर हो गई तो पहिया उतर गया था, पहिया ठीक किया थोड़ा। अब गुरुजी समझ रहे हैं गुरु है तो बिल्कुल समझ रहे हैं मगर वह समझ नहीं रहा कि अभी यह पांच फीट पर था अब यह पांच फीट दो इंच पर है और वह दो इंच दूरी तुमने ही बनाई गुरु ने नहीं। तुमने अपने वचनों से, अपने लक्षणों से, अपनी बुद्धि से अपनी दूरी बढाई जबकि तुम्हारी ड्युटी थी गुरु के और दो इंच नजदीक जाना और अगर तुमको कहा यह काम करना है तो वह काम तुमको करना ही है। क्योंकि गुरु को ज्यादा मालुम है कि तुम्हें उनके नजदीक जाने में क्या करना है। गुरु तो केवल एक कर्त्तव्य है वह गुरु है वह तुम्हारा पति नहीं, वह तुम्हारी पत्नी नहीं, वह तुम्हारा भाई नहीं, वह तुम्हारा सम्बन्धी नहीं है वह तुम्हारा गुरु है और गुरु की तो केवल एक ही कल्पना है वह शिष्य को अपने में समाहित करें। अगर पति हूँ मैं जिस क्षण मैं पति बनूँगा तो मैं पत्नी को उस ढंग से बात करूँगा, उस समय में गुरु नहीं हूँ जब मैं पिता बनूँगा तो मैं अपने पुत्र से उस ढंग से बात करूँगा वहाँ मेरी यह क्रिया नहीं होगी कि पुत्र मुझ में लीन हो मगर जहाँ मैं गुरु बनूँगा और जहाँ शिष्य है वहाँ पर उस गुरु का केवल एक ही धर्म कर्त्तव्य है कि शिष्य को अपने

आप अन्दर लाएं। वह अन्दर लाने का प्रयत्न करता है और शिष्य उन संचारी भावों के कारण दूर जाने का प्रयत्न करता है या नजदीक आने का प्रयत्न करता है। इसलिए शिष्य को सापेक्षी कहा गया है कि शिष्य प्रयत्न करे और गुरु की तरफ बढे यह शब्द लगाया शंकराचार्य ने।

मैंने जो श्लोक बोला था उस श्लोक का अर्थ यह है कि शिष्य प्रयत्नपूर्वक गुरु की तरफ बढे और प्रयत्नपूर्वक उन संचारी भावों को हटाकर, स्वयं ही हटाएं और फिर गुरु में लीन हो जाएं। फिर गुरु के चित्त और गुरु मंत्र में लीन हो जाएं और यदि वासना, कुविचार, चिंतन आते हैं तो हाल में बैठ जाएं गुरु के चरणों की तरफ साफ-साफ देखता रहे और कुछ नहीं तो आंख बंद करके गुरु को अपने आप में लीन होने की क्रिया करें और धीरे-धीरे सरकता सरकता एक क्षण ऐसा आता है कि वह गुरुमय बन जाता है क्योंकि उसे गुरु के अलावा कुछ दिखाई ही नहीं देता है, पेड़ में भी उस गुरु को देखता है, यह तुम्हारा सौभाग्य है कि तुम चार फिट की दूरी पर नहीं हो अब तुम जितने संचारी भाव कम कर सकोगे जितने गुरु-मंत्र में लीन हो सकोगे जितना अपने मन में गुरु को धारण कर सकोगे जितना ही गुरु का कार्य कर सकोगे, मशीन भी चला रहे तो गुरु का कार्य है गुनगुनाहट है तो गुरु की गुनगुनाहट है कोई भजन भी गा रहा है तो गुरु का भजन गा रहा है कोई सफाई भी कर रहा तो गुरु आश्रम की सफाई कर रहा है। कोई भी कार्य जो उसे सौंपा गया है उसे तन्मयता के साथ कर रहा है तो वह अपने आप में लीन है तो गुरु में लीन है दिखाई देता है तो गुरु ही दिखाई देता है ऐसी स्टेज आ सकती है और ऐसी स्टेज आना उस ब्रह्म का साक्षात्कार करना है और ब्रह्म साक्षात्कार करना गुरुत्व को प्राप्त करना और गुरुत्व को प्राप्त करना जीवन के टॉप पर पहुँचना है। जहाँ पर आम आदमी नहीं पहुँच सकता है लाखों में से एक व्यक्ति पहुँच सकता है दो व्यक्ति पहुँच सकते हैं इसलिए तुम्हारे मेरे बीच में बहुत कम फासला रह गया और मेरे पास बहुत कम समय रह गया है इसलिए हम उस फासले को कितना जल्दी पार कर लें यह तुम पर निर्भर है यह संचारी भाव तो जाग्रत होंगे ही, तुम नहीं गाओगे तो आस-पड़ोस वाला फिल्मी गाना तो गायेगा ही, तुम उन संचारी

भावों को रोक नहीं सकते मगर तुम बिल्कुल उसमें भी गुरुमय, प्राणमय हो सको तब तुम्हारे और गुरु के बीच की दूरी कम हो सकेगी।

मैंने एक किस्सा सुनाया कि अकबर दोपहर के समय, एक दिन दोपहर हो गई तो नमाज पढ़ने का टाइम होगया तो रास्ते पर ही चादर बिछा ली और घुटने टेककर अकबर नमाज अदा करने लगा, उस अल्लाह में लीन होने लगाऔर ठीक एक बजे एक प्रेमी ने प्रेमिका को मिलने का टाइम दिया था कि ठीक एक बजे आएगी तो ही मैं मिलूंगा उसके बाद नहीं मिलूंगा सुन ले और प्रेमिका एक दम से हड़बड़ाती हुई घर से निकली कि मां-बाप देखे नहीं, पांच मिनट का टाइम है फिर वह चला जायेगा। दौड़ती हुई जा रही थी अकबर नमाज पढ रहा था, चादर के ऊपर पांव रखती हुई चली गई, राजा पूरे भारतवर्ष का, बहुत गुस्सा आया, यह औरत है कि क्या है, मैं खुदा की इबादत कर रहा हूँ, यह क्या कर रही है। ख़ैर फिर नमाज, इबादत करने लगा। वह वापस प्रेमी से मिलकर, जो कुछ बातचीत करनी थी करके वापस आई तो अकबर ने हाथ पकड़ा बोले–मूर्ख! तुम्हें शर्म नहीं आती। मैं खुदा की इबादत कर रहा था, तुम चादर पर पांव रखकर चली गई, वह बोली, खुदा की इबादत कर रहे थे तो तुम्हें कैसे मालूम पड़ा कि मैं आई और मैंने चादर पर पांव रखा। तुम्हें कैसे मालूम पड़ा कि मैं गई, मुझे तो तुम दिखाई ही नहीं दिए, मुझे तो न चादर दिखाई दी और न आप, मुझे तो प्रेमी दिखाई दे रहा था और कुछ दिखाई नहीं दे रहा थ, तुम्हें भगवान दिखाई दे रहे थे, मैं दिखाई दे रही थी या चादर। चूंकि वह प्रेमीमय हो गई थी, वह गुरुमय हो गई थी इसीलिए न उसको अकबर दिखाई दिया न चादर दिखाई दी उसके आँख के सामने प्रेमी था और जाना था जब तुम गुरुमय हो जाओगे तो न तुम्हें गाने दिखाई देंगे, न फिल्मी गीत सुनाई देंगे, न आसपास का वातावरण और न संचारी भाव दिखाई देगा तब तुम गुरुमय बन जाओगे। यह संचारी भाव अपनी जगह चलेंगे, तुम अपनी जगह चलोगे और फिर वह दो इंच का सरकना हुआ गुरु के पास और मैं आशीर्वाद देता हूँ कि तुम गुरुमय बन सको, तुम गुरु में लीन हो सको। कुछ बनो न बनो उस आनन्द को प्राप्त कर सको, तुम्हारा प्रत्येक दिन उत्साह पूर्ण हो, मैं तुम्हें

देखता हूँ नित्य उदासी पूर्ण, मरे हुए चेहरे, उदास और रोते हुए चेहरे। मैं जब सुबह-सुबह देखता हूँ तो सोचता हूँ कि शिष्य है या मुर्दे कब्रों में से उठकर आएं हैं, मुझे अफसोस होता है कि मैं गलत हूँ या शिष्य गलत है क्योंकि चेहरे ऐसे जैसे थप्पड़ खाये हुए, मुरझाये हुए चेहरे उदास। सोचता हूँ, क्या यह कब्र में से तो उठकर नहीं आए? क्योंकि तुम में उत्साह नहीं है, एक चेतना नहीं है, एक जाग्रत अवस्था नहीं है। यह नहीं है तो तुम गुरुमय नहीं हो और जब गुरुमय बनोगे तो चेहरे पर एक अपूर्व चेतना दिखाई देगी। लाली मेरे लाल कि मैं भी हो गई लाल, वह खुद लालमय हो जाती है, ललायीयुक्त हो जाती है, उसका चेहरा लाल हो जाता है और मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा प्रत्येक क्षण प्रफुल्लता पूर्ण हो, सफलता पूर्ण हो, ओज पूर्ण हो, जोश पूर्ण हो, उत्साह पूर्ण हो और गुरुमय हो मैं ऐसा ही आशीर्वाद देता हूँ।

तुम्हारा अपना नारायणदत्त श्रीमाली जिसे तुम चाहो तो निखिलेश्वरानन्द कहो या सद्गुरु कहो, हूँ मैं तुम्हारा अपना ही–

पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमालीजी
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

- क्या आप शत्रुभय से छुटकारा पाना चाहते हैं?
- क्या आप अकाल मृत्यु के भय को समाप्त करना चाहते हैं?
- क्या आप मुकदमे में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं?
- क्या आप जीवन में सर्वत्र विजय और चतुर्दिक सफलता प्राप्त करना चाहते हैं?
- यह दुर्लभ यंत्र आपके इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक है और पूर्णतः निःशुल्क भी।

हिडिम्बा यंत्र

विधान

इस यंत्र को शनिवार को रात्रि 9 बजे के बाद जल से स्नान करावें फिर कुंकुम, अक्षत से पूजन करें। फिर 'ॐ ह्रीं हिडिम्बायै नमः' (Om Hleem Hidimbaayei Namah) मंत्र का 15 मिनट तक जप करें। नित्य रात्रि को सोने से पूर्व इस मंत्र का 5 बार उच्चारण कर लें। दो माह बाद यंत्र को जल में विसर्जित करें। यह यंत्र आपके जीवन में सौभाग्य एवं विजय का प्रतीक है, इसके प्रभाव से शत्रुओं का आतंक समाप्त हो जाता है।

450/-

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/-, Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

नारायण मंत्र साधना विज्ञान जोधपुर

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001

8890543002 0291 2432209, 0291 2432010, 0291 2433623, 0291 7960039

वास्तव में तीनों महाशक्तियों का मूल स्वरूप एक ही है, अर्थात् हम चाहे महाकाली की आराधना करें या महासरस्वती की अथवा महालक्ष्मी की, मूल बात शक्ति साधना की ही है।

लक्ष्मी रूपेण संस्थिता

साधु की जाति क्या और धर्म क्या, उसका नाम क्या और पता-ठिकाना क्या,
जिस सम्बोधन से भी बुला लिया, वह उसी से सहमत,
रुक गया वहीं ठिकाना, न मोह, न ममता - भला मोह और ममता हो भी तो किससे?
सभी तो एक हैं; रिश्तों में बाँध लेने से ही तो कोई अपना नहीं हो जाता।

यही कथा है उन साधु महाशय की, जिनसे कुछ वर्षों पूर्व मेरी भेंट हुई। अनेक प्रयत्न करने पर भी उनका परिचय विस्तार से न प्राप्त हो सका, यद्धपि आत्मीयता इतनी कि अपने सगे-संबंधियों में भी न मिले। सारा ध्यान केवल साधना, इष्ट चर्चा एवं गुरु वर्णन तक ही सीमित और बातों ही बातों के मध्य उनके श्रीमुख से प्रकट होते ऐसे साधना सूत्र, जो किसी भी ग्रंथ में न मिलें। उनका स्वभाव देखकर मैंने अपने मन से ही उनका एक नाम सोच लिया - 'हृदयानंद' और जब उन्हें बताया, तो वे ठठा कर हंस पड़े। ठीक भी तो था, क्योंकि साधना की खेती उन्हीं के मन में लहलहाती है, जिनका हृदय प्रेम के हल से जोता जा चुका हो।

स्वामी हृदयानंद जी के सहज व्यवहार से वशीभूत होकर उनसे मैं प्राय: हठपूर्वक ऐसे प्रश्न पूछ लेता था, जो कि सामान्य दृष्टि से अटपटे लग सकते थे, किन्तु उनमें गूढ़ तत्व छिपा अवश्य होता था। ऐसे ही क्रम में मैं उनसे एक दिन पूछ बैठा, कि यह विरक्त और साधु जीवन कहां तक उचित है? यह तो एक प्रकार से पराश्रित होता है, स्वाभिमान खोकर उस समाज की दया पर ही आश्रित रहता है, जिसका त्याग करके आपने यह साधु वेश धारण किया है।

अपने स्वभाव के अनुरूप वे प्रारंभ में हंसते रहे और सहज उत्तर देते रहे, कि ज्ञान प्राप्ति के लिये इतना त्याग तो करना ही पड़ता है अथवा यह, कि ज्ञान और लक्ष्मी का तो सहज विरोध है ही, अत: यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। सामान्य व्यक्ति इस प्रसन्न हो गए, जिससे उन्होंने मेरे समक्ष साधना जगत का एक नवीन तथ्य ही प्रस्तुत कर दिया।

यहां मैं इस बात का उल्लेख करना आवश्यक समझता हूँ, कि स्वामी हृदयानंद जी मूलत: कौल मत के उपासक थे, जिसके अंतर्गत गुरु शक्ति एवं आद्या शक्ति की संयुक्त रूप से साधना-आराधना की जाती है। यथार्थ रूप से कौल मत के साधक अत्यंत दुर्लभ होते हैं, यद्यपि कौल मत के नाम पर पाखण्ड रचने वाले मिल जाते हैं। ऐसे यथार्थ साधक (कौल साधक) ही वास्तविक रूप से तंत्र के क्षेत्र में प्रवेश करने के अधिकारी व सुपात्र होते हैं तथा ऐसे साधक ही प्रकृति को अपनी इच्छानुसार मोड़ने की क्षमता रखते हैं। यह और बात है, कि उनकी स्वयं की कोई इच्छा विशेष नहीं होती।

से कौल मत में प्रवेश मिला हो, तो वह इस रहस्य को समझने की क्षमता ग्रहण करने लग जाता है और उसे वे विधियां ज्ञात होने लग जाती हैं, जिससे शक्ति का सदुपयोग आत्म कल्याणार्थ, जन कल्याणार्थ किया जा सके। यही कारण होता है, कि ऐसे साधक सदैव व प्रत्येक स्थिति में निर्द्वन्द्व रहते हैं, क्योंकि उन्होंने वह मार्ग जान लिया होता है, जिससे उन्हें जीवन में कोई विशेष कठिनाई नहीं होती तथा सामाजिक दृष्टि से दीन-हीन होते हुए भी वे अक्षुण्ण आनन्द रूपी सम्पदा के स्वामी होते हैं।

ये ही वे स्थितियां होती हैं, जब साधक साधना मार्ग में आगे बढ़ सकता है। अत्यधिक भोगी व्यक्ति साधना नहीं कर सकता और न ही अत्यधिक दरिद्र। संतुलन पर खड़ा व्यक्ति ही साधना के उच्च आयामों को अपने जीवन में उतार सकता है। स्वामी हृदयानंद जी द्वारा वर्णित इस साधना का यही महत्त्व है, कि इससे जहां एक ओर व्यक्ति के जीवन में धन-धान्य, ऐश्वर्य और श्री की वृद्धि होती है, वहीं बुद्धिमता व सम्पन्नता का सुखद संयोग होता है। बुद्धिमान व सम्पन्न व्यक्ति ही समाज में सम्मान का पात्र होता है। इनमें से कोई भी एक गुण न रहने पर वास्तविक रूप से प्रसन्नता नहीं आ पाती।

आप चाहे महाकाली की आराधना करें या महासरस्वती की अथवा महालक्ष्मी की मूल बात शक्ति साधना की है यदि सुयोग्य साधक हो तो विशिष्ट गुरु कृपा से वह इस रहस्य को समझने की क्षमता ग्रहण करने लग जाता है

प्रकार के उत्तर से संतुष्ट हो जाते हैं, किन्तु मैं संतुष्ट न हुआ और उनसे पूछ बैठा - 'आप ही बताइये यह कहां लिखा है, कि ज्ञान प्राप्ति का इच्छुक अथवा सरस्वती का उपासन दरिद्र ही हो? जब तीनों महाशक्तियां एक ही आद्याशक्ति की अंगस्वरूपा हैं, तो यह भेद क्यों और कैसे?'

मैं नहीं जानता, कि इस सम्पूर्ण वार्तालाप में स्वामी हृदयानंद जी को मेरी कौन सी बात छू गई या वे मेरी किस बात से

स्वामी हृदयानंद जी ने प्रथम बार मुझे स्पष्ट रूप से बताया, कि वास्तव में तीनों महाशक्तियों का मूल स्वरूप एक ही है, अर्थात् हम चाहे महाकाली की आराधना करें या महासरस्वती की अथवा महालक्ष्मी की, मूल बात शक्ति साधना की ही है। यदि सुयोग्य साधक हो और उसे विशिष्ट गुरु कृपा

साधना विधान

स्वामी जी के अनुसार इस विलक्षण साधना को
शुक्ल पक्ष के किसी भी सोमवार को प्रातः चार बजे से छः बजे के मध्य सम्पन्न करना चाहिए।
यह शुक्ल पक्ष किसी भी माह का हो सकता है या गुरु पुष्य योग में भी इसे सम्पन्न कर सकते हैं।

प्रातः साधक उठकर स्नान आदि से स्वच्छ होकर सफेद वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुँह करके सफेद आसन पर बैठें। एक सफेद वस्त्र लेकर उस पर निम्न प्रकार से कुंकुम द्वारा (अथवा श्रेष्ठ होगा, कि अष्टगंध द्वारा) निम्न यंत्र की रचना कर लें -

		न		
न	ऐं	ऐं	ऐं	मः
न	ऐं	ह्रीं	ऐं	मः
न	ऐं	ऐं	ऐं	मः
		मः		

यंत्र

इस प्रकार रचना करने के उपरांत कमला मंत्रों से अभिसिक्त 'आठ गोमती चक्र' एवं त्रिशक्ति मंत्रों से चैतन्य 'एक लघु नारियल' प्राप्त कर उन्हें यंत्र में स्थापित करना है।

ध्यान रहे, कि यंत्र में जहां 'ह्रीं' बीज अंकित है, वहां लघु नारियल स्थापित करना है तथा जहां-जहां 'ऐं' बीज अंकित है, वहां गोमती चक्र एक-एक करके स्थापित करने हैं।

अब प्रत्येक गोमती चक्र एवं लघु नारियल का पूजन करें। प्रारंभ में लघु नारियल पर कुंकुम का टीका एवं पुष्प की पंखुड़ियां ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कमलवासिन्यै नमः उच्चारण करके चढ़ायें, तदुपरान्त प्रत्येक गोमती चक्र का पूजन भी इसी भांति करे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कमलवासिन्यै नमः इस मंत्र का सतत् जप करते रहें। सबसे अंत में सम्पूर्ण सामग्री पर श्रद्धा भाव से अक्षत चढ़ाएं एवं घी का दीपक लगाकर शुद्ध एवं पहले किसी साधना में प्रयुक्त न की गई 'आद्याशक्ति कमल गट्टा माला' से निम्न दुर्लभ मंत्र की ग्यारह माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ ऐं ऐं ऐं ह्रीं ऐं ऐं ऐं॥

मंत्र जप के उपरांत कुछ देर तक उसी आसन पर शांतिपूर्वक ध्यानस्थ होकर बैठे रहें। संभव है इस अवस्था में आपको कुछ ऐसे दृश्य या विचार प्राप्त हों, जो आगामी जीवन के लिये अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हों।

एक दिवसीय इस साधना की समाप्ति पर उसी दिन सायंकाल सभी गोमती चक्र एवं माला को किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें तथा जिस वस्त्र पर यंत्र अंकित किया था, उसमें लघु नारियल को लपेट कर तिजोरी में रख दें। सवा महीने के पश्चात् लघु नारियल को उस यंत्र अंकित वस्त्र सहित नदी में प्रवाहित कर दें।

साधनाओं का संसार अत्यंत विशाल है। पता नहीं कब कौन सी साधना साधक के प्राणों से मेल खा जाए और जीवन धन्य व सम्पन्न हो जाए। अतः योग्य साधक प्रत्येक साधना को कम से कम एक बार प्रयोग में अवश्य ही लाते हैं। प्रत्येक साधना कुछ न कुछ लाभ अवश्य ही देती है। पूर्ण सफलता न भी मिले, तब भी आगे का मार्ग प्रशस्त होता ही है।

मैंने अपने अनुभवों से ज्ञात किया है, कि प्रस्तुत साधना समाज के उस वर्ग के लिये अत्यधिक उपयोगी है, जिसे बुद्धिजीवी वर्ग कहा जाता है अर्थात् डॉक्टर, इंजीनियर, विधि व्यवसायी, अध्यापक, लेखक, छात्र या किसी न किसी प्रकार से भगवती महासरस्वती के उपासकों के प्राणों से यह साधना शीघ्र ही मेल खा जाती है।

साधना सामग्री- 600/-

तांत्रोक्त सरस्वती साधना

प्रारम्भ कीजिए जीवन में

नये भाग्य उत्सव - वसन्त उत्सव का

इस

वसंत पंचमी

से

भाग्य का लेखन ईश्वर के साथ-साथ मनुष्य के अपने हाथ में भी है और यदि सरस्वती की कृपा हो जाये तो साधक अपना भाग्य स्वयं लिख सकता है, अपने भाग्य को संवार सकता है, क्योंकि वसन्त पंचमी तो सरस्वती जयंती भी है, अतः इस अवसर पर प्रस्तुत है एक अनूठा तांत्रिक प्रयोग—

मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति उसका वचन है,
आज जो बोलते हैं वे शब्द ही आपके सबसे बड़े अस्त्र-शस्त्र हैं,
दूसरों को प्रभावित कर अपनी उचित कार्यसिद्धि वाणी के माध्यम से ही संभव है
और जब यह वाणी शब्द बन कर आपके भीतर के
कुण्डलिनी चक्र के जाग्रत सहस्रार से निकले तो साधक को जो सिद्धि प्राप्त होती है।
वह वाक् सिद्धि कहलाती है।

वरदान और श्राप वाक् सिद्धि के ही स्वरूप हैं, इस वाणी में जो क्षमता है, वह न तो खरीदी जा सकती है और न किसी से प्राप्त की जा सकती है, यह तो अपने भीतर क्षमता उत्पन्न कर प्राप्त की जा सकती है, ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ संरचना मानव में कोई भेद नहीं है, शारीरिक रूप से सभी समान हैं, भेद केवल वाक् सिद्धि का ही है और यदि यह वाक् सिद्धि बचपन से ही जाग्रत होने लग जाये तो वह बालक निश्चय ही जीवन में उच्चतम शिखर पर अवश्य पहुँचता है।

जीवन और सरस्वती

सामान्य रूप से यह मान्यता है कि सरस्वती विद्या की देवी है और बालकों को विद्या अध्ययन में श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए सरस्वती का ध्यान करना चाहिए। वास्तव में यह एक गलत अवधारणा है। विद्या अध्ययन तो जीवन का एक प्रारम्भिक भाग है, उसमें सफलता जीवन के लिए आधार अवश्य बनाती है और इस कारण बालकों को सरस्वती का ध्यान अवश्य करना चाहिए, लेकिन क्या पढाई मात्र से ही जीवन चल सकता है?

जीवन में निरन्तर ज्ञान और विचार-शक्ति का प्रभाव आवश्यक है, व्यक्ति चाहे नौकरी करे अथवा व्यापार, सफल वही हो सकता है, जो श्रेष्ठ वार्तालाप कर सकता है, अपने कार्य पर पूर्ण विचार कर सकता है। सही समय पर सही निर्णय ले सकता हो, जो सही तर्क कर सकता हो, अपने वाक्शक्ति के माध्यम से दूसरों को प्रभावित कर सकता हो, वही व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है।

राजनैतिक जीवन में भी वही व्यक्ति उच्च शिखर पर पहुंच सकता है जो दूसरों के मन की भावनाओं को समझते हुए श्रेष्ठवक्ता के रूप में अभिभाषण कर सकता हो। सरस्वती तो कालज्ञान वार्ता, प्रशासन की अधिष्ठात्री देवी हैं, उनकी सिद्धि के बिना मनुष्य अपने जीवन में किसी भी प्रकार की उन्नति नहीं कर सकता है, मोहिनी शक्ति सरस्वती का ही रूप है और आकर्षण केवल विचार और वाणी के द्वारा ही मनुष्य के हाव-भाव इत्यादि में प्रकट होता है सरस्वती का साधक आभायुक्त, आकर्षण युक्त, शांत चित्त वाला अवश्य बनता है।

सरस्वती की शक्ति न होने पर मनुष्य के जीवन में केवल देह बल रह सकता है, और यदि पूर्वजन्मों का कुछ पुण्य हुआ तो थोड़ी बहुत लक्ष्मी रह सकती है, लेकिन यदि सरस्वती ही जीवन से निःसृत हो जाए तो देह शक्ति और लक्ष्मी भी चली जाती है। संसार में जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं चाहे वह राजा महाराजा हो, सम्राट हो, ऋषि-मुनि हो एवं आदरणीय रूप में अपने क्षेत्र के उच्चतम शिखर पर पहुँचने वाले व्यक्ति हो वे सब भगवती सरस्वती के कारण ही महान बन सके। कहते हैं कि लक्ष्मी पति अर्थात् धनवान को कोई याद नहीं करता लेकिन ज्ञानी व्यक्तियों की गाथा अनन्त पीढ़ियों तक कही जाती है।

वसन्त पंचमी

वसन्त पंचमी के दो मुख्य स्वरूप हैं, एक स्वरूप तो अपने जीवन में नया वसन्त प्रारम्भ करने का दिवस है अर्थात् अपनी भाग्य रेखा को मोड़ने का, अपने जीवन तन्त्र को अपने हाथ से लिखने का, नवीन निर्माण करने का सिद्ध दिवस है, आप क्या थे और अब क्या हैं, इस पर विचार कर पछताने की आवश्यकता नहीं है, विचार तो यह करना है कि अब क्या करना है और इस वसन्त पंचमी से, इस नये विचार को कार्य रूप देना ही है, ऐसा संकल्प ले कर आपको अपने लिये विशेष प्रयोग करना है–

पारिजातेश्वरी ब्रह्म शक्ति प्रयोग

वसन्त पंचमी के दिन प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर स्नान कर शुद्ध सफेद धवल वस्त्र धारण करें और बिना किसी ओर देखे सीधे अपने पूजा स्थान में जायें, अपने सामने एक थाली में चन्दन से आठ बिन्दियाँ एक लाइन में लगाएं, प्रत्येक बिन्दी पर एक चावल की ढेरी बनाएं, प्रत्येक के आगे एक-एक दीपक जला दें, दीपक का मुंह आपकी ओर हो।

इससे पहले पूर्व रात्रि में तालाब या सरोवर से गीली मिट्टी लेकर या पीपल के पेड़ की जड़ की मिट्टी लाकर एक बड़ा गोला बना दें और इस गोले के भीतर तांत्रोक्त सिद्ध **'पारिजातेश्वरी ब्रह्म शक्ति कंकण'** डाल दें, मिट्टी के गोले को कुंकुम, अबीर, गुलाल अर्पित कर पूर्ण रूप से रंगीन कर दें तथा इस पर तीन अगरबत्ती लगाएं, थाली में जो आठ चावल की ढेरियां हैं, उन पर एक-एक सुपारी रख कर आठ भाग्य देवियों–**ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, महालक्ष्मी तथा चामुण्डा की स्थापना करें।**

अब प्रत्येक ढेरी में से थोड़े-थोड़े चावल लें, और मिट्टी के गोले पर चढ़ा दें, फिर अपने दोनों हाथ इस ब्रह्म शक्ति गोलाकार पिण्ड पर रखकर निम्न मंत्र का 108 बार जप करें–

मन्त्र - ।। ॐ ह्रीं हं सं कं लं हैं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः।।

अब खड़े होकर सारे चावल एक साथ एकत्र कर अपने हाथों में लेकर पहिले मस्तक से, फिर नेत्रों से , फिर मुख को स्पर्श करायें और उसी स्थान पर बैठ कर मिट्टी के पिण्ड को फोड़ कर **पारिजातेश्वरी ब्रह्म शक्ति कंकण** अपने हाथ में धारण कर लें तथा शेष सभी सामग्री शुद्ध सफेद कपड़े में बांध कर नदी, सरोवर, तालाब अथवा पीपल वृक्ष में अर्पित कर दें।

यह प्रयोग एक विशेष प्रकार का तांत्रिक प्रयोग है, और शास्त्रोक्त कथन है कि यह पूजा करने के पश्चात् धारण किये जाने वाले कंकण को किसी भी व्यक्ति को दान में अथवा भेंट में न दें इसे अपनी सबसे बड़ी सम्पति मानते हुए उसे हर समय शरीर से स्पर्श कराये हुए रखें तो उसका भाग्य चक्र बदलने लगता है और शीघ्र ही भाग्योदय होता है।

ब्रह्म शक्ति कंकण- 350/-

बालकों के लिए सरस्वती सिद्धि

आजकल के युग में शिक्षा के क्षेत्र में इतनी प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है कि छात्र प्रारम्भ से ही अपने आपको एक बोझ के नीचे दबा हुआ अनुभव करते हैं। हर कोई चाहता है कि उसका बालक बड़ा होकर उच्च पद पर आसीन हो।

इसके लिये आवश्यक है, शिक्षा का अच्छा आधार। अध्ययन का तात्पर्य कि आप जो पढें वह आपको अच्छी तरह से स्मरण रहे। आपके मस्तिष्क में सुरक्षित रहे और समय पर उसका उपयोग कर सकें।

बालकों में बचपन से ही अच्छे संस्कार मिलें तथा श्रेष्ठ बुद्धि का विकास हो तो बालक जीवन में आगे चलकर विशेष सफलता प्राप्त करता है, उसकी स्मरण शक्ति का विकास होना आवश्यक है और इसके लिए वसन्त पंचमी जो कि सरस्तवी सिद्धि दिवस है, को निम्न प्रयोग सम्पन्न करना ही है–

वसन्त पंचमी के दिन साधक स्वयं स्नान कर सफेद धोती धारण कर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठ जाय सामने देवी सरस्वती का चित्र स्थापित करें और अपने सामने बालकों को बिठा दें, फिर एक प्लेट में अष्ट गंध से 'ह्रीं' अक्षर लिख दें और उस पर सरस्वती यंत्र को स्थापित करें। प्रत्येक यन्त्र पर अष्टगन्ध लगा कर निम्न मन्त्र की एक माला फेरें–

मन्त्र - ।। ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नमः।।

फिर उस यन्त्र के ऊपर से अष्टगन्ध उंगली से लेकर बालक की जीभ पर उंगली से या शलाका से 'ऐं' लिख दें और वह यन्त्र किसी धागे में पिरो कर बालक के गले में पहना दें, यदि साधक स्वयं के लिए प्रयोग करे तो दर्पण में देख कर अष्टगन्ध से अपनी जीभ पर उपरोक्त मन्त्र लिख कर यह यन्त्र गले में धारण कर लें इस प्रकार घर के सभी बालक-बालिकाओं पर यह प्रयोग सम्पन्न करें, पर प्रत्येक के लिए अलग-अलग सरस्वती यन्त्र की आवश्यकता होती है।

समय रहते ही यह यन्त्र आप पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर मंगा ले, वसन्त पंचमी के पर्व पर इस प्रयोग को आजमा कर देखें, कि वास्तव में ही यह प्रयोग कितना अधिक चमत्कारिक और दिव्य है।

सरस्वती यंत्र (धारण)- 200/-, सरस्वती चित्र- 20/-

जब आप सब कुछ करके हार जायें, तब यह करें

शिवरात्रि पर तीन विशिष्ट प्रयोग

धूर्जटा प्रयोग

कई बार किसी कार्य विशेष को पूर्ण करने के लिए आप सारे प्रयत्न कर लेते हैं, परन्तु आपकी लाख कोशियों के बाद भी जब वह कार्य नहीं सम्पन्न हो पाता, तो आपके हृदय में निराशा व्याप्त हो जाती है। उस कार्य के न होने पर आप अत्यधिक विचलित भी हो जाते हैं। आप हर समय चिन्तित रहते हैं, कि किस प्रकार से यह कार्य सम्पन्न हो, जिससे कि किसी प्रकार से भी हानि का सामना न करना पड़े।

'धूर्जटा यंत्र' के सामने 11 दिनों तक नित्य 51 बार इस मंत्र का जप करें–

मंत्र : ।। ॐ ह्रीं क्रीं हुं ॐ।।

यह प्रयोग एकान्त में करें। प्रयोग समाप्त होने पर प्रसाद वितरित कर 'धूर्जटा यंत्र' को जल में प्रवाहित कर दें या किसी शिव मन्दिर में चढ़ा दें। इस प्रयोग के विषय में किसी को भी न बतायें। ऐसा करने पर आपके कार्य में चाहे कितनी भी रुकावट क्यों न हो, कोई न कोई मार्ग अवश्य प्राप्त होगा उसे पूर्ण करने का।

न्यौछावर- 250/-

आय के साधनों में वृद्धि हेतु

व्यक्ति के जीवन का आधार 'अर्थ' होता है। इस तथ्य को आज के भौतिक युग में नकारा नहीं जा सकता। केवल धन का स्रोत न होकर यदि धन प्राप्ति का अन्य मार्ग भी हो इसके लिए यह लघु प्रयोग शिवरात्रि या किसी भी सोमवार को सम्पन्न करना उचित है। साधक **'पन्द्रहिया यंत्र'** *को स्थापित कर चंदन व अक्षत से पूजन कर निम्न मंत्र का 101 बार मंत्र जप सात दिन तक करें और आठवें दिन उसे विसर्जित कर दें तो उसके धनप्राप्ति के स्रोतों में वृद्धि होती है।*

मंत्र :

।। शं ह्रीं शं।।

न्यौछावर- 250/-

तांत्रिक प्रयोग की समाप्ति हेतु

जीवन में केवल रोग, पीड़ा ही नहीं साथ-साथ अनेक समस्याओं जैसे किसी प्रतिस्पर्धी या ईर्ष्यालू द्वारा किसी प्रकार का तंत्र प्रयोग भी हो सकता है, जिसका निराकरण भी जीवन की प्रथम आवश्यकता है। इसके लिये शिवरात्रि को या किसी भी सोमवार को ताम्रपात्र में **'नटराज यंत्र'** *स्थापित कर चन्दन, अक्षत चढ़ायें फिर चम्मच से दूध चढ़ाते हुये पन्द्रह मिनट तक निम्न मंत्र करें। यह दूध परिवार के सदस्यों को पान करा दें और शेष दूध घर में छिड़क दें।*

मंत्र : ॐ सकल दोष निवारणाय भवानीपतये नमः।

प्रयोग 7 दिन तक करें फिर यंत्र जल में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर- 250/-

नाम

संस्कृत - परिजात, प्रजापत, हारश्रृंगार, नलकुंकुम, रागपुष्पी, खरपत्रक। हिन्दी - हारसिंगार, सियारी, बिनारी कुटी, पारिजात। बंगला - हारसिंगार, सेफालिका। मुम्बई - हारसिंगार, पारिजातक, शिउली। मध्यप्रांत - शिराली, सिरालू। देहरादून-हूरी। गढ़वाल - कुरी। गुजराती - जयापारवती। मराठी - खरामली पारिजातक। पंजाब - हारसिंगार।

वर्णन : पारिजात के वृक्ष बड़े सुन्दर होते हैं। इनकी ऊंचाई 5 से लेकर 12 फुट तक होती है। इसके पत्ते जासूद के पत्तों के समान होते हैं। इसके फूल सफेद और फूलों की डण्डी केसरिया रंग की होती है। इन फूलों में बहुत मनोहर सुगंध आती हैं इसके फूलों की डंड्डियों को पीसकर रंग तैयार किया जाता है।

गुण, दोष और प्रभाव : आयुर्वेदिक मत से इसके पत्तों का रस कड़वा और चरपरा होता है। यह ज्वर के अन्दर लाभदायक है। इसकी छाल ब्रोकाइटीज में लाभ पहुंचाती है। इसके पंचांग का काढ़ा तिल्ली के बढ़ने के ऊपर उपयोगी माना जाता है। इसकी छाल का तेल आंखों के दर्द में उपयोगी माना जाता है। इसकी छाल को पान में रखकर खाने से खांसी दूर होती है। पारिजात ज्वरनाशक, कफ को दूर करने वाला, यकृत को उत्तेजना देने वाला, शामक और चर्मदोषों को दूर करने वाला होता है। इसके पत्ते सेंटिनीन के समान कृमिनाशक और कटुपौष्टिक तथा पित्तद्रावक होते हैं।

इसके पत्ते ज्वर और संधिवात के अंदर उपयोगी होते हैं। हड्डी के अंदर घुसे हुए जीर्ण मलेरिया ज्वर को दूर करने के लिए इसके पत्तों का रस शहद और त्रिकुटे के साथ में देने से अच्छा होता है। इस प्रयोग से ज्वर से बढ़ा हुआ यकृत और तिल्ली भी ठीक हो जाती है। अगर रोगी का रंग बहुत ही फीका हो गया तो इस प्रयोग के साथ थोड़ी-सी लोहभस्म भी मिला देना चाहिए। इस प्रयोग के साथ पथ्य में दूध, घी और शक्कर का अधिक प्रयोग करना चाहिए।

गृध्रसी (साइटिका) रोग में इसके पत्तों का बहुत हलकी आंच पर तैयार किया हुआ काढ़ा देने से लाभ होता है। इसके 6-7 ताजे और तरुण पत्तों को कुचल कर थोड़े सोंठ के पानी के साथ मिलाकर हठीले मलेरिया और पार्यायिक ज्वरों में देने से और पथ्य में सिर्फ शाग-भाजी और फल पर रहने से अच्छा लाभ होता है। इसके बीजों का चूर्ण सिर की गंज पर लाभदायक माना जाता है।

इसकी छाल पित्तनाशक और कफनाशक होती है और यह पैत्तिक ज्वरों में उपयोगी होती है।

इसके पत्तों का ताजा रस पित्तनिस्सारक, मृदुविरेचक और कटुपौष्टिक होता है। इसको थोड़ी सी शक्कर के साथ बच्चों को देने से उनकी आंतों के गोल और चपटे कीड़े निकल जाते हैं।

यूनानी मत : यूनानी मत से इसके फूल कड़वे, खराब स्वाद वाले, अग्निवर्धक, शांतिदायक, आंतों के लिए, संकोचक सूजन दूर करने वाले और बालों की जड़ों को मजबूत करने वाले होते हैं। इसके पत्ते हठीले ज्वरों में लाभदायक तथा इसके बीज बवासीर और चर्मरोगों में लाभदायक है।

इसके 3/4 माशे नरम पत्तों को पीसकर थोड़े से अदरक के साथ लेने से पुराना ज्वर जाता रहता है मगर

पारिजात ज्वरनाशक, कफ को दूर करने वाला, यकृत को उत्तेजना देने वाला, शामक और चर्मदोषों को दूर करने वाला होता है। इसके पत्ते सेंटिनीन के समान कृमिनाशक और कटुपौष्टिक तथा पित्तद्रावक होते हैं।

दही, दूध, घी, तेल, मांस तथा मछली से परहेज करना चाहिए।

इसके पत्तों को पीसकर लेप करने से दाद नष्ट हो जाता है मगर इस लेप से जलन बहुत होता है।

छाजन भी इन पत्तों के लेप से मिट जाती है।

इसके फूल को पीने से रक्त संबंधी उपद्रव और खूनी बवासीर में लाभ होता है। इसका गोंद और जड़ कामोद्दीपक होती है।

इसकी छाल के बारीक टुकड़े करके 5 काली मिर्चों के साथ पीसकर पीने से बवासीर में लाभ होता है।

उपयोग

गठिया : इसके फूलों का क्वाथ बनाकर पिलाने से गठिया में अत्यंत लाभ होता है।

जीर्णज्वर : इसके पत्तों के रस में शहद मिलाकर पिलाने से जीर्णज्वर मिटता है।

गृध्रसी : बिल्कुल हलकी आंच पर इसके पत्तों का क्लाथ बनाकर पिलाने से किसी भी औषधि से न मिटने वाली गृध्रसी मिटती है। इससे गठिया में भी लाभ होता है, सुबह खाली पेट पियें।

पित्ताविकार : इसके पत्तों के रस में मिश्री मिलाकर पिलाने से पित्त विकार मिटता है।

सूखी खांसी : इसके पत्तों के रस में शहद मिलाकर पिलाने से सूखी खांसी मिटती है। कफ भी निकल जाता है।

कृमि : इसके पत्तों के रस में नमक डालकर पिलाने से पेट के कृमि मर जाते हैं।

उदकप्रमेह : इसके पत्तों का क्वाथ बनाकर पिलाने से उदकप्रमेह मिटता है।

मासिक धर्म की अधिकता : इसकी कोपलें और 7 काली मिर्च पीस छान कर पिलाने से मासिक धर्म में अधिक रुधिर का जाना बन्द हो जाता है।

बवासीर : इसके एक तोले बीज और तीन माशे काली मिर्च को पीस छान कर पानी के साथ गोलियां बनाकर 3 माशे की मात्रा में, ठण्डे जल के साथ लेने से बवासीर में लाभ होता है।

मात्रा : इसकी छाल की मात्रा 3 रत्ती तक और पत्तों की मात्रा4 से लेकर 6 पत्ते तक।

बुखार : आपको कितना भी तेज बुखार हो रुक-रुक कर बुखार आ रहा हो तो 3 ग्राम हारसिंगार की छाल एवं दो पत्ते, तुलसी की 2-3 पत्तियां उबालकर सुबह शाम नियमित रूप से पीयें बुखार उतर जायेगा और शरीर की कमजोरी भी दूर होगी।

हारसिंगार का फूल अत्यंत पौष्टिक है जिन्हें शारीरिक कमजोरी है वे इसके फूलों को छाया में सुखाकर उसका पाउडर बना लें फिर आधा ग्राम पाउडर मिश्री मिलाकर सेवन करें इससे शरीर की शक्ति व फूर्ती में वृद्धि होगी।

शरीर में किसी भी तरह की सूजन और दर्द है तो पत्तों को कूचलकर उसका बनाया गया काढ़ा बहुत लाभदायक है। यह पेट में जमा मल भी निकालता है।

हर्बल टी के रूप में भी आप हारसिंगार का प्रयोग अत्यंत लाभकारी है यदि आपको कफ की परेशानी है, खाँसी व बलगम है तो चाय में हरसिंगार की 2 पत्तियां, एक फूल व तुलसी की पत्ती डालकर पिये।

(उपयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें)

प्राणायाम के विविध स्वरूप

'प्राण' का तात्पर्य जीवन है तथा 'आयाम' का तात्पर्य अवरुद्ध कर देना है। अतः प्राणायाम के द्वारा व्यक्ति उद्देश्यहीन जीवन को अपनी इच्छानुसार प्रवाह देकर अपनी आयु में वृद्धि कर सकता है, जरा-मरण से सर्वथा मुक्त हो सकता है और अमृत्यु को प्राप्त हो मानव जीवन को पूर्णत्व प्रदान कर सकता है। प्राणायाम के उन्हीं विविध स्वरूपों पर यहाँ प्रकाश डाला गया है-

व्यक्ति की जितनी भी आयु भाग्य में लिखी है, वह सही है, परन्तु यदि व्यक्ति नित्य प्राणायाम करें, तो जितने समय तक वह प्राणों को आयाम देता है उतना ही समय उसकी आयु में बढ़ जाता है। शरीर शास्त्र के अनुसार इसकी व्याख्या करें, तो यदि श्वास-प्रश्वास की गति को लयबद्ध किया जाय, तो शरीर में स्थित समस्त परमाणु एक निश्चित गति के साथ गतिशील होने लगेंगे तथा विभिन्न दिशाओं में भागने वाला चंचल मन अन्तर्मुखी होकर इच्छाशक्ति में परिणति हो जाएगा। यह दृढ़ इच्छाशक्ति जब स्नायुप्रवाह में परिवर्तित होकर विद्युत का आकार ग्रहण कर लेती है, तब शरीर की सभी गतियां सम्पूर्ण रुप से एकाभिमुखी हो जाती हैं। यह एकमुखी गति श्वास-प्रश्वास केन्द्र पर आधिपत्य स्थापित करके शरीर में अन्य केन्द्रों को भी वश में कर लेती है और अन्ततः दिव्य शक्ति कुण्डलिनी को उद्बुद्ध करते हुए व्यक्ति को अमरत्व और पूर्णता के पथ पर अग्रसर करती है।

प्राणायाम मुख्यतः आठ प्रकार के होते हैं, जिन्हें योग्य गुरु के सान्निध्य में रहकर ही सीखना चाहिए, साथ ही साथ प्राणायाम के अच्छे अभ्यास के लिए नाड़ी शोधन करके अपनी आधारशिला भी मजबूत बना लेनी चाहिए, जो कि प्राणायाम का प्रथम चरण है।

नाड़ी शोधन क्रिया-पद्मासन में बैठकर दायें हाथ के अंगूठे से दायें नथुने को दबाकर प्राण वायु को धीरे-धीरे अन्दर भर लें, इस क्रिया में आपको एहसास होना चाहिए, कि प्राण वायु मूलाधार पर्यन्त पूर्ण रूप से भर गई है। फिर बिना कुम्भक किये ही दायें नथुने से धीरे-धीरे रेचक करें, अर्थात् श्वास को पूरी तरह से बाहर निकाल लें। इसी प्रकार नासिका के बायें छिद्र से पूर्ववत् प्राण वायु का पूरक करके बिना कुम्भक किये रेचक कर दें। यह एक क्रिया हुई। नित्य अभ्यास से इनकी संख्या बढ़ाते हुए 60 तक ले जायें।

यह अभ्यास सिद्ध होने पर शरीर की छोटी-बड़ी सभी नाड़ियों तथा शिराओं की शुद्धि हो कर शरीर में सर्वत्र रक्त, प्राण, ज्ञान, क्रिया का यथावत् संचार होने लगता है, सुषुम्ना मूलाधार से उठकर ऊर्ध्वमुखी हो जाती है, कुण्डलिनी जाग्रत होने का क्रम प्रारम्भ हो जाता है तथा ध्यान की स्थिरता बढ़ जाती है।

कुम्भक प्राणायाम-

यह दो प्रकार का होता है-

(क) सगर्भ बीज सहित प्राणायाम- सुखासन में बैठकर बायीं नासिका द्वारा सोलह बार **'ॐ'** मंत्र का जप करते हुए श्वास अन्दर करें, पूरक करते हुए 'ब्रह्मा देवता' का ध्यान करें। पूरक के बाद उड्डियान बंध लगायें। तत्पश्चात् चौंसठ बार **ॐ** का जप करते हुए कुम्भक करें, इस स्थिति में **'विष्णु देवता'** का ध्यान करें। इसके बाद बत्तीस बार **'ॐ'** का उच्चारण करते हुए दाहिनी नासिका से रेचक करें अर्थात् श्वास को बाहर निकाल दें, साथ ही 'शंकर देवता' का ध्यान करें। यही क्रिया दूसरी नासिका से दोहरायें। बीस मात्रा का यह प्राणायाम उत्तम, सोलह मात्रा का प्राणायाम मध्यम तथा बारह मात्रा का प्राणायाम कनिष्ठ माना जाता है।

कनिष्ठ प्राणायाम के अभ्यास से शीत से उत्पन्न होने वाले रोग नहीं होते। मध्यम प्राणायाम से ज्ञान तन्तुओं में स्पन्दन प्रारम्भ होता है और कुण्डलिनी जाग्रत होती है। उत्तम प्राणायाम के नियमित अभ्यास से मनुष्य वायु में उड़ने की सामर्थ्य प्राप्त करने योग्य होता है।

(ख) निगर्भ सहित कुम्भक प्राणायाम- यह सगर्भ कुम्भक के समान ही होता है, परन्तु इसमें किसी भी प्रकार के मंत्र का जप या किसी देव विग्रह का ध्यान नहीं किया जाता।

सूर्य भेदी का प्राणायाम-

सिद्धासन अथवा पद्मासन अपने अनुकूल किसी भी ध्यानासन में बैठकर सूर्य नाड़ी या पिंगला अर्थात् दायें नथुने से शनैः-शनैः शब्द ध्वनि करते हुए प्राण वायु का पूरक करें, प्राण वायु को कंठ, हृदय और उदर में भरकर यथाशक्ति कुम्भक करें। इस क्रिया में ऐसा अहसास होना चाहिए, कि शिखा से लेकर पाद-नख पर्यन्त प्राण वायु देह में भर गई है। जब कुछ घबराहट सी प्रतीत होने लगे, तब दायें नथुने को दबाकर चन्द्र नाड़ी या इड़ा अर्थात् बायें

नथुने से शब्द ध्वनि करते हुए वेग पूर्वक श्वास बाहर रेचक कर दें। इस प्राणायाम में बार-बार सूर्य नाड़ी से पूरक और चन्द्र नाड़ी से रेचक क्रिया की जाती है। प्रारम्भ में इस प्राणायाम को पांच बार करें, नित्य अभ्यास से इसकी संख्या धीरे-धीरे 32 तक बढ़ा सकते हैं।

उज्जायी प्राणायाम-

पद्मासन, सिद्धासन, सुखासन या किसी भी ध्यानासन में बैठकर दोनों नथुनों से धीरे-धीरे श्वास लें तथा इस वायु को ऊपरी तालु पर अनुभव करें। अब निगलने की सी क्रिया करते हुए गर्दन को आगे झुका कर बिना किसी प्रयत्न के श्वास को रुकने दें। इस अवस्था में सिर और गर्दन को ढीला छोड़ें और कंठ के नीचे वायु का बंध अनुभव करें। सामर्थ्यानुसार इस स्थिति में रहें। अब धीरे-धीरे बायीं नासिका से रेचक कर वायु को बाहर निकाल दें। इस क्रिया को उज्जायी प्राणायाम कहते हैं। इस प्राणायाम के अभ्यास से कफ जनित रोग नष्ट होते हैं।

शीतली प्राणायाम-

जीभ को थोड़ा बाहर निकाल कर इसके पार्श्वों को पक्षी की चोंच की तरह मोड़ें। अब सीत्कार का स्वर उत्पन्न करते हुए जोर से श्वास लें, जीभ पर इसका शीतल प्रभाव अनुभव होगा। तत्पश्चात् दोनों नासिकाओं से रेचक करें। यह प्राणायाम श्वसन संस्थान की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

भस्त्रिका प्राणायाम-

यह प्राणायाम खड़े होकर तथा बैठ कर, दोनों ही स्थितियों में किया जा सकता है। सिर्फ ध्यान रखने की बात यह है कि सामर्थ्यानुसार साधक लुहार की धौंकिनी के समान श्वास-प्रश्वास की गति को वेगपूर्वक, लयात्मक स्थिति रखते हुए उस समय तक करता रहे, जब तक कि वह पसीने-पसीने न हो जाए। इस बात का ध्यान रखें, कि श्वास-प्रश्वास लम्बा और पूरा हो।

यह प्राणायाम कुण्डलिनी को शीघ्र जगाता है, प्राण को सुखद बनाता है और सुषुम्ना के द्वार को खोलता है, प्राण तथा कुण्डलिनी के ऊर्ध्वगमन में होने वाली सुषुम्ना गत रुकावट को हटाता है, सुषुम्ना में पड़ी ब्रह्म ग्रन्थि, विष्णु ग्रन्थि तथा रुद्र ग्रन्थि को खोल देने में अति सहायक सिद्ध होता है।

भ्रामरी प्राणायाम-

सुखासन या पद्मासन में सीधे बैठकर दोनों नासाद्वारों से वेग के साथ श्वास अन्दर भरें, अब बिना प्रयास के सांस को भीतर रोके रखें।

तत्पश्चात् मुख और नासिका से भृंगी कीट के सामन संगीतमय स्वर उत्पन्न करते हुए धीरे-धीरे श्वास बाहर छोड़ें। इस प्रकार का अभ्यास हो जाने पर कानों को बंद करके पूरक और कुम्भक करके अन्दर के नाद को सुनने का प्रयत्न करें तथा जो भी संगीत सुनाई दे, उसमें चित्त को एकाग्र करने का प्रयत्न करें। निरन्तर अभ्यास के बाद कानों के खुला रहने पर भी वह नाद सुनाई देता रहता है और साधक के हृदय में अद्भुत आनन्द उत्पन्न करता है।

मूर्च्छा कुम्भक प्राणायाम-

मेरुदण्ड को सीधा रखते हुए सुखासन में बैठें तथा श्वास पूरी तरह अन्दर भरकर कुम्भक करें। अब समस्त विकारों को त्यागते हुए मन को भृकुटि में एकाग्र करें, जिससे निद्रा जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाय। यह प्राणायाम मानसिक चिन्ताओं और तनावों को दूर करके चित्त को शान्त करने में सहायक होता है तथा निरन्तर अभ्यास से अवर्णनीय आनन्द की प्राप्ति होने लगती है।

केवली प्राणायाम-

यह प्राणायाम 24 घण्टे निरन्तर किया जा सकता है। इसमें श्वास-प्रश्वास के साथ **'सोऽहं'** मंत्र का सतत् जप किया जाता है, ताकि मन को सभी वृत्तियों से विमुख करके आत्मा में लीन किया जा सके। इस प्राणायाम को करने के लिए **'सोऽहं'** मंत्र का उच्चारण स्वाभाविक श्वास-प्रश्वास के साथ बिना किसी प्रयत्न के किया जाता है। प्रारम्भिक अभ्यासी को प्रातः और सायंकाल सुखासन में बैठकर इसका अभ्यास करना चाहिए। जब श्वास भीतर जाए, तो वह ऐसा अनुभव करे कि उसमें दिव्य प्रकाश है, जो सोऽहं मंत्र के उच्चारण के साथ भृकुटि और हृदय से होता हुआ मूलाधार में जा रहा है और पुनः उसी मार्ग से वह प्रकाश युक्त प्राणों का प्रवाह बाहर निकलकर दिव्य चेतना के सागर में विलीन हो रहा है।

चूंकि प्राणों के दिव्य तत्त्व में लीन होने पर मन का भी दिव्य तत्त्व में लीन होना स्वाभाविक है, अतः केवली प्राणायाम के अभ्यास से साधक को आत्मतत्त्व का दर्शन शीघ्र प्राप्त होने लगता है।

शारीरिक रूप से देखा जाय, तो इन सभी प्राणायाम के अभ्यास से फेफड़े, हृदय और उदर शुद्ध होते हैं, रक्त का परिसंचरण बढ़ जाता है, जठराग्नि प्रदीप्त होती है, हृदय और फेफड़ों की क्षमता बढ़ती है, शरीर में स्फूर्ति व हल्कापन अनुभव होता है, दृष्टि तीव्र होती है तथा आयु में वृद्धि होती है।

आध्यात्मिक रूप से देखा जाय, तो प्राणायाम के अनुष्ठान से चित्त पर पड़ा अंधकार का आवरण हट जाता है, प्राण सुषुम्ना में प्रवेश कर जाता है तथा कुण्डलिनी शक्ति की ऊर्ध्वगामी यात्रा आरम्भ हो जाती है। प्राणायाम क्रिया द्वारा ध्यान की स्थिरता होने से असीम आनन्द की प्राप्ति होती है तथा देह, प्राण और मन के सभी विकार दूर होकर उन पर पूर्ण रूप से आधिपत्य स्थापित हो जाता है।

❑❑❑

साधना में सफलता हेतु आवश्यक

स्वस्थ शरीर

स्वास्थ्य रक्षा के मूल आधार

स्वास्थ्य रक्षा की दृष्टि से शास्त्रोक्त दिनचर्या पिछले अंक में दी गयी है, वस्तुतः स्वास्थ्य रक्षा के पाँच मूल आधार हैं- 1. आहार, 2. श्रम, 3. विश्राम, 4. मानसिक सन्तुलन और 5. पंचमहाभूतों का सेवन।

1. आहार–आहार के सम्बन्ध में पिछले अंक में विस्तार से वर्णन किया जा चुका है। आयुर्वेद में तीन प्रकार के भोजनों का उल्लेख मिलता है–1. शमन करने वाला भोजन, 2. कुपित करने वाला भोजन तथा 3. सन्तुलन रखने वाला भोजन। वात–पित्त और कफ – इन तीनों के असन्तुलन से रोग का जन्म होता है। ये तीनों रोग के प्रमुख कारण हैं। जो भोज्य पदार्थ इन तीनों का शमन करते हैं वे शमनकारी और जो इन तीनों को कुपित करते हें वे कुपितकारी तथा जो तीनों को सन्तुलित किये रहते हैं उन्हें सन्तुलनकारी भोजन कहा जाता है। इन तीनों का स्वभाव से गहरा सम्बन्ध रहता है। इसलिये स्वभाव और परिस्थिति के अनुसार भोजन करने की अनुमति दी जाती है। शारीरिक श्रम करने वाले व्यक्ति के भोजन की मात्रा और उसका प्रकार जो होगा वह मानसिक श्रमशील व्यक्ति के भोजन की मात्रा और प्रकार से भिन्न होगा।

आहार का सर्वोपरि सिद्धान्त तो यह है कि भूख लगने पर आवश्यकतानुसार भूख से कम मात्रा में भोजन करना चाहिये।

2. श्रम–जीवन में भोजन के साथ श्रम का कम महत्त्व नहीं है। आजकल श्रम के अभाव में आलस्य और प्रमाद के कारण विभिन्न प्रकार के रोगों की उत्पत्ति हो रही है। ऐसे बहुत लोग हैं, जिन्हें जीवन में कभी भी सच्ची भूख की अनुभूति नहीं होती।

स्वस्थ रहने के लिये दैनिक जीवनक्रम में कुछ घंटे ऐसे बिताने चाहिये जिससे सहज श्रम हो जाय। जो लोग स्वाभाविक रूप से शारीरिक श्रम नहीं कर सकते, उन्हें व्यायाम, योगासन और भ्रमण के द्वारा श्रमशील होना चाहिये।

आजकल लोगों का सिनेमा, होटल तथा क्लबों में जाने के लिये और टी.वी. आदि देखने के लिये तो सरलता से समय मिलता है, किंतु व्यायाम के लिये एवं कुछ समय ध्यान साधना के लिए हमेशा समय के अभाव की शिकायत करते रहते हैं। जो व्यक्ति श्रम या व्यायाम नियमित रूप से करते हैं, उन्हें सामान्यतः दवा लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती, वे स्वाभाविक रूप से स्वस्थ रहते हैं।

3. विश्राम–आहार तथा श्रम की तरह विश्राम भी शरीर की अनिवार्य आवश्यकता है। अत्यधिक परिश्रम से थके व्यक्ति में विश्राम के पश्चात् नवजीवन का संचार होता है। रात की गहरी नींद से शरीर में पुनः नयी शक्ति तथा मन में नयी उमंग का प्रादुर्भाव होता है। विश्राम के बाद श्रम और श्रम के बाद विश्राम – दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं।

प्रायः लोग शरीर को तो विश्राम देते हैं, किंतु मन को विश्राम नहीं देते। शरीर एक स्थान पर पड़ा रहता है, किंतु मन इधर–उधर भटकता रहता है। नींद के समय शरीर शान्त रहता है किंतु मन स्वप्न में फँसा रहता है। ध्यान तथा भगवन्नाम स्मरण से मन को विश्राम मिल सकता है। इसी प्रकार

जीवन में संयम-नियम का पालन करने से मन को शान्त रखने में सहायता मिलती है। निद्रा भी विश्राम का सर्वोत्तम साधन है। शरीर तथा मन दोनों को विश्राम मिलने पर ही पूर्ण विश्राम की स्थिति बनती है।

4. मानसिक संतुलन–मानसिक विश्राम के बाद शरीरिक क्रिया होती है। शरीर सदा मन का अनुगामीहोता है। मन में संकल्प उठता है इसके बाद ही शरीर द्वारा क्रिया आरम्भ होती है। शुद्ध चित्त में पवित्र संकल्प या विचार आते हैं और अशुद्ध चित्त में बुरे संकल्प या विचार आते हैं। मन शरीर रूपी यन्त्र का संचालक है। मन या चित्त को शुद्ध रखने पर शरीर स्वयं ही सही मार्ग पर चलेगा। इसलिये शरीर शुद्धि की अपेक्षा चित्त शुद्धि का महत्त्व अधिक है। चित्त शुद्धि के बाद शारीरिक स्वास्थ्य का सुधार स्वतः स्वाभाविक रूप से हो जायेगा।

मन के शान्त तथा प्रसन्न रहने पर सामान्यतः शरीर स्वस्थ रहेगा ही। मन में अशान्ति, क्रोध, ईर्ष्या, राग-द्वेष बढ़ने पर शरीर को रोगी बनने से रोका नहीं जा सकता। आजकल अनेक लोगों को क्रोध, चिन्ता, भय, दुःख तथा मानसिक तनाव आदि के कारण रक्तचाप, मधुमेह तथा हृदय एवं मस्तिष्क सम्बन्धी बीमारियाँ होती रहती हैं।

चित्त को शान्त और प्रसन्न रखने की दृष्टि से मानसिक आहार के रूप में हमें अपने पाँचों ज्ञानेन्द्रियों की शुद्धि करनी होगी। कान से अच्छी बातें सुनें, भजन सुनें, आँख के द्वारा भी महापुरुषों की जीवनी पढ़ें, सत्-दृश्य का अवलोकन करें, मन में अच्छे विचारों को स्थान दें तथा बुरे विचारों को त्यागें। तभी चित्त शुद्धि की प्रक्रिया प्रारम्भ होगी।

वास्तव में मानसिक स्वस्थता ही आरोग्यता की मुख्य कुँजी है। मन तथा शरीर दोनों शुद्ध एवं स्वस्थ रहने पर ही पूर्ण रूप से स्वस्थ रहा जा सकता है। मानसिक सन्तुलन बनाये रखने के लिये भगवान् का भजन, प्रार्थना, अपने इष्ट का ध्यान, सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय आदि मुख्य साधन है। स्वस्थ रहने का अर्थ है अपने-आप में स्थित होकर शान्त एवं प्रसन्न रहना। वास्तव में शान्ति, प्रसन्नता अथवा जीवन का सम्पूर्ण रहस्य स्व में स्थित आत्मतत्त्व में विद्यमान रहना है जो उस परम तत्त्व का ही अंश है।

5. पंचमहाभूतों का सेवन–यह शरीर पंचमहाभूत अर्थात् आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी से निर्मित है। जीवन की रक्षा के लिये इन पाँचों तत्वों की अनिवार्य आवश्यकता है।

1. आकाश–जैसे हमारे सर्वत्र आकाश है वैसे ही हमारे शरीर के भीतर भी आकाश है। इसीलिये शरीर के भीतर असंख्य जीवनकोष हैं, जो गतिमान् हैं। रक्तसंचार या वायुसंचार के लिये शरीर में खाली जगह अर्थात् आकाश की आवश्यकता अनिवार्य है।

2. वायु–प्रायः जहाँ आकाश है वहाँ वायु भी है। चूँकि आकाश सर्वत्र है अतः वायु भी सर्वत्र है। वायु के बिना एक पल भी व्यक्ति रह नहीं सकता। जल और अन्न के बिना तो कुछ घंटों या दिनों तक प्राण बच सकते हैं, किंतु वायु के बिना प्राणी कुछ ही क्षणों में प्राण त्याग देता है। वायु का सेवन मनुष्य चौबीस घंटते सतत करता है, इसलिये आकाश तथा वायु का समान महत्व है।

जटिल रोग में जब औषधि असर नहीं करती तब रोगी को वायु-परिवर्तन कराकर स्वास्थ्य लाभ कराया जाता है। जहाँ दवा काम नहीं करती, वहाँ हवा काम कर जाती है-ऐसी कहावत प्रचलित है। प्रकृति ने जीवन की रक्षा के लिये प्रचुर मात्रा में हवा प्रदान कर रखी है। अतः प्रदुषण रहित वायु का होना आवश्यक है।

3. अग्नि–जब तक प्राणी जीवित है तब तक शरीर में गरमी रहती है। मृत्यु होने पर शरीर ठंडा हो जाता है। जीवन के साथ तेज या उष्मा का तथा सूर्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। सूर्य की गरमी से प्रकृति प्राणिमात्र के लिये फल-फूल, कन्द-मूल आदि पकाती है। सूर्यकिरणों में जन्तुनाशक गुण भी है। विभिन्न रोगों में सूर्यकिरण-चिकित्सा भी की जाती है। स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से प्रातःकाल तथा सायंकाल में जब किरणों में गरमी कम होती है तब सूर्य का सेवन खुले बदन करना हितकर है। अतः तेज भी जीवन के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

4. जल–मानव को जल की प्रचुर आवश्यकता है। मनुष्य के आहार में ठोस पदार्थ कम और तरल पदार्थ अधिक मात्रा में रहता है। स्नान, भोजन, स्वच्छता और सफाई सभी कार्य जल के बिना सम्भव नहीं है। पशुपालन, खेती-बाड़ी आदि सभी

कार्य जल पर ही निर्भर रहते हैं। अतः जल भी जीवन है। अतः जीवन के लिए स्वच्छ जल आवश्यक है।

5. पृथ्वी–पृथ्वी माता की गोद में हम जन्म से लेकर मृत्यु तक निरन्तर रहते हैं। पृथ्वी अर्थात् मिट्टी में आकाश, वायु, जल तथा सूर्य के सहयोग से अन्न, फल, मूल, वनस्पति और औषधियों आदि की उत्पत्ति होती है और इसी से सभी प्राणियों का भरण-पोषण तथा रोगों की चिकित्सा होती है। मिट्टी के विभिन्न प्रयोगों से अनेक रोगों की चिकित्सा होती है। मिट्टी की पट्टी प्रायः सभी रोगों में उपयोगी है।

यह शरीर पंचमहाभूतों से बना है इसलिये प्रकृति में आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी-तत्व की प्रचुरता है, जिससे प्राणी मुक्तभाव से उनका उपयोग करके नीरोग और स्वस्थ रह सके।

कल्याणकामी मनुष्य के लिये आयुर्वेदशास्त्र के अन्त में कुछ उपदेश प्रदान किये गये हैं–

मानव को सभी प्रकार के पापों से बचना चाहिये। हितैषी मित्रों को समझना तथा चाटुकार मित्रों से दूर रहना चाहिये। अभावग्रस्त, रुग्ण एवं दीनजनों की सहायता करनी चाहिये। सभी जीवों में भगवद अंश ही देखना चाहिए और सभी को अपने समान समझना चाहिये। देवता, गौ, ब्राह्मण, वृद्ध, वैद्य, राजा तथा अतिथि का सतत सत्कार करना चाहिये। याचकों को विमुख नहीं जाने देना चाहिये और कठोर वचन कहकर उनका तिरस्कार नहीं करना चाहिये। अपकार करने वालों का भी निरन्तर उपकार करने की ही भावना रखनी चाहिये।। फल की कामना से निरपेक्ष रहकर सम्पत्ति और विपत्ति में फल की समबुद्धि रखनी चाहिये। उचित समय पर अति संक्षेप में किसी से भी हितकर बात कहनी चाहिये-**'काले हितं मितं ब्रूयात्'** मनुष्य को करुणार्द्र, कोमल, सुशील तथा संशयरहित होना चाहिये तथा किसी पर अत्यन्त विश्वास भी नहीं करना चाहिये। किसी को अपना शत्रु मानना तथा किसी से शत्रुता करना दोनों अच्छे नहीं हैं। सदैव सबसे विनम्र व्यवहार करना चाहिये। व्यर्थ में हाथ-पैर हिलाना, लगातार सूर्य की ओर देखना, अत्यन्त चमकीली वस्तुओं की ओर देर तक नहीं देखना चाहिये, इससे अन्धत्व आने का भय होता है। सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय सोना, भोजन तथा स्त्रीगमन आदि कार्य करना निषिद्ध हैं। हानिप्रद पेय नहीं पीना चाहिये। किसी भी कार्य में अति नहीं करनी चाहिये – **'अति सर्वत्र वर्जयेत्।'**

बुद्धिमान् व्यक्ति को दूसरों से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। समस्त प्राणियों के प्रति दयाभाव तथा सत्पात्र को दान देने की भावना रखनी चाहिये। हिंसा, चोरी, पिशुनता, कठोरता, झूठ, दुर्भावना, ईर्ष्या, द्वेष आदि पापों से तथा शरीर, मन और प्राणी के द्वारा किसी भी प्रकार के पापों से बचना चाहिये। अन्यथा व्याधि रूप में उनका दण्ड भोगना पड़ता है।

संक्षेप में निष्कर्ष यह है कि जीवन के उत्कर्ष के लिये तथा अपने कल्याण के लिये आचार धर्म अर्थात् सदाचार का पालन ही मनुष्य का मुख्य धर्म है-**'आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः'** (विष्णुसहस्रनाम श्लोक 137)। जिसका अनुशीलन कर व्यक्ति अनेकानेक आपदाओं, रोगों, अभिचारों से सुरक्षित रहकर पूर्ण आरोग्य तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सभी को प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है।

जो व्यक्ति सदैव हितकर आहार-विहार का सेवन करता है, सोच-समझकर कार्य करता है, विषयों में आसक्त नहीं होता, जो दानशील, समत्व बुद्धि से युक्त, सत्यपरायण, क्षमावान्, वृद्धजनों की सेवा करने वाला है, वह नीरोग होता है–

नरो हिताहारविहारसेवी समीक्ष्यकारी विषयेष्वसक्तः।
दाता समः सत्यपरः
क्षमावानाप्तोपसेवी च भवत्यरोगः।।

(चरक)

मन, बुद्धि और चित्त जिसका स्थिर है, ऐसा प्रसन्नात्मा व्यक्ति ही स्वस्थ है–

'प्रसन्नात्मेन्द्रियग्रामो स्थिरधीः
स्वस्थमुच्यते।'

ये सभी बातें अथवा विशेषताएँ आचारधर्म के पालन से ही सम्भव है और यही स्वस्थ रहने की रामबाण हवा है।

(कल्याण से साभार)

शिष्य के जीवन में गुरु ही सर्वस्व होता है। इसलिए देवी-देवताओं की साधना करने के साथ गुरु साधना को ही जीवन में प्राथमिकता देनी चाहिए।

शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

**तदोपरोधाद् देवेशि! गुरु तंत्र सु दुर्लभं।
तंत्राणाां सारभूतं यत् कथयामि महेश्वरि।।1।।**

कैलाश पर्वत के शिखर पर भगवान शंकर ने कहा है - हे महेश्वरि! तुम्हारे आग्रह से तंत्रों के सार-भूत अति दुर्लभ 'गुरु-तंत्र' को बताता हूँ, जिसके पढ़ने व समझने से दिव्य ज्ञान मिलता है।

**न गुरोदधिकं शास्त्रं न गुरोदधिकं तप:,
न गुरोरधिकं मंत्रं न गुरोरधिकं फलं।
न गुरुरधिकं देवो न गुरोरधिकं शिव:,
न गुरोरधिकं मुक्तिर्न गुरोरधिकं जप:।।2।।**

गुरु से बढ़कर न शास्त्र है, न तपस्या, न मंत्र और न ही स्वर्गादि फलक। गुरु से बढ़कर न देवी हैं, न शिव ही गुरु से बढ़कर हैं और न ही मोक्ष या मंत्र जप। एकमात्र सद्गुरु ही सर्वश्रेष्ठ हैं।

**गुरु सेवां प्रकुर्वाणो शिव लोकं स गच्छति,
समुक्त: सर्व पापेभ्य: शिव लोकं स गच्छति।।3।।**

गुरुदेव की सेवा करता हुआ जो जनम मरण के बंधन से मुक्त होता है, वह समस्त पापों से छूटकर शिव-लोक में जाता है।

**अज्ञानात् पामरो लोके विश्वासं न गुरौ भवेत्,
तस्य कल्याणि! मंत्रौदो मम वाक्ये कथं रति:।।4।।**

हे देवेशि! अज्ञान के कारण इस संसार में लोगों की बुद्धि भ्रम में पड़ जाती है और उन्हें कोई सिद्धि नहीं मिल पाती। उन्हें गुरु की बातों पर विश्वास नहीं हो पाता, ऐसी दशा में उन्हें मेरे वचनों और मंत्रों पर भी विश्वास नहीं होता।

**गुरु सेवामकृत्वा तु ये भक्ता: कुल सेविन:,
तेषां मंत्राश्च देवाश्च प्रसीदन्ति न सर्वदा।।5।।**

गुरुदेव की सेवा किए बिना जो भक्त कुछ धर्म का पालन करते हैं, उनसे मंत्र और देवता भी प्रसन्न नहीं होते। अत: वाणी, मन और शरीर तीनों से ही सदा गुरु कार्यों में तत्पर रहना चाहिए।

**क्रोश मध्ये स्थितो नितयमेक वारं समाचारेत्,
योजनान्त: स्थित: शिष्यो वर्षे वार त्रयं नमेत्।।6।।**

जो शिष्य गुरु स्थान के निकट रहता हो (एक कोस की दूरी पर), उसे प्रतिदिन एक बार जाकर गुरुदेव को प्रणाम करना चाहिए। परन्तु यदि कोई शिष्य अनेक योजन अथवा काफी दूर रहता हो, तो भी उसे वर्ष में तीन बार और नहीं तो एक बार तो गुरुदेव के पास जाकर अवश्य प्रणाम करना चाहिए।

**देवी पूजा गुरो: पूजा तृप्तिश्च गुरु तर्पणम्,
गुरो: पादाब्जयोरादौ दद्यात्: पुष्पांजलित्रयम्।।7।।**

गुरु की पूजा करने से ही इष्ट की पूजा हो जाती है, गुरु का तर्पण करने से और गुरु भक्ति करने से ही इष्ट का तर्पण व भक्ति हो जाती है। गुरु वन्दना करने से ही सर्व देव-देवियों की स्तुति सम्पन्न हो जाती है। ऐसा ही शिष्य को समझना चाहिए।

**नष्टाय च महादेवि! मलिनाय न दापयेत,
गुरु भक्ति विहीनाय क्रोधि लोभ रतात्मने।।**

हे महादेवि! मलिन बुद्धि और गुरु भक्ति से रहित तथा क्रोध, लोभादि से ग्रस्त, नष्ट आचार-विचार वाले व्यक्ति के समक्ष गुरु तंत्र के इन दुर्लभ पवित्र रहस्यों को स्पष्ट नहीं करना चाहिए।

जो शिष्य अपने अहम, छल, कपट आदि को छोड़कर भौतिक श्रेष्ठताओं को भुलाकर गुरुचरणों में झुक जाता है वही सफल होता है।

गुरु वाणी

- मैं तुम्हें इसी जीवन में ब्रह्मत्व तक पहुंचा दूंगा, यह मेरी गारंटी है, पर गारंटी तब हो सकती है जब तुम अपने आपको मिटा सको, जब तुम अपने आपको पूर्णता से समाप्त कर सको।
- जिसमें समुद्र में छलांग लगाने की हिम्मत है, वह मोती प्राप्त कर सकता है और जो समुद्र के किनारे बैठा रहता है, जो छलांग लगाने की सोचता ही रहता है, लेकिन छलांग लगा नहीं पाता, बार-बार गुरु उकसावे भी, तब भी एक कदम चले और बैठ जाए, उसे बार-बार याद आए कि मेरे पीछे समाज है, पुत्र हैं, बंधु हैं, बांधव हैं, वे क्या सोचेंगे? क्या होगा? कैसा होगा? वह व्यक्ति समुद्र में छलांग नहीं लगा सकता।
- जो व्यक्ति दूसरों के प्रति द्वेष भाव से पूर्ण है, लोभी और अहंकारी है, भौतिक सुखों की चाह में ग्रस्त है, वह कदापि छलांग नहीं लगा सकता।
- जहां सुख हो, वहां हमेशा सुख ही रहे, ऐसा संभव नहीं, जहां दिन है तो रात भी आएगी। सुख के बाद दु:ख आएगा ही, परंतु आनन्द के बाद आनन्द ही आता हैं आनन्द और सुख में मूलभूत अंतर है, आनन्द के बाद मृत्यु नहीं आ सकती, चिंता व्याप्त नहीं हो सकती।
- अगर तुम जीवन में आनन्द प्राप्त करना चाहते हो, तो समर्पित होने की क्रिया सीखनी पड़ेगी, अपने प्राणों को गुरु के प्राणों में समावेश करने की क्रिया सीखनी ही पड़ेगी, अपने आपको भुलाना पड़ेगा।
- तुम्हारे पास जो भी चिंताएं हैं, दु:ख हैं, परेशानियां है, बाधाएं हैं, वे सभी तुम्हें मुझको समर्पित कर देनी है

24.01.23 गौरी तृतीया
या किसी भी शुक्रवार को

विवाह बाधा निवारण

अघोर गौरी प्रयोग

मेरे जीवन में ज्योतिषी के रूप में कार्य करते समय अनेक प्रकार की समस्याएं आयीं और मैंने उनका प्रामाणिक उपाय भी प्राप्त किया किन्तु विवाह सम्बन्धी अड़चनों का प्रामाणिक हल मिला तो केवल...

मैंने पूज्यपाद गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी से ज्योतिष सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करने के बाद अपने पैतृक नगर में एक ज्योतिषी के रूप में कार्य प्रारम्भ किया था।

पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त ज्ञान और गोपनीय सूत्रों के कारण मुझे कभी भी किसी भी कुण्डली का अध्ययन करते समय कोई बाधा आती ही नहीं थी।

आशीर्वाद स्वरूप पूज्य गुरुदेव ने मुझे पंचागुली साधना व कर्ण पिशाचनी साधना भी सम्पन्न करवा दी थी जिससे कहीं पर अटकने की स्थिति आने पर मैं अपने सामने बैठे व्यक्ति को दूसरे दिन आने के लिए कह कर नित्य रात्रि की साधना में उस का प्रामाणिक हल प्राप्त कर लिया करता था और मेरे कार्य में दिन दूनी रात चौगुनी सफलता मिलने के साथ ही साथ यश, प्रतिष्ठा भी प्राप्त होने लग गयी थी।

एक प्रकार से मेरे द्वारा कही सभी बातें अक्षरश: सत्य सिद्ध होने लग गयी थीं।

किसी भी व्यक्ति का भविष्य मुझे उसका चेहरा देखते ही शीशे की भांति साफ दिखाई देने लग जाता था। उन्हीं दिनों की बात है कि एक मध्यमवर्गीय परिवार की युवती मेरे कार्यालय में आयी और मुझे सम्मान सहित प्रणाम करके चैम्बर के बाहर एक ओर बैठ गई। थोड़ी देर बाद मैंने अवसर पाने पर उन्हें संकेत से अपने चैम्बर में आने का संकेत किया किन्तु उसने शालीनता से संकेत द्वारा उत्तर दिया कि वह एकांत में ही मुझसे वार्तालाप करेगी। मैंने कक्ष में बैठे दो-तीन अन्य आगंतुकों को विदा करने के बाद उसे अपने चैम्बर में बुलाया और समस्या पूछी। उसके पास कुण्डली आदि नहीं थी और वह एक क्षण कुछ उदास और मौन रहकर बोली-''पंडित जी क्या मेरे भाग्य में विवाह-योग है भी अथवा नहीं?'' उसके बोलने की उदासी और स्वर में छुपे हुये सूनेपन से मैंने चौंक कर उसकी ओर थोड़ा ध्यान से देखा। प्राय: 28-30 वर्ष की आयु, शरीर पर एक साधारण सी सूती

साड़ी और सामान्य नाक-नक्श होते हुए भी इस प्रकार का व्यक्तित्व, जिसे आकर्षक ही कहा जा सकता था किन्तु उसके रूप-रंग से भी अधिक मुझे जिस बात ने ध्यान देने को विवश किया वह यह थी कि इसके पूर्व कभी भी किसी स्त्री ने अपने विवाह के विषय में मुझसे इस प्रकार सीधे नहीं पूछा था। उसके स्वर में आ गई कातरता स्पष्ट कह रही थी कि विवाह उसके लिए एक उत्साह का विषय नहीं वरन् सामाजिक चिंता का विषय है और सामान्य सी पूछताछ से भी यही सिद्ध हुआ कि प्राय: भरे-पूरे घर की होते हुए भी न जाने क्यों उसके विवाह में लगातार बाधा ही आती जा रही है, कभी-कभी यदि कोई विवाह की बात चलती भी है तो सामान्य से दो-चार चरण के बाद समाप्त हो जाती है तथा धीमे-धीमे उसके परिवार वालों ने अब कहीं भी रिश्ते की बात करना समाप्त ही कर दिया है। मुझे इस बात से कुछ पीड़ा भी पहुँची कि एक स्त्री को इस प्रकार विवश होकर अपने विवाह के लिए स्वयं चिंता करनी पड़ रही है और जरूर उसके साथ कुछ न कुछ ऐसी बात अवश्य होगी, उसे घर में तानों से इस प्रकार छेदा जाता होगा अथवा समाज में व्यंग बाणों का इस प्रकार से सामना करना पड़ता होगा कि वह विवश होकर मुझ जैसे एक अपरिचित व्यक्ति से अपने हृदय की व्यथा कहने को निकल पड़ी है, अन्यथा कोई भी स्त्री, स्त्री-सुलभ लज्जा के कारण अपने विवाह की बात स्वयं नहीं कहती। विवाह की बात कहते समय उसके चेहरे पर जिस प्रकार की लज्जा की हल्की पर्त आ जाती है, उसका नाममात्र भी मेरे सामने बैठी युवती के चेहरे पर नहीं था। इसके विपरीत उसके चेहरे पर एक प्रकार की रूढ़ता और चिड़चिड़ापन उतर आया था। स्पष्ट लग रहा था कि निरन्तर इसी मनोदशा में रहते-रहते उसके चेहरे की स्वाभाविक कोमलता तथा सौम्यता भी चली गयी है। वह असमय ही अपनी उम्र से अधिक उम्र की दिखायी दे रही थी और चेहरे पर उतर आयी उदासी के साथ-साथ आंखों के नीचे के काले गड्ढे रही-सही कसर पूरी कर दे रहे थे।

मैंने प्रश्न कुण्डली के अनुसार उसका प्रश्न विचारित किया किन्तु उत्तर नकारात्मक मिला। मैंने फिर उसको दूसरे दिन आने के लिए कह अपनी नित्य साधना में सबसे पहले उसके प्रश्न पर ही विचार किया और यह जानकर कुछ स्तब्ध रह गया कि उसके भाग्य में तो विवाह-योग है ही नहीं। मैंने उसका पूर्व जीवन देखा और उससे वे सूत्र मिले, जिनके कारण उसके विवाह में बाधाएं आ रही थीं और भविष्य साधना के माध्यम से भी यही पाया, किन्तु मेरे मन में एक हठ ठन चुका था।

भूतकालीन घटनाओं को देखने के बाद यद्यपि मेरे मन में संदेह नहीं रह गया था किन्तु साथ ही साथ यह भी विचार आने लगा कि यदि पूर्व जन्म के कारण को समाप्त न किया जा सके उनका प्रभाव इस वर्तमान जीवन तक भोगना पड़े तो क्या इससे व्यक्ति को जीवन में कभी सम्भलने और संवारने का अवसर मिल सकता है। यदि ऐसा नहीं है तो साधना की उपयोगिता क्या है? फिर तो जो भाग्य में है वह होगा

यदि पूर्व जन्म के कारण को समाप्त न किया जा सके उनका प्रभाव इस वर्तमान जीवन तक भोगना पड़े तो क्या इससे व्यक्ति को जीवन में कभी सम्भलने और संवारने का अवसर मिल सकता है।
यदि ऐसा नहीं है तो साधना की उपयोगिता क्या है?

ही और मैं एक ज्योतिषी के रूप में उनका भाग्य पढ़कर बताने वाला पुतला मात्र ही हूँ, जबकि ज्योतिषी के रूप में मैं अपना केवल इतना ही दायित्व नहीं समझता था।

दूसरे दिन भी वह युवती मेरे कार्यालय आयी किन्तु मैंने उससे विशेष कुछ न कहकर केवल इतना ही कह दिया कि आपकी कुण्डली बनी न होने के कारण मैं कुछ समय बाद ही स्पष्ट रूप से उत्तर दे पाऊंगा। उसने मुझे पन्द्रह दिन बाद मिलने की बात कही जिसे मैंने स्वीकार कर लिया।

इस बीच में मैंने अपने ही नगर में किन्तु नगर से कुछ दूर रह रहे स्वामी हरिआनन्द जी से भेंट करने का निश्चय किया। हरिआनन्द जी मुझसे आयु में कुछ बड़े होते हुए भी एक प्रकार से भातृवत् स्नेह ही रखते थे क्योंकि उनके गुरु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव श्रीमालीजी के सम्पर्क में कुछ समय तक रह चुके थे। यूं भी सांसारिक विषयों में इतर विषयों की चर्चा करने हेतु मैं, उनके सुरम्य आश्रम में जब-जब पहुँच ही जाता था किन्तु इस बार मेरी यात्रा का उद्देश्य सर्वथा भिन्न था। मैं उनसे इस बात पर चर्चा करने के उद्देश्य से गया था कि यदि व्यक्ति के प्रारब्ध में कोई घटना या लाभ न हो तो क्या उसे जीवनपर्यन्त उस लाभ से वंचित ही रहना होता है?

स्वामी हरिआनन्द जी ने मेरा सदैव की भांति यथोचित स्वागत-सत्कार किया और बातों ही बातों में हम लोग अध्यात्म की गहन चर्चाओं में खो गए। एकाएक मुझे स्मरण आया कि मैं मूल विषय से तो अलग ही हट रहा हूँ और मैंने उनसे अपना मंतव्य स्पष्ट रूप से कहा। स्वामी जी से मेरी प्रारब्ध, पूर्व संचित कर्म, भाग्य एवं अन्यान्य विषयों पर जो चर्चा हुई वह तो अलग विषय है किन्तु मूल रूप से वे भी इसी बात पर सहमत थे कि जो कुछ हमारे प्रारब्ध में न हो उसकी प्राप्ति साधनात्मक उपायों से सम्भव है और इसके लिए विशेषकर साबर साधनाओं में प्रभावी व उचित विधान है क्योंकि साबर मंत्रों के रचयिता मूल रूप से विद्रोही व्यक्तित्व रहे और उन्होंने जीवन की विभिन्न विसंगितयों को लेकर उन पर मंत्र रच कर वैदिक मंत्र के ज्ञाताओं को एक प्रकार चुनौती दी। हरिआनन्द जी यद्यपि स्वयं दूसरे मत के माने वाले थे किन्तु उनकी साबर व अघोर मंत्रों में भी गहन रुचि थी। प्रसंगवश उन्होंने मुझे मेरी समस्या विशेष का मंत्रात्मक हल तो दिया ही साथ ही प्रयोग रूप में कुछ अन्य मंत्र भी दिए। मैंने उन मंत्रों की प्रयोग विधि तथा उच्चारण भी उनसे समझा तथा लौट कर सम्बन्धित मंत्र उस युवती को पूरी बात स्पष्ट करते हुए, प्रयोग के रूप में करने की सलाह दी। यद्यपि उसे विश्वास नहीं था किन्तु मुझे विश्वास था कि साबर मंत्र कभी भी असफल हो ही नहीं सकते और वास्तव में हुआ भी ऐसा ही। उसने इस मंत्र का प्रयोग प्रारम्भ किया। यह ग्यारह दिनों का प्रयोग था जिसमें प्रतिदिन अघोर गौरी मंत्र के 108 मंत्र जप करने थे। इसमें साधना प्रयोग सामग्री के रूप में अघोर गौरी यंत्र, हकीक माला एवं ग्यारह गोमती चक्र की आवश्यकता होती है। अपने सामने लाल वस्त्र पर अघोर गौरी यंत्र स्थापित कर हकीक माला से विशिष्ट मंत्र का जप कर प्रत्येक दिन की मंत्र जप समाप्ति पर एक गोमती चक्र यंत्र पर चढ़ा देना था तथा ग्यारह दिनों तक करने के बाद अंतिम दिन सभी गोमती च्रकों को एक साथ सुरक्षित रखकर शेष सामग्री विसर्जित कर देनी थी। इसके अतिरिक्त इस साधना में कोई भी विशेष विधि-विधान अथवा जटिलता नहीं थी। यह विशेष मंत्र था–

मखानो हाथी जद अम्बारी उस पर बैठी कमाल खां की सवारी बैठे चबूतरे पढ़े कुरान हजार काम दुनिया का करे एक काम मेरा कर न करे तो तीन लाख तैतीस हजार पैगम्बरों की दुहाई।

उसने मेरे बताए ढंग से सम्पूर्ण प्रयोग सम्पन्न किया और तब प्रयासपूर्वक एक विशेष स्थान पर विवाह की बात उसके परिवार के सदस्यों ने मेरे अत्यधिक आग्रह पर आरम्भ की। यद्यपि वह परिवार उनकी आर्थिक स्थिति के सामने उनसे कहीं अधिक ऊंचा था और वर के विदेश जाने की बात भी चल रही थी किन्तु वे भी आश्चर्यचकित रह गए जब उन्हें इस विवाह में स्वीकृति तो मिली ही साथ ही विवाह के अगले पन्द्रह दिनों के भीतर ही भीतर वर को विदेश जाने का अवसर भी मिल गया और लगभग छः माह के भीतर वह युवती भी विदेश चली गयी। उसने वे सभी ग्यारह गोमती चक्र सम्भाल कर रखे हैं तथा अपने पूजा स्थान में उन्हें नित्य सौभाग्य सूचक मंगल आभूषण मानकर उनका पूजन करती रहती है।

साधना सामग्री- 660/-

सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते।।

माघ शुक्ल पूर्णिमा
05.02.23
या किसी भी पूर्णिमा को
प्रात:काल
5 से 7 बजे के मध्य

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी जयंती

राज राजेश्वरी

ब्रह्म का ही दूसरा नाम ज्ञान या विद्या है
शाक्त सम्प्रदाय में जिस दस प्रधान रूपों में ब्रह्म की उपासना होती है,
उन्हें महाविद्या कहते हैं।

तंत्रशास्त्र में भगवती त्रिपुरसुन्दरी का महत्त्व सर्वोपरि बताया गया है। कहा गया है–

न गुरोः सदृशो दाता न देवः शंकरोपमः।
न कौलात् परमो योगी न विद्या त्रिपुरापरा।।

अन्यत्र इनके महत्त्व के सम्बन्ध में कहा गया है कि जहाँ भोग है, वहाँ मोक्ष नहीं और जहाँ मोक्ष है, वहाँ भोग नहीं, किंतु भगवती त्रिपुरसुन्दरी की उपासना करने वालों के लिये भोग और मोक्ष दोनों ही सहज हैं–

यत्रास्ति भोगो नहि तत्र मोक्षो यत्रास्ति मोक्षो नहि तत्र भोगः।
श्रीसुन्दरीसाधनतत्पराणां भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव।। (मङ्गलस्तव)

पराशक्ति की शिव-शक्ति के विग्रह के रूप में प्रथम कल्पना काली के रूप में है, इसलिए इन्हें आद्या भी कहते हैं; तारा द्वितीया और त्रिपुरा तृतीया हैं, ये ही महाविद्या त्रिपुरा, बाला, षोडशी, त्रिपुर सुन्दरी, श्रीविद्या आदि नामों से प्रसिद्ध हैं। श्री विद्या के नाम से सम्पूर्ण भारत में इनकी उपासना होती है।

त्रिपुर शब्द की नाना प्रकार से व्याख्या है–

त्रिमूर्ति स्वर्गांश्च पराभवत्वात्, तयीमयत्वाच्च परैव देव्या।
लये त्रिलोक्यामपि पूरणत्वात्; प्रायोम्बिकास्त्रि पुरेति नाम।।

अर्थात् 'पराशक्ति' से प्रकट होकर त्रिमूर्ति की सृष्टि करने के कारण, परादेवी के त्रयीमय होने के कारण, प्रलय के बाद तीनों लोकों को पूर्ण कर देने के कारण; प्रायः अम्बिका का नाम त्रिपुरा है। इस सम्बन्ध में एक उक्ति और भी है–

ब्रह्मा विष्णु महेशाद्यैस्त्रिदर्शरचिता पुरा।
त्रिपुरेति सदा नाम कथितं दैवतैस्तव।।

अर्थात् 'पुराकाल में ब्रह्मा, विष्णु, महेशादि देवों ने इनकी अर्चना की, इसलिए देवताओं ने सर्वदा इन्हें त्रिपुरा नाम दिया, जैसे–

ब्राह्मी रौद्री वैष्णवी त्रिशक्त्यस्तिस्र एवहि।
पुरं शरीरं यास्यां स त्रिपुरेति प्रकीर्तिता।।

अर्थात् 'ब्राह्मी, रौद्री, वैष्णवी ये तीनों शक्तियों ही जिसका पुर अर्थात् शरीर है, उसे त्रिपुरा कहते हैं।'

इनके अतिरिक्त और भी उल्लेखनीय वर्णन हैं–जिनका मण्डल त्रिकोण है, जिनके भूपुर में तीन रेखाएं हैं, जिनका मंत्र भी तीन अक्षरों का है, जिनके तीन रूप हैं, जो तीन प्रकार की कुण्डलिनी शक्ति और तीन देवताओं की सृष्टि करती हैं और जिनका सब कुछ तीन-तीन है, इसएि यह त्रिपुरा है। तीनों मूर्तियों से पुरातन होने के कारण अम्बिका का नाम त्रिपुरा है; सुषुम्ना, इड़ा और पिंगला ये तीन नाड़ियां त्रिपुर हैं, मन, बुद्धि और चित्त को भी त्रिपुर कहा गया है, इन स्थानों में निवास होने के कारण ये त्रिपुरा हैं। तीनों स्थानों **'भूः', 'भुवः' और 'स्वः'** में रहने वाली देवी सरस्वती क्रिया शक्ति रूप, तीन लोक, तीन देव, तीनों लोक के तीनों पावक, तीन ज्योति, तीन वर्ग, तीन गुण, तीन शब्द, तीन दोष, तीन काल, तीन अवस्था आदि इनके रूप हैं।

कालिका पुराण में भी त्रिपुरा का वर्णन है, शम्भू की प्रधान इच्छा के कारण उनके तीन शरीर हो गये। इनका ऊर्ध्वभाग पांच मुख और चार भुजाओं वाला हुआ, जो ब्रह्म रूप कमल के केशरवत् गौर वर्ण हुआ। उनका मध्य भाग नीलवर्ण, एकमुख और चतुर्भुज प्रयोग हुआ, जो विष्णु रूप के हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म हुए। उनके तृतीय भाग में पांच मुख और चार हाथ हैं, यह स्फटिक की तरह उजला है और इसके माथे पर चन्द्रमा है। इस प्रकार तीन पुर के योग से परम शिव त्रिपुर हुए।

त्रिपुरा की प्रतिमा का प्रसिद्ध ध्यान इस प्रकार से है–

बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशांकुश शरं चापं धरयन्ती शिवां भजे।।

त्रिपुरा को कदम्ब का पुष्प बहुत ही प्रिय है, कदम्ब वृक्ष संसारमयी रूप है, जिसके अनन्त गोल पुष्प ब्रह्माण्ड में कृष्ण, त्रिपुरा आदि रूपधारी विश्वात्मा विहार करते हैं, अपनी कृति और लीला-स्थल होने के कारण कदम्ब अर्थात् विश्व उन्हें अतिप्रिय है।

'हरितायन संहिता' के त्रिपुरा रहस्य महात्म्य खंड के चतुर्थ अध्याय में 'महामुनि संवर्त' ने परशुराम जी से यह प्रश्न किया, कि संसार-भय पीड़ितों के लिए शुभ मार्ग कौन सा है?

इस प्रश्न का समाधान करते हुए मुनिवर ने कहा है-'गुरोपदिष्ट मार्ग से स्वात्मशक्ति महेश्वरी त्रिपुरा की आराधना कर उनकी कृपा के लेश को प्राप्त करते हुए सर्वसाम्याश्रयात्मक स्वात्मभाव को प्राप्त करो। दृश्यमान सब कुछ आभास मात्र सार शक्ति विलास ही है, त्रिपुरा ही श्रीविद्या, ललिता, कामेश्वरी और महात्रिपुर सुन्दरी है।'

'वामकेश्वर तंत्र' में त्रिपुर का स्वरूप इस प्रकार कहा गया हे-'ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र ईशरूपिणी श्रीविद्या के ही ज्ञान शक्ति, क्रिया शक्ति और इच्छा शक्ति ये तीन स्वरूप हैं। इच्छा शक्ति उनका शिरोभाग है, ज्ञान शक्ति मध्य भाग तथा क्रिया शक्ति अधोभाग है। शक्तित्रयात्मक उनका रूप होने के कारण ही वह त्रिपुरा कही जाती हैं।'

'ब्रह्माण्ड पुराण', 'मार्कण्डेय पुराण' और 'ब्रह्मवैवर्त्त पुराण' में भी आदि शक्ति के अनेक रूपों की चर्चा है।

शक्ति की उपासना की परम्परा में त्रिपुरा आदि शक्ति के रूप में पूजित हैं। तांत्रिक और वैदिक दोनों ही मार्गों से त्रिपुरा की आराधना की जाती है। यह भारतीय संस्कृति की सर्वमान्य देवी हैं। श्री चक्रराज में भी इनकी अर्चना की जाती है।

इस शक्ति को प्रेम और विश्व बन्धुत्व की देवी के रूप में उपास्या कहा गया है, इस प्रकार त्रिपुरा मानव-प्रेम की स्रष्टा देवी हैं।

''जीवन की दुर्लभ एवं अद्वितीय राज राजेश्वरी त्रिपुरा साधना जो मानव जाति के लिए वरदान स्वरूप है।''

महाविद्या त्रिपुरा साधना

'भगवान परशुराम' का नाम तंत्र के क्षेत्र में एक माना हुआ नाम है, क्योंकि परशुराम ने तंत्र साधना के क्षेत्र में कई नये आयाम दिये, जिससे संपुष्ट होकर तंत्र सामान्य गृहस्थ व्यक्तियों के लिए अत्यधिक उपयोगी हो गया। परशुराम द्वारा सम्पन्न की गई साधनाओं का वर्णन 'हरितायन संहिता' तथा अन्य विविध शास्त्रों व साहित्यों में आंशिक रूप से प्राप्त होता है। हरितायन संहिता में उद्धृत है, कि परशुराम ने महामुनि संवर्त से संसार-भय का नाश कर पूर्ण अभय प्राप्ति तथा सम्पन्नता व प्रभुत्व युक्त होने के लिए 'महाविद्या त्रिपुरा' की साधना प्राप्त की थी।

जिस 'त्रिपुरा' की साधना उन्होंने सम्पन्न कर विशिष्ट स्थान प्राप्त किया, उसी राजराजेश्वरी त्रिपुरा की संक्षिप्त साधना पद्धति आप सभी के लिए प्रस्तुत है, जिससे कि आप लोगों के जीवन से 'भय' का नाश हो सके और आप 'अभय' प्राप्त कर निर्द्वन्द्व विचरण करते हुए इस संसार में पूर्ण ऐश्वर्य, सम्पन्नता और प्रभुता प्राप्त कर सकें।

साधक माहेश्वरी मंत्रों से अभिसिक्त 'त्रिपुरा यंत्र' तथा 'त्रिशक्ति गुटिका' प्राप्त कर लें। माघ शुक्ल पूर्णिमा 05.02.23 को या किसी भी माह की पूर्णिमा को प्रातःकाल 5 से 7 बजे के मध्य स्नानादि से निवृत्त हो कर पीली धोती तथा गुरु पीताम्बर धारण कर पीले आसन पर पूर्वाभिमुख हो कर बैठें। किसी ताम्र पात्र में यंत्र स्थापित करें तथा संक्षिप्त पूजन पुष्प, अक्षत व कुंकुम से करें। गुटिका को यंत्र के ऊपर रख दें। धूप-दीप की आवश्यकता नहीं है। गुटिका को एकटक देखते हुए 16 माला निम्न मंत्र का जप करें-

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट् ॥

यह मंत्र जप शक्तिमाला से करना चाहिए।

जप समाप्ति पर गुटिका तथा यंत्र को किसी कपड़े में लपेट लें और उसी दिन किसी देवी मंदिर में चढ़ा दें अथवा नदी में विसर्जित कर दें।

न्यौछावर-600/-

शिष्य वह होता है जो धीरे-धीरे अपने अस्तित्व को समाप्त कर दे,
स्व का विसर्जन कर दे।
अपना नाम, पद, गरिमा, श्रेष्ठता, उच्चता के भावों को तिरोहित कर दे।

शिष्य कौन

एक गुरु के पास शिष्य ने जाकर अत्यन्त विनीत भाव से सेवा करने की इच्छा प्रकट की। गुरु ने अपने आत्मबल से उसे देखते ही पहचान लिया कि शिष्य किस भावभूमि पर खड़ा है परन्तु फिर भी गुरु ने उसे मना करते हुये कहा कि अभी सेवा हेतु तुम्हारा समय नहीं आया है। तब शिष्य ने हाथ जोड़कर कहा गुरुदेव समय तो आपके वश में है और मेरे जीवन का बहुत समय निकल चुका है। अब मैं और समय व्यर्थ नहीं करना चाहता। यह जीवन आप के चरणों में सार्थक करना चाहता हूँ। क्या आपकी कृपा मुझे प्राप्त नहीं होगी? मैं आपका आशीर्वाद चाहता हूँ। आप मुझ पर करुणा, कृपा करें। शिष्य के अत्यन्त करुण स्वर सुन कर गुरु ने प्रश्न किया - तेरा नाम क्या है?

शिष्य ने उत्तर दिया - जिस नाम से आप मुझे पुकारें, वही मेरा नाम होगा।

गुरु ने पूछा - तू यहाँ रहेगा, क्या खायेगा?

शिष्य ने कहा - जो आप खिलायें?

गुरु ने फिर पूछा - तुझे किस प्रकार के वस्त्र पहनने पसन्द हैं?

शिष्य- जो भी वस्त्र आप पहनने के लिए देंगे।

तू कौन सा काम करेगा ?

जो आप की आज्ञा होगी।

गुरु ने फिर पूछा - तेरी कोई इच्छा है?

शिष्य ने कहा - भला शिष्य की भी कोई इच्छा होती है गुरुदेव, जब मैं आप के सानिध्य में हूँ तो मुझे क्या सोचना, क्या इच्छा करना, आप जो भी मेरे लिये सोचेंगे, वही मेरे हित में होगा।

गुरु उसके भावपूर्ण उत्तरों को सुनकर बेहद प्रसन्न हुए और स्वयं उठकर उस शिष्य को गले लगा लिया और बोले, तुम सचमुच शिष्यता प्राप्त करने के योग्य हो, तुमने आज यह बता दिया कि शिष्य या सेवक कैसा होना चाहिए।

भौतिक संसाधनों को प्राप्त कर के यदि श्रेष्ठ शिष्य बना जा सकता तो सभी सुख-सुविधाओं से युक्त करोड़पति व्यक्ति श्रेष्ठ शिष्य कहलाते। त्याग, साधना का तप एवं गुरु के वचनों को अपने आचरण में उतारने से श्रेष्ठता प्राप्त हो सकती है सिर्फ दूसरों को प्रवचन देने से नहीं। गुरु तो सूक्ष्म दृष्टि से शिष्य का आंकलन करता रहता है।

सद्‌गुरुदेव ने भी अपने प्रवचनों में कहा है-

शिष्य वह होता है जो धीरे-धीरे अपने अस्तित्व को समाप्त कर दे, स्व का विसर्जन कर दे। अपना नाम, पद, गरिमा, श्रेष्ठता, उच्चता के भावों को तिरोहित कर दे। सद्‌गुरुदेव के शब्दों में, आप धनी हैं, आप वकील हैं, आप बड़े व्यापारी हैं, आप मैनेजर हैं, आप डॉक्टर हैं, किसी कम्पनी के मालिक हैं या बहुत अधिक पढ़े-लिखे हैं तो अपने घर में, गुरु के यहाँ आने पर आप सिर्फ एक साधक हैं और अन्य शिष्यों के समान ही हैं। गुरु के यहाँ धूर्तता के लिए कोई स्थान नहीं है। इन सब के साथ आप शिष्यता में आगे नहीं बढ़ सकते। आप में विशिष्टता तब आती है जब आप घर से लाये हुये अहंकार रूपी इन आभूषणों को त्याग कर सिर्फ गुरु आज्ञा का पालन करें। गुरु द्वारा निर्धारित नियमों का अनुसरण करें। सभी को समान दृष्टि से देखें। गुरु द्वारा दिया गया कोई भी कार्य करने में हीन भावना का अनुभव न करें। किसी को भी हेय दृष्टि से न देखते हुये सिर्फ स्वयं के सुधार का चिंतन करें।

भौतिक संसाधनों को प्राप्त कर के यदि श्रेष्ठ शिष्य बना जा सकता तो सभी सुख-सुविधाओं से युक्त करोड़पति व्यक्ति श्रेष्ठ शिष्य कहलाते। त्याग, साधना का तप एवं गुरु के वचनों को अपने आचरण में उतारने से ही श्रेष्ठता प्राप्त हो सकती है सिर्फ दूसरों को प्रवचन देने से नहीं। गुरु तो सूक्ष्म दृष्टि से शिष्य का आंकलन करता रहता है।

जो भौतिक संसाधनों को प्राप्त कर महानता का अनुभव करते हैं क्या वह शिष्य हो सकते हैं।

जो गुरु के सामने विनम्र रहे, शांत भाव से आज्ञा सुने और पूरी क्षमता से गुरु आज्ञा का पालन करे, आज्ञा पालन में न चिंतन हो न विलम्ब, गुरु की उपस्थिति या उनकी अनुपस्थिति दोनों ही स्थितियों में समान रूप से कार्य सम्पन्न करें एवं बिना किसी शर्त के जो सब विधि गुरु चरणों में समर्पित हो वही शिष्य है।

सभी शिष्यों के लिये यह हर्ष का विषय है कि गुरुदेव के आशीर्वाद तलें तीर्थ यात्राओं के क्रम में पूज्य गुरुदेव ने आने वाले अप्रैल माह में मुक्तिनाथ धाम यात्रा के आयोजन की अनुमति काठमाण्डू (नेपाल) के शिष्यों को प्रदान कर दी है। शीघ्र ही काठमाण्डू की आयोजक समिति यात्रा तिथि एवं प्रति साधक आने वाले खर्च का विवरण भेजेगी, जिसका पूर्ण विवरण फरवरी 2023 के अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

मुक्तिनाथ धाम

- नेपाल के पश्चिम में स्थित मुस्तांग जिले में मुक्तिनाथ धाम तीर्थ स्थित है। यह मन्दिर 12400 फीट की ऊँचाई पर हिमालय की गोद में अवस्थित है। मन्दिर के दक्षिण में बर्फ से ढकी अन्नपूर्णा पर्वतमाला है और उत्तर में तिब्बती पठार का मनोरम दृश्य है।
- मुक्तिनाथ वैष्णव सम्प्रदाय के प्रमुख मन्दिरों में से एक है। इसे मुक्ति क्षेत्र के रूप में जाना जाता है।
- नेपाल की महारानी सुवर्णाप्रभा ने 1815 में मुक्तिनाथ मन्दिर का पुनर्निर्माण करवाया था।
- यह तीर्थ भगवान शालिग्राम के लिए प्रसिद्ध है। शालिग्राम एक पवित्र पत्थर या शिला होती है, जिसे भगवान विष्णु का प्रतीक माना जाता है। हिन्दुओं के लिए यह पूजनीय है। यह शालिग्राम मुख्य रूप से नेपाल के मुक्तिनाथ क्षेत्र के काली गंडकी नदी में ही पाया जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार वृन्दा ने भगवान विष्णु को कीड़े-मकोड़े बनकर जीवन जीने का श्राप दिया था। कालान्तर में उसी श्राप की वजह से शालिग्राम पत्थर का निर्माण हुआ, जिसे भगवान विष्णु का स्वरूप माना जाता है। इस तीर्थ को सभी पापों का नाश करने वाला तीर्थ कहा जाता है। यहीं पर भगवान विष्णु को वृंदा के श्राप से मुक्ति प्राप्त हुई थी, इसलिये इसे 'मुक्तिनाथ' के रूप में पूजा जाता है। यहाँ मन्दिर में भगवान विष्णु की मूर्ति है एवं साथ ही भूदेवी (लक्ष्मी), देवी सरस्वती और सीता की छवियां भी हैं। भगवान विष्णु के मन्दिर के अलावा, शिव-पार्वती का मन्दिर, गणेश मन्दिर, ज्वालामाई मन्दिर भी है। मन्दिर के पीछे मुक्ति धारा नाम की 108 धाराएं हैं एवं प्रांगण में लक्ष्मी कुण्ड एवं सरस्वती कुण्ड भी हैं। ऐसी मान्यता है कि जो इस पवित्र जल में स्नान करता है, उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- मुक्तिनाथ से लगभग 15 किलोमीटर पहले काली गंडकी के तट पर कागबेनी नामक स्थान है, जो हिन्दू तीर्थ यात्रियों का प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। यहाँ पर श्राद्ध तर्पण करने से व्यक्ति की कई पीढ़ियों को मुक्ति मिल जाती है, ऐसी मान्यता है।

अहंकार

धार्मिक विचारों वाले एक राजा के पास उसके गुरुदेव मिलने आए और राजा को कहा कि राजन मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ कि तुम निस्पृह भाव से जनता की सेवा कर रहे हो और साथ ही राज-कार्यों पर भी संतोष व्यक्त किया। भावविभोर होकर राजा ने गुरुदेव से अपनी इच्छा जाहिर की कि गुरुदेव आज मैं उपहारस्वरूप आपके चरणों में कुछ भेंट देना चाहता हूँ। अपनी आज्ञा प्रदान करें और कृपा कर बतायें कि मैं क्या दे सकता हूँ।

गुरु ने बिना किसी द्वंद्व के कहा-राजन, तुम स्वयं अपनी इच्छा अनुसार अपनी कोई प्रिय वस्तु मुझे दे सकते हैं, मैं क्या मांगू? राजा ने कुछ विकल्प उनके समक्ष पेश किये एवं अपने राज्य के समर्पण की इच्छा भी जाहिर की तो गुरुदेव बोले राजन यह राज्य तो जनता का है, आप तो मात्र उसके संरक्षक हैं। राजा को अपने गुरुदेव की बात सही लगी, तब राजा ने कहा कि महल, राजसवारी इत्यादि तो मेरे ही हैं, गुरुदेव आप इन्हें स्वीकार कर लें। गुरुदेव ने हंसते हुये कहा कि ये सब भी जनता के ही हैं और आपको राज-काज चलाने में सुविधा के लिए उपलब्ध कराये गये हैं। राजा ने अपना शरीर दान में देने की बात कही, तब गुरुदेव ने कहा कि शरीर भी आपका कहां है राजन ? वह तो तुम्हारे परिवार, बच्चों का है इसे आप कैसे दे पायेंगे? तब राजा असमंजस में पड़ गया, फिर और क्या दान में दें? तब उसके गुरु ने ही मार्ग सुझाया कि हे राजन आप अपने मन का अहंकार दान कर दो। अहंकार ही सबसे सख्त बंधन है, अहंकार से ही हमारे अन्दर के सभी विकारों का उदय होता है और हमारी उन्नति का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है अतः तुम इसे ही दान कर दो तब राजा जो अपने गुरु के प्रति अत्यन्त समर्पित था और वह जानता था कि गुरु शिष्य का सिर्फ हित चिंतन ही चाहते हैं उसने अपने गुरु की आज्ञा मानकर उसी क्षण अहंकार त्यागने का निश्चय किया और गुरुदेव के सामने ही संकल्प लिया कि आज से वह किसी बात का अहंकार नहीं करेगा और उसके बाद एकांत मे जब उसने गुरुदेव की बातों का चिंतन किया तब पाया कि अशांति का मुख्य कारण तो अहंकार ही है और अब उसे गहरी मानसिक शांति का अनुभव होने लगा।

जैसा कि गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है-

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहङ्कार स शान्तिमधिगच्छति।।

जो पुरुष सम्पूर्ण कामनाओं को त्यागकर ममतारहित, अहंकाररहित और स्पृहारहित रहते हुए अपने कर्म करता है, वही शान्ति को प्राप्त होता है अर्थात् वह शान्ति को प्राप्त है।

राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष – माह का प्रथम सप्ताह शुभ रहेगा। परिस्थितियों में सुधार होगा। परिवार में किसी की शादी होगी। नौकरी के अवसर प्राप्त होंगे। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। दूसरे सप्ताह में कुछ टेंशन रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। व्यापार में नुकसान हो सकता है। कोई छुपी बात उजागर होने से परेशानी में फंस सकते हैं। माह के मध्य में किसी अधिकारी से मुलाकात लाभदायक रहेगी। कोई अप्रिय समाचार मिल सकता है। अनावश्यक खर्च करने से बचें। कार्य समय पर हो जाने से मन में प्रसन्नता रहेगी। कहीं से रुके हुये पैसे प्राप्त होंगे।आखिरी सप्ताह में बनाई गई योजना सफल होगी। घर में अशांति का वातावरण रहेगा। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में पूर्ण रुचि रखेगा। मित्रों के सहयोग से कार्य पूर्ण होंगे। किसी से फालतू उलझें नहीं। आप **विघ्न निवारक गणपति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 3, 4, 5, 13, 14, 21, 22, 30, 31

वृष –माह का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। किसी से टकराहट होने पर मामला बिगड़ सकता है। अत: किसी से उलझें नहीं, थोड़ा परेशानी का समय रहेगा। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में नहीं लगेगा। किसी जमीन का सौदा करने में सफल रहेंगे। किसी की सहायता से समस्यायें सुलझा लेंगे, आर्थिक परेशानियां दूर होंगी। शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकेंगे। सोचे गये कार्य निपट जायेंगे। परिवार में किसी की तबियत खराब रहेगी। प्रतियोगी परीक्षा में सफल होने के योग हैं। कार्य के सिलसिले में की गई यात्रा सफल होगी। अचानक कोई अनहोनी घटना घट सकती है। दूसरों की परेशानी में आप परेशान रहेंगे। आर्थिक स्थिति डावांडोल होगी। सरकारी कर्मचारियों का प्रमोशन हो सकता है। माह के अन्त में किसी भी परिस्थिति में गुस्से को काबू में रखें। रुपये किसी को उधार न देवें। नया वाहन खरीदारी हो सकती है। बाहर घूमने का प्लान हो सकता है। आप **अष्ट लक्ष्मी दीक्षा** प्राप्त करे।

शुभ तिथियाँ – 5, 6, 7, 15, 16, 17, 23, 24, 25

मिथुन – सप्ताह का प्रारम्भ मानसिक संतोष देगा। रुके हुये रुपये प्राप्त होंगे। इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। दूसरे सप्ताह से कामयाबी के अवसर हैं। अधिकारी वर्ग सन्तुष्ट रहेंगे। कार्य बनेंगे। पुत्र का पूर्ण सहयोग मिलेगा। शत्रुओं से विशेष सावधान रहने की जरूरत है। मित्रों से भी सतर्क रहें। विद्यार्थियों की रुचि पढ़ाई में रहेगी। तीसरे सप्ताह में कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। प्रेम में सफलता मिलेगी। दाम्पत्य जीवन में मधुरता रहेगी। जीवनसाथी का सहयोग व्यापार में मिलेगा। समय परिवर्तन होने से परिस्थितियों में धीरे-धीरे सुधार आयेगा। आखिरी की तारीखों में सावधान रहें नहीं तो विरोधी नुकसान पहुंचा सकते हैं। कार्य के प्रति बाधा महसूस करेंगे। अचानक टेंशन आ सकती है। आप **सर्व बाधा निवारण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 8, 9, 10, 18, 19, 25, 26, 27

कर्क – प्रारम्भ लाभकारी रहेगा। सरकारी कार्यों एवं जमीन – जायदाद के कार्यों में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। कहीं से अशुभ समाचार मिल सकता है। शत्रुओं से सावधान रहें। रुपये उधार न देवें। शेयर मार्केट या सट्टे आदि में पैसे न लगायें। कोई नया व्यापार प्रारम्भ कर सकते हैं। मित्रों का सहयोग मिलेगा। नौकरीपेशा लोगों के लिए अच्छा समय है। माह के मध्य में गलत कार्यों से दूर रहें। नौकर धोखा दे सकता है। परिवार में अशांति रहेगी। प्लानिंग किये गये कार्यों में सफलता मिलेगी। इस समय यात्रा का लाभ मिलेगा। वाहन चालन में सावधानी बरतें। किसी और की गलतियां आप पर आ सकती है। दाम्पत्य जीवन में कटुता का वातावरण बनेगा। अनेक जटिल समस्याओं को सुलझा सकेंगे। तीर्थ यात्रा का प्रोग्राम बन सकता है। आप **पूर्णत्व प्राप्ति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 1, 2, 10, 11, 12, 19, 20, 21, 28, 29

सिंह – प्रथम सप्ताह संतोषप्रद रहेगा। जमीन-जायदाद के मामले अपने पक्ष में होंगे। पैतृक सम्पत्ति मिलने के आसार हैं। दूसरे सप्ताह में आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। मेहनत बेकार चली जायेगी। नया व्यापार शुरू होने की सम्भावना बन रही है। यात्रा से लाभ होगा। माह के मध्य में सोचे गये कार्य पूर्ण होंगे। मन में आत्मविश्वास जागृत होगा। परेशानियों से मुकाबला करके सफलता पायेंगे। बच्चों का मन पढ़ाई में नहीं लगेगा। संतान कहने में नहीं रहेगी। क्रोध को काबू में रखें। सेहत का ख्याल रखें। शत्रुओं को परास्त कर सकेंगे। मित्रों का सहयोग मिलेगा। दाम्पत्य जीवन में नोक-झोंक होगी। कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। समय परिवर्तन के साथ सुधार होगा। आत्मविश्वास जागेगा, सुस्ती और आलस्य समाप्त होगा। आखिरी तारीखों में कुछ नया होने वाला है। आप **नव निर्माण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 3, 4, 5, 13, 14, 21, 22, 23, 30, 31

कन्या – माह का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। कोई परेशानी आ सकती है। जिस पर विश्वास किया वही धोखा दे सकता है। रुपये उधार न दें। कठिनाइयां पारकर सफलता पा सकेंगे। किसी उच्च अधिकारी से मुलाकात लाभ देगी। वातावरण अनुकूल होगा। खर्च करने की अधिकता रहेगी, कोई छुपी बात उजागर हो सकती है। वाहन सावधानी

पूर्वक चलायें। कोई रुका कार्य पूरा हो जायेगा। माह का मध्य शुभकारी है। नये मित्र बनेंगे, तीर्थ यात्रा हो सकती है। कोई महत्वपूर्ण वस्तु खोने का भय है। जिसका भला करेंगे, वही हावी होगा। किसी के कहने में आकर कोई निर्णय न लें। अचानक कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। आखिरी सप्ताह में कोई नया कारोबार शुरू कर सकते हैं, मित्र का सहयोग मिलेगा। ऑफिस में कोई फाइल खोने पर आप को डांट खानी पड़ सकती है। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। आप **पूर्ण भाग्योदय दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 5, 6, 7, 15, 16, 17, 23, 24, 25

तुला - माह का प्रारम्भ लाभकारी है। सोचे गये कार्य पूर्ण होंगे। आत्मविश्वास से कार्य करेंगे। यात्रा में लाभ की स्थिति है। शत्रुओं से सावधान रहें। आमदनी से अधिक खर्च रहेगा। वैवाहिक जीवन सुखप्रद रहेगा। बाहर जाने का प्रोग्राम बन सकता है। विद्यार्थियों की रुचि पढ़ाई में रहेगी। माह के मध्य में प्रयासों से निराशा मिलेगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियां रहेंगी। कोई भी जोखिमपूर्ण कार्य न करें। दूसरों के दुख दर्द में सहयोग करेंगे। व्यापार में नये सम्बन्ध बनेंगे। कोई अप्रिय समाचार मिल सकता है। सट्टेबाजी जैसे कार्यों से दूर रहें। किसी मुकदमेबाजी से दूर रहें। इच्छाओं की पूर्ति हेतु पूरी कोशिश करेंगे। किसी की छोटी बात से वाद-विवाद की स्थिति हो सकती है। इस समय मन किसी भी काम में नहीं लगेगा। आप **मन:शान्ति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 8, 9, 10,18, 19, 25, 26, 27

वृश्चिक - माह की शुरुआत श्रेष्ठकारी रहेगी। विद्यार्थियों की रुचि पढ़ने में रहेगी। मन में शांति रहेगी। धीरे-धीरे कार्य बनेंगे। मित्रों का सहयोग मिलेगा। विदेश जाने का योग है। छोटी-छोटी बातों के विवाद से दूर रहें। महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में आयेंगे। पारिवारिक सुख मिलेगा। यात्रा यादगार होगी। माह के मध्य में थोड़ा सावधानी रखने की जरूरत है। कोई अनहोनी घटना हो सकती है। दिल को ठेस लगेगी। अच्छे परिणाम पाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। काम में विलम्ब होगा। धैर्य रखें। नये उद्यमों में सफलता मिलेगी। अन्तिम सप्ताह अनुकूल नहीं है। किसी से उलझें नहीं, फालतू प्रपंचों से दूर रहें। नौकरी में संयम से बात करें। कोई बीमारी भी परेशान कर सकती है। प्यार में सफलता मिलेगी और कोई महत्वपूर्ण समाचार मिलेगा। आप **गणपति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 10, 11, 12, 19, 20, 21, 28, 29

धनु - सप्ताह के प्रारम्भ में श्रेष्ठ फल की प्राप्ति होगी। कार्य के सिलसिले में की गई यात्रा लाभ देगी। आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। व्यक्तित्व में निखार आयेगा। परिवार से सहयोग मिलेगा। उच्च अधिकारियों से सहयोग नहीं मिलेगा। विवादों से बचें। इष्ट मित्रों का सहयोग मिलेगा। मनोकामनापूर्ण होगी, सम्मान मिलेगा। माह का मध्य शुभ है, मंगल कार्य हेतु यात्रा सम्भव है, तीसरे सप्ताह में लड़ाई-झगड़े एवं अशांति का वातावरण रहेगा। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। कोई बीमारी बढ़ सकती है। उच्च शिक्षा हेतु, विदेश यात्रा के प्रोग्राम की सम्भावना है। आखिरी के सप्ताह में समय पक्ष में न होने से कष्टकारी रहेगा, मित्रों में गलतफहमी हो सकती है। धन हानि एवं शरीर अस्वस्थ रहेगा। सतर्क रहें, आखिरी तारीख पर मन में प्रसन्नता जागेगी। आप **नवग्रह मुद्रिका** धारण करें।

शुभ तिथियाँ - 3, 4, 5, 13, 14, 21, 22, 23, 30, 31

मकर - माह का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। किसी को रुपये उधार न देवे। शत्रु हावी होने की कोशिश करेंगे। मन स्थिर नहीं रहेगा। कलह का वातावरण बन सकता है, किसी साजिश का शिकार हो सकते हैं। कोई

सर्वार्थ सिद्धि योग	-	जनवरी-1, 3, 4, 8, 10, 18, 27
अमृत सिद्धि योग	-	जनवरी-18, 27
रवि योग	-	जनवरी-5, 14, 24, 25, 27, 30, 31
रवि पुष्य योग	-	जनवरी-8 (सूर्यादय से 9 जनवरी 6.05 प्रात: तक)

महत्वपूर्ण समाचार मिलेगा जो मन को संतोष देगा। महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा कर सकेंगे। जिसका भला करेंगे, वही हावी होगा। किसी के कहने में न आयें, स्वयं निर्णय लें। माह के मध्य में कोई अनुबन्ध मिल सकता है। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में स्थिर होगा। बेटी का रिश्ता होने का समय है। खर्च पर नियंत्रण रखें, फिजूल खर्ची न करें। कोई छिपी बात उजागर हो सकती है। दान-पुण्य करेंगे। शत्रु पक्ष से सावधान रहें। प्रेम में धोखा मिल सकता है। आप **भैरव दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 5, 6, 7, 15, 16, 17, 23, 24, 25

कुम्भ - माह का प्रथम सप्ताह अनुकूल रहेगा। नया कारोबार खुल सकता है। ख्वाहिश पूर्ण होगी, फिर भी कोई कार्य सोच-समझकर करें। आर्थिक परेशानियां दूर होंगी। चित्त प्रसन्न रहेगा। शत्रुओं को शांत रखने में सफल होंगे। प्रोपर्टी का सौदा हो सकता है, आपका प्रभाव बढ़ा-चढ़ा रहेगा। माह के मध्य में वाद-विवाद से दूर रहें। शत्रुओं से सावधान रहें। अपनों से अनबन रहेगी। माह के मध्य से समय परिवर्तन होने पर कार्य बनने लगेंगे। कार्य के सिलसिले में यात्रा लाभकारी रहेगी। अचानक कोई टेंशन आ सकती है। किसी अपने का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। सरकारी कर्मचरियों को प्रमोशन होने का अवसर है। आखिरी तारीख में किसी और की गलतियां, आप पर थोपी जा सकती है। अपनों से भी सावधान रहें। आप **पूर्णत्व दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 8, 9, 10, 18, 19, 25, 26, 27

मीन - माह का प्रारम्भ मध्यम फलदायी है। आर्थिक पक्ष अच्छा रहेगा। विद्यार्थियों के लिए अच्छा समय है। आप मेहनत से लक्ष्य की ओर बढ़ेंगे। पुराना विवाद निपटेगा। आप किसी अन्य के लिए परेशान रहेंगे। अपने व्यवहार में सरलता लायें। मन चाहे काम बनेंगे स्थिति में सुधार होगा। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। माह के मध्य में अचानक किसी बात पर टेंशन हो सकती है। अनजाने में कोई गलत कार्य हो जाने से बदनामी भी हो सकती है। शत्रुओं से विशेष सावधान रहने की आवश्यकता है। तीसरे सप्ताह में स्वास्थ्य पर ध्यान दें, अनर्गल कार्यों में समय न बितायें। सरकार की ओर से विदेश यात्रा का योग है। काम में शत्रु रोड़ा अटकायेंगे। कोर्ट-कचहरी के कार्यों में जीत मिलेगी। आप स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखें। इस माह **कायाकल्प दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 10, 11, 12, 19, 20, 21, 28, 29

इस मास व्रत, पर्व एवं त्यौहार

02.01.23	सोमवार	पुत्रदा एकादशी
06.01.23	शुक्रवार	शाकम्भरी जयंती
10.01.23	मंगलवार	माघी संकष्टी चतुर्थी
14.01.23	शनिवार	मकर संक्रांति (सूर्य मकर में रात्रि 8.44 से)
15.01.23	रविवार	मकर संक्रांति (पुण्य काल)
18.01.23	बुधवार	षट्तिला एकादशी
21.01.23	शनिवार	मौनी अमावस्या
22.01.23	रविवार	गुप्त नवरात्रि प्रारम्भ
24.01.23	मंगलवार	गौरी तृतीया
26.01.23	गुरुवार	बसंत पंचमी/सरस्वती साधना

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (जनवरी-1)	दिन 07.36 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 04.30 तक रात 07.36 से 09.12 तक 11.36 से 02.00 तक
सोमवार (जनवरी-2)	दिन 06.00 से 07.30 तक 09.00 से 10.48 तक 01.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
मंगलवार (जनवरी-3)	दिन 06.00 से 07.36 तक 10.00 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
बुधवार (जनवरी-4)	दिन 06.48 से 11.36 तक रात 06.48 से 10.48 तक 02.00 से 04.24 तक
गुरूवार (जनवरी-5)	दिन 06.00 से 06.48 तक 10.48 से 12.24 तक 03.00 से 06.00 तक रात 10.00 से 12.24 तक
शुक्रवार (जनवरी-6)	दिन 09.12 से 10.30 तक 12.00 से 12.24 तक 02.00 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 01.12 से 02.00 तक

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (जनवरी-8, 15, 22, 29)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (जनवरी-9, 16, 23, 30)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (जनवरी-10, 17, 24, 31)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (जनवरी-11, 18, 25)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरूवार (जनवरी-12, 19, 26)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (जनवरी-13, 20, 27)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (जनवरी-7, 14, 21, 28)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

जनवरी-23

11. आज माता महालक्ष्मी का निम्न मंत्र 11 बार जप करके जाएं- ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै नमः।।
12. प्रातः स्नान करके केले या पीपल के वृक्ष में एक लोटा जल दें।
13. किसी देवी मन्दिर में तीन बत्ती का दीपक जलायें।
14. आज तिल, चावल, घी आदि कुछ दक्षिणा के साथ दान करें।
15. प्रातः भगवान सूर्य को अर्घ्य दें और रोग रहित जीवन की कामना करें।
16. भगवान शिव के मन्दिर में सफेद पुष्प चढ़ायें।
17. प्रातः हनुमान चालीसा का एक पाठ करके जाएं।
18. आज ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र का 108 बार जप करके ही जाएं।
19. घर से जाते वक्त थोड़ा दही का सेवन करके जाएं।
20. सिद्धि गुटिका (न्यौछा. 150-) अपनी जेब में रखकर जाएं, कार्यों में सफलता मिलेगी।
21. सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर निखिल स्तवन के 1-21 श्लोक पाठ करें।
22. आज से गुप्त नवरात्रि प्रारम्भ है, दुर्गा मन्दिर में लाल पुष्प चढ़ाएं।
23. 108 बार ॐ नमः शिवाय मंत्र का जप करें।
24. आज माँ गौरी के मन्दिर में खीर का भोग लगाएं।
25. आज घर पर दूध का बना प्रसाद का भोग पूजन के समय लगाकर प्रसाद बांटें।
26. आज बसंत पंचमी है, माँ सरस्वती की साधना करें।
27. तुलसी के पेड़ में जल अर्पण करें।
28. आज रथ सप्तमी है, भगवान सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें।
29. गायत्री मंत्र का 1 माला जप करें।
30. आज प्रातः पूजन के बाद अग्नि में 21 आहुति ॐ दुं दुर्गाय नमः से दें।
31. हनुमान बाहु (न्यौ. 120/-) धारण करें, बाधाएं समाप्त होगी।

फरवरी-23

1. प्रातः मंत्र जप के बाद 1 माला ॐ नमो भगवते वासुदेवाय की करें।
2. गुरु गुटिका (न्यौ. 150/-) धारण करें, साधना में सफलता मिलेगी।
3. आज भोजन करने के पूर्व गाय को रोटी खिलायें।
4. शनि मुद्रिका (न्यौ. 150/-) धारण करें, बाधाएं समाप्त होंगी।
5. आज माघ पूर्णिमा पर तिल, गुड, चावल, घी, फल आदि का दान करें।
6. आज अपने वस्त्रों में सफेद रंग को प्राथमिकता दें।
7. हनुमान मन्दिर में बेसन के लड्डू का भोग लगाकर, बच्चों में बांटें।
8. माँ लक्ष्मी के समक्ष घी का दीपक जलायें।
9. प्रातः पूजन के समय एक सुपारी स्थापित कर उसका गणपति के रूप में पूजन करें एवं ॐ गं गणपतये नमः का 1 माला जप करके जाएं, बाधाएं समाप्त होंगी।
10. प्रातःकालीन वेदध्वनि सी.डी. का श्रवण करें।

क्या आपके घर पर तान्त्रोक्त प्रभाव है ?

दोष है

- क्या आपके घर में सुख शान्ति नहीं है?
- क्या घर में हर समय कलह रहता है?
- क्या पैसे का अभाव हर समय बना रहता है?
- क्या आय से अधिक व्यय होता रहता है?

तो निश्चय ही कुछ विशेष बात अवश्य है, इसका निराकरण तो आवश्यक ही है,
'वास्तु देव' की स्थापना, पूर्ण पूजा, नवग्रह स्थापना आवश्यक है,
इसी महत्वपूर्ण विषय का सम्पूर्ण विवेचन

परिश्रम तो अपनी बुद्धि, बल, ज्ञान, शक्ति और सामर्थ्य से हर कोई करने का प्रयास करता है,
लेकिन फल कितनों को पूर्ण रूप से प्राप्त होता है, ऐसा निश्चित नहीं है,
समाज का अंग होते हुए भी प्रत्येक व्यक्ति की एक अपनी अलग दुनिया होती है–
जिसे उसका घर कहा जाता है, उसमें हर वस्तु, हर व्यक्ति, उससे ही जुड़ा होता है।
अर्थात् उसकी पत्नी, उसकी संतान, उसके माता-पिता, उसके बहन-भाई,
उसकी वस्तुएं, उसका कमरा इत्यादि इत्यादि।

इस घर नामक स्थान के लिए ही तो व्यक्ति इतनी अधिक भाग-दौड़ करता है,
यदि यह घर नहीं हो तो व्यक्ति में कार्य करने की भावना ही नहीं आ सकती है
घर ही ऐसा स्थान है जो व्यक्ति को कार्य करने की प्रेरणा देता है,
उसे संग्रह करने की प्रेरणा देता है, उसके हर प्रयत्न में यह इच्छा रहती है, कि
उसका घर अर्थात् केवल पत्थरों का बना मकान ही नहीं अपितु जहाँ उसका
अपना सब कुछ हो, उसमें सम्पूर्णता हो, उसे सुख और शान्ति प्राप्त हो।

मैंने अपने जीवन में हजारों लोगों से मिलते हुए उनकी भावनाएं, इचछाएं, उनकी कार्य-पद्धति को जाना है,
उनमें से ज्यादातर अपनी घरेलू समस्याओं से ही ग्रस्त नजर आये, किसी को घर में शान्ति नहीं मिलती,
कोई पारिवारिक कलह से दुखी है, तो कोई अपनी पत्नी के कारण दुखी है,
तो कोई अपने बच्चों के आज्ञाकारी न होने के कारण और कोई घर में
लक्ष्मी अर्थात् पैसे न होने के कारण दुखी है अर्थात् केन्द्र बिन्दु तो घर ही है,
जिसके लिए वह भाग-दौड़ करता है, यदि कोई संन्यास धारण कर ले, अपने घर को छोड़ दे,
घर के प्राणियों से सम्पर्क त्याग दे तो उसके लिए सुख और दुःख एक समान हो
जाते हैं, लेकिन क्या ऐसा सम्भव है? कदापि नहीं।

जीवन का यह चक्र तो चलाना ही पड़ेगा, लाखों में से एक दो ही इस चक्र से अलग होकर एक अद्वितीय व्यक्ति बन सकते हैं लेकिन उन्होंने भी किसी न किसी घर से ही जन्म लिया होता है और उनकी यश वृद्धि से उनके घर की वृद्धि होती है।

व्यक्ति जब घर से दुखी हो जाता है तभी तो वह बाहर सुखों की तलाश में भटकता है, लेकिन क्या घर से बाहर सुख मिल सकता है? जब व्यक्ति अपने घर को अपने अनुकूल बनाकर सुख प्राप्त नहीं कर सकता है तो वह बाहर कैसे सुख प्राप्त करेगा, आखिर तो उसे लौट कर घर को आना ही पड़ता है।

घर कैसा हो

घर ही एक ऐसा स्थान है, जहां सुख प्राप्त हो सकता है, यदि आपका कोई विरोधी है, तो यह आवश्यक नहीं कि वह शारीरिक वार ही आप पर करे, तन्त्र ग्रन्थों में ऐसे हजारों उल्लेख, साधनाएं एवं प्रयोग दिये गये हैं कि यदि किसी व्यक्ति का सम्पूर्ण विनाश करना हो तो उसके घर की शान्ति भंग कर दो, उसके घर पर ऐसे गणों का, शक्तियों का प्रहार कर दो कि उसे अपने घर में किसी प्रकार की शान्ति प्राप्त न हो, कलह का वातावरण मिले, भाई-भाई में द्वेष रहे, पति-पत्नी विपरीत विचारों के हों, बालक योग्य न हो जाये, घर में हर समय अभाव बना रहे।

ऐसे स्थान पर रह कर कोई भी व्यक्ति चाहे वह बल, बुद्धि, चातुर्य से कितना ही परिपूर्ण हो, उन्नति नहीं कर सकता, वह कमाता है और सौ खर्चे उत्पन्न हो जाते हैं, अतः हर व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि उसका घर श्रेष्ठ हो, घर ऐसे स्वर्ग के समान हो जहाँ प्रसन्नता हो, प्रेम हो, स्नेह हो, शान्ति हो, लक्ष्मी का स्थायी वास हो, देवी-देवताओं का पूजन होता हो, अतिथि आ कर प्रसन्नता अनुभव करें, लक्ष्मी की निरन्तर बढ़ोतरी हो, श्रेष्ठ कार्य घर में सम्पन्न होते रहें, ऐसे ही घर तो स्वर्ग के समान हैं।

पर ऐसा होता क्यों नही

हर घर में आदर्श स्थिति नहीं हो सकती, लेकिन एक संतुलन तो बना ही रह सकता है, घर में यदि दरिद्रता, दुःख है तो धीरे-धीरे कम होने चाहिए, यदि ऐसा नहीं होता तो कहीं न कहीं कुछ कमी अवश्य है, ऐसा इसलिए होता है कि उस घर में कुछ ऐसे विपरीत ग्रहों का प्रभाव है, कुछ ऐसी आसुरी शक्तियों का प्रभाव है, जो घर की श्री वृद्धि का निरन्तर भक्षण करती रहती हैं, कुछ ऐसे तांत्रिक प्रभाव हैं, जो हर समय पीड़ा, व्याधि पहुंचाते रहते

घर पर किस प्रकार के ग्रहों का प्रभाव है, खराब ग्रहों, प्रेत-प्रभाव, दुष्ट आत्माओं के निवास से घर में अशान्ति, दरिद्रता ही रहती है, आप जो निरन्तर साधना करते रहते हैं, गुरुभक्ति करते हैं, उससे उनका प्रभाव क्षीण अवश्य हो जाता है,

हैं।

इसके निवारण के बिना उस घर की, उस परिवार की, उस वंश की सम्पूर्ण उन्नति सम्भव ही नहीं है, जो अपना घर नहीं सुधार सकता वह दूसरों का घर क्या सुधारेगा।

वायुमण्डल का प्रभाव

हर बात तर्क की कसौटी पर नहीं परखी जा सकती, कुछ बातें केवल अनुभव के द्वारा ही जानी जा सकती है, कुछ स्थानों पर व्यक्ति को विशेष मानसिक शान्ति प्राप्त होती है, और कुछ स्थानों पर एक भय लगता है, श्मशान में हर व्यक्ति जा कर नहीं बैठ सकता–क्यों? वहां प्रेत, वैताल, गण इत्यादि विचरण करते हैं और वे अपना दुष्प्रभाव डाल सकते हैं, जब कि मन्दिर में व्यक्ति अकेला ही सारी रात बैठ कर ध्यान कर सकता है, यही तो स्थान-स्थान का अन्तर है।

क्या आपने कभी विचार किया है कि आपका घर दूषित है या नहीं? आपके घर पर किस प्रकार के ग्रहों का प्रभाव है, खराब ग्रहों, प्रेत-प्रभाव, दुष्ट आत्माओं के निवास से घर में अशान्ति, दरिद्रता ही रहती है, आप जो निरन्तर साधना करते रहते हैं, गुरुभक्ति करते हैं, उससे उनका प्रभाव क्षीण अवश्य हो जाता है, लेकिन जब तक घर का ही पूर्ण रूप से शुद्धिकरण न हो, श्रेष्ठ देवताओं का निवास न हो, तब तक कुछ भी उत्तम नहीं हो सकता।

वास्तु देवता की स्थापना

हर श्रेष्ठ कार्य को करने से पहले हम पूजन इत्यादि सम्पन्न करते हैं, इसी तरह सबसे आवश्यक है, कि जिस घर में रह रहे हैं, उसमें वास्तु देवता की स्थापना अवश्य करें, वास्तु देवता के सम्बन्ध में शास्त्रों में जो पौराणिक कथा मिलती है, उसके अनुसार भगवान शिव के पसीने से एक भयंकर आकृति वाला पुरुष उत्पन्न हुआ और उसने संहार करना प्रारम्भ किया, तब भगवान शंकर ने उसे शान्त कर उसके विशाल शरीर में सभी देवताओं का वास स्थिर कर दिया और यह वरदान दिया कि तुम मेरे शक्ति स्वरूप हो और हर घर में, हर मन्दिर में, हर भवन में, हर यज्ञ में, निर्माण और प्रवेश के समय तुम्हारा पूजन होगा, तुम जहां निवास करोगे वहां तुम्हारे साथ सभी 45 देवता भी निवास करेंगे।

यह एक पौराणिक कथा है, लेकिन इसके वास्तविक महत्व को समझना आवश्यक है, वास्तु देवता की स्थापना और पूजन के द्वारा हम अपने घर में उन शक्तियों का आह्वान कर रहे हैं, जो कि घर की रक्षा के साथ-साथ घर की उन्नति, शान्ति के लिए आवश्यक हैं, इन विशिष्ट सिद्ध देवताओं के प्रभाव से किसी भी प्रकार का तांत्रिक-प्रभाव, शत्रुओं द्वारा किये जाने पर निष्फल हो रहता है।

वास्तु मण्डल देवता

वास्तु मण्डल के विधान के अनुसार इसमें मुख्य रूप से 45 देवता स्थित हैं, जो निम्नलिखित हैं–

1. शिखी, 2. पर्जन्य, 3. जयन्त, 4. कुलिशायुध, 5. सूर्य, 6. सत्यल, 7. भृश, 8. आकाश, 9. वायु, 10. पूषा, 11. वितथ, 12. गृहक्षत, 13. यम, 14. गन्धर्व, 15. भृंगराज, 16. मृग, 17. पितृ, 18. दौवारिक, 19. सुग्रीव, 20. पुष्पदन्त, 21. वरुण, 22. असुर, 23. शेष, 24. पापहर, 25. रोगहर 26. अहि, 27. मुख्य, 28. भल्लाट, 29. सोम, 30. सर्प, 31. अदिति, 32. दिति, 33. अप्, 34. अपवत्स, 35. अर्यमा, 36. सावित्र, 37. सविता, 38. विवश्वान्, 39. विबुधाधिप, 40. जयन्त, 41. मित्र, 42. राजयक्ष्मा, 43. रुद्र, 44. पृथ्वीधर तथा 45. ब्रह्मा।

वास्तु देव पूजा मुहूर्त

वास्तु देवता की पूजा किसी भी शुभ दिन प्रारम्भ की जा सकती है, यदि कोई श्रेष्ठ मुहूर्त हो तो उस दिन पूजन का महत्व विशेष रूप से बढ़ जाता है।

आने वाले समय में मकर संक्राति, बसंत पंचमी, माघ पूर्णिमाआदि कई श्रेष्ठ मुहूर्त आ रहे हैं। इन दिनों में या अन्य किसी श्रेष्ठ मुहूर्त में साधक वास्तुदेव स्थापना एवं पूजन कर सकते हैं, ये सभी श्रेष्ठ मुहूर्त हैं।

भगवान शिव के पसीने से एक भयंकर आकृति वाला पुरुष उत्पन्न हुआ और उसने संहार करना प्रारम्भ किया, तब भगवान शंकर ने उसे शान्त कर उसके विशाल शरीर में सभी देवताओं का वास स्थिर कर दिया और यह वरदान दिया कि तुम मेरे शक्ति स्वरूप हो और हर घर में, हर मन्दिर में, हर भवन में, हर यज्ञ में, निर्माण और प्रवेश के समय तुम्हारा पूजन होगा, तुम जहां निवास करोगे वहां तुम्हारे साथ सभी 45 देवता भी निवास करेंगे।

वास्तु देवता की स्थापना और पूजन के द्वारा हम अपने घर में उन शक्तियों का आह्वान कर रहे हैं, जो कि घर की रक्षा के साथ-साथ घर की उन्नति, शान्ति के लिए आवश्यक हैं, इन विशिष्ट सिद्ध देवताओं के प्रभाव से किसी भी प्रकार का तांत्रिक-प्रभाव, शत्रुओं द्वारा किये जाने पर निष्फल हो रहता है।

वास्तु देव सम्पूर्ण पूजा विधान

पूजन के दिन प्रातः सूर्योदय से पूर्व ही उठ कर पूरा घर साफ कर धो देना चाहिए, घर की सफाई शुद्ध रूप से की हुई होनी चाहिए, जिस घर में अशुद्धि, कचरा, मकड़ी के जाले इत्यादि होते हैं वहाँ कभी भी लक्ष्मी का वास नहीं हो सकता, अपने घर में पूजा स्थान पर अथवा बीच आँगन में यह पूजा सम्पन्न कर सकते हैं।

इस पूजा में मुख्य रूप से मन्त्र सिद्ध 'वास्तुदेव यंत्र' 'वास्तुदेव गुटिका' तथा '64 वास्तु चक्र' आवश्यक है।

अपने सामने एक बड़े श्वेत वस्त्र पर वास्तु मण्डल चक्र बनाएं, इस चक्र में 64 चौकोर खाने चावलों से बनाते हुए प्रत्येक खाने में एक-एक वास्तु चक्र तथा बीचोबीच वास्तु यन्त्र तथा वास्तुदेव गुटिका स्थापित करें, इसके साथ एक कलश में शुद्ध जल भर कर ऊपर नारियल रखें और इस जल कलश को वास्तु यन्त्र के सामने उसी खाने में स्थापित करें, वास्तु चक्र के बाहर पूर्व तथा पश्चिम दिशा में नौ-नौ रेखाएं खींचे, और उत्तर-दक्षिण दिशा में भी नौ-नौ रेखाएं खींचे तथा साधक का मुँह पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए, ये नौ-नौ रेखाएं 'रेखा देवियां' हैं पूर्व तथा पश्चिम की देवियों के नाम निम्न प्रकार से हैं–

1. लक्ष्मी, 2. यशोवती, 3. कान्ता, 4. सुप्रिया, 5. विमला, 6. श्री सुभगा, 7. सुमति 8. श्री, 9. इड़ा।

उत्तर तथा दक्षिण दिशा की देवियां निम्न हैं–

1. धन्या, 2. प्राणा, 3. विशाला, 4. स्थिरा, 5. भद्रा, 6. स्वाहा, 7. नया, 8. निशा तथा 9. विरजा।

सर्वप्रथम वास्तुदेव का आवाह्न करें।

ध्यान मन्त्र

वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान् त्स्वावेशो अनमीवो भवानः।
यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्वि पदे शं चतुष्पदे।।

वास्तु देवता पर सिन्दूर, पुष्पमाला तथा जल अर्पित करें और अपने घर में स्थायी रूप से निवास करने का आह्वान करें।

इसके पश्चात् 'रेखा देवियों' का पूजन करते हुए प्रत्येक रेखा देवी एवं वास्तु चक्र पर चावल और कुंकुम चढ़ाएं तथा नमस्कार करें–

सर्वप्रथम पूर्व तथा पश्चिम दिशा में स्थापित देवियों का पूजन करें–

ॐ लक्ष्मी नमः, ॐ यशोवती नमः, ॐ कान्ता नमः,
ॐ सुप्रिया नमः, ॐ विमला नमः, ॐ श्री सुभगा नमः, ॐ सुमति नमः, ॐ श्री नमः, ॐ इड़ा नमः।

इसके बाद उत्तर तथा दक्षिण दिशा में स्थापित रेखा देवियों का पूजन सम्पन्न करें–

ॐ धान्या नमः, ॐ प्राणा नमः, ॐ विशाला नमः,
ॐ स्थिरा नमः, ॐ भद्रा नमः, ॐ स्वाहा नमः,
ॐ नया नमः, ॐ निशा नमः, ॐ विरजा नमः।

प्रत्येक बार बीच में स्थित जल भरे कलश से एक पीपल के पत्ते से जल लेते हुए प्रत्येक देवी पर जल छिड़कें।

इसके पश्चात् वास्तु चक्र में स्थित 45 देवताओं का पूजन करें, इनका पूजन भी ऊपर दी गई विधि के अनुसार ही सम्पन्न किया जायेगा, जब सभी 45 देवताओं का पूजन सम्पन्न हो जाय तो अपने हाथ में चावल लेकर उसमें थोड़ा सिन्दूर मिला कर चारों दिशाओं में तथा आकाश की ओर दाएं हाथ से वास्तु देव का ध्यान करते हुए फेंकें, पूजन के समय वास्तु देवता के समक्ष गुड़ इत्यादि प्रसाद अवश्य रखना चाहिए, इसके पश्चात् सफेद हकीक माला से वास्तु देवता का 11 माला मन्त्र जप अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

वास्तु देवता मन्त्र

ॐ नमो नारायणाय वास्तु रूपाय भूर्भूवस्व पतये भूपतित्व मे देहि ददापय स्वाहा।।

64 वास्तु चक्रों के पूजन के पश्चात् दूसरे दिन सारी सामग्री जल धारा में समर्पित कर दें।

इस दिन पूजन के पश्चात् ब्राह्मण भोजन करा कर स्वयं सायंकाल भोजन करना चाहिए, सम्पूर्ण पूजन के समय मन में प्रसन्नता, कर्त्तव्य भावना, श्रद्धा अवश्य होनी चाहिए, श्रद्धा के बिना साधना में सफलता प्राप्त नहीं होती है।

इस साधना के बारे में, इस पूजन के बारे में इतना ही लिखना काफी है कि यदि घर पर किसी भी प्रकार का तांत्रिक प्रभाव किया हो, अथवा घर में निरन्तर बीमारी, अशान्ति, बाधा, अभाव रहता हो-तो वास्तु देवता स्थापना पूजा से सम्पूर्ण शान्ति एवं सिद्धि प्राप्त होती है।

साधना सामग्री 800/-

21.01.2023 - शनैश्चरी अमावस्या
या किसी भी अमावस्या को

साबर साधना

तंत्र का अद्भुत उपहार है यह प्रयोग

सर्वोन्नतिदायक

नखनिया प्रयोग

साबर साधनाओं में तंत्र का स्थान रखने वाला यह प्रयोग मेरे जीवन का भाग्योदय-दीप बनकर मुझे प्राप्त हुआ, तभी तो मेरी पीढ़ी दर पीढ़ी की दरिद्रता समाप्त हुई और प्राप्त हुई पूर्ण सम्पन्नता। मेरा अनुभव सिद्ध यह प्रयोग प्रस्तुत है आप सभी के लिए.....

परम्पराएँ, साधनाएँ, विश्वास किस प्रकार से एक स्थान पर उत्पन्न होकर दूसरे स्थान पर पुष्पित एवं पल्लवित होते हैं, इसका एक रोचक उदाहरण मुझे अपने जीवन में देखने को मिला।

कुछ वर्ष पूर्व की घटना है, जब मैं घोर अर्थाभाव से पीड़ित था और एक प्रकार से जैसे भाग्य ही विपरीत हो गया था, क्योंकि किसी भी नये काम को प्रारम्भ करते ही कुछ ऐसी अड़चनें आ जातीं, कि वह कार्य बीच में ही रोक देना पड़ता। मेरा पैतृक व्यवसाय चौपट हो ही चुका था, साथ ही जमा पूंजी भी लगभग चुक गयी थी। ऊहापोह के इन्हीं दिनों में मेरे एक पूर्व परिचित एवं सजातीय बंधु की ओर से मुझे निमंत्रण मिला, कि वे अपने बढ़ते कार्यभार को संभालने के लिये मुझे अपने पास बुलाने को आतुर हैं।

संभवतः उन्हें किसी प्रकार से मेरी व्यापारिक स्थिति का पता लग गया था और उन्होंने एक सभ्य ढंग से मुझे वास्तव में नौकरी ही देने का प्रयास किया था। मुझे स्वीकार करने की बाध्यता थी, क्योंकि लेनदारों और साथी व्यापारियों से मैं भी छुटकारा पाना चाहता था। मैंने अपने परिवार को तो घर पर ही छोड़ दिया तथा स्वयं अपने उन सजातीय बन्धु के यहाँ पटना चला गया।

पटना पहुँच कर मैंने पाया, कि मेरे अनुमान से कहीं अधिक प्रतिष्ठित एवं सम्पन्न व्यक्तित्व बन गए थे। तीन पुश्त पहले उनके पितामह एवं मेरे पितामह ने एक ही तरह का व्यापार साथ-साथ प्रारम्भ किया था। वे एक पीढ़ी बीतते-बीतते गृह नगर छोड़ पटना जाकर बस गए थे और वर्तमान पीढ़ी को मैं स्वयं ही देख रहा था; इन्हीं साठ-सत्तर वर्षों में वे अपना व्यवसाय केवल पटना ही नहीं वरन् कलकत्ता, गुवाहाटी एवं कुछ अन्य पूर्वोत्तर राज्य के नगरों में फैला चुके थे। दो चाय बागान भी उनके हो गए थे, अचल सम्पत्ति के रूप में वे देश के अन्य बड़े नगरों में अपनी सम्पत्ति का विस्तार कर चुके थे

शेयर मार्केट में उनका जितना धन लगा था, उसका तो कोई अनुमान ही नहीं। ऊपर से सरल, शांत दिखते हुए भी मेरे वे सजातीय बन्धु एक बहुत बड़ी शख्सियत बन चुके थे; वे अपना अधिकांश समय समाज सेवा की विभिन्न गतिविधियों, विभिन्न ट्रस्टों के पदाधिकारी एवं चेयरमैन के रूप में कार्य करते हुए व्यतीत करते थे।

मुझे उन्होंने अपने कलकत्ता केंद्र का भार सौंपने के लिए बुलाया था और इसी

देख-रेख के सिलसिले में मैं उनके पास प्रतिमाह पटना आता-जाता रहता था। पूर्व पारिवारिक सम्बन्ध होने के कारण शीघ्र ही मैं उनके परिवार का एक सदस्य ही बन गया और विभिन्न पर्व व उत्सवों के समय मुझे उन्हीं के पास पटना आ जाना पड़ता था। मेरी आर्थिक स्थिति में सुधार भी हो गया। मैंने एक बात अनुभव की, कि यद्यपि मेरे बन्धु अत्यंत उदार प्रकृति के सच्चरित्र व्यक्ति थे और विभिन्न मंदिरों आदि में मुक्तहस्त से दान आदि भी देते रहते थे; धार्मिक उत्सवों में बढ़-चढ़ कर भाग भी लेते थे, किंतु व्यक्तिगत जीवन में उनकी पूजा-पाठ में कोई विशेष रुचि नहीं थी। उनके परिवार के अन्य सदस्य भी इस बात से कुछ आश्चर्यचकित रहा करते थे।

वे पूरे वर्ष में केवल एक बार एक विशेष रात्रि अपने पारिवारिक पूजा स्थान में जाते थे और सबको बाहर निकालकर, कपाट बंद कर, फिर प्रातः ही निकलते थे। वे क्या करते थे—इसका रहस्य उनके सबसे बड़े पुत्र तक को भी ज्ञात नहीं था, न ही उनकी धर्मपत्नी को। अत्यंत गम्भीर प्रकृति का होने के कारण किसी का साहस नहीं होता था, कि उनसे इस विषय में कुछ पूछ सके।

समय बीतता गया और मैंने अपना परिवार भी अपने गृह स्थान से अपने पास बुला लिया और अपने इन्हीं बन्धु के आग्रह के कारण उसे पटना में ही रखा, अपने पास कलकत्ता में नहीं। शनैः-शनैः उनका परिवार और मेरा परिवार पुनः उसी प्रकार रहने लगा, जैसे सम्भवतः तीन पीढ़ी पहले रहता रहा होगा। उन्होंने मुझे अलग व्यापार आरम्भ करने की भी अनुमति नहीं दी, अपितु अपने ही व्यापार का और भी भार मुझ पर सौंप दिया तथा स्वयं सामाजिक कार्यों में व्यस्त से व्यस्ततम होते चले गए। कदाचित उनका लक्ष्य राजनैतिक रूप से उन्नति करने का बन गया था और फिर उन्होंने मुझे यह भी आज्ञा दे दी, कि मैं आवश्यकता पड़ने पर उनकी धर्मपत्नी से तिजोरी की चाभी लेकर आवश्यक लेन-देन भी कर लिया करूँ; अब उनका अधिकांश समय दिल्ली में ही व्यतीत होने लग गया था।

ऐसे ही किसी अवसर की बात है, कि मैंने उनकी तिजोरी को उनकी धर्मपत्नी से चाभी लेकर खोला, तो पाया कि सामने की ओर एक स्वर्ण पट्टिका पर कुछ बीजाक्षर उत्कीर्ण हैं और उसका विधिवत् पूजन भी किया गया है। मैंने अपने व्यापारिक जीवन में अनेक प्रकार के शुभ चिह्नों का स्थापन तो व्यापारी वर्ग के मध्य देखा था, किंतु वह स्वर्ण पट्टिका उन सभी से नितांत भिन्न थी।

बात आयी-गयी हो गयी और मैं भी अन्य गतिविधियों में व्यस्त होता चला गया। यद्यपि व्यापार के सम्बन्ध में दूसरे नगरों में जाने पर भी उस प्रकार का अंकन दूसरे व्यापारी बंधुओं के प्रतिष्ठान में पूजा स्थान पर ढूंढता रहता था।

मैं एक बार किसी आवश्यक कार्यवश अपने इन्हीं सजातीय बंधु के साथ गुवाहाटी केंद्र पर गया तो वहाँ के व्यवस्थापक ने मुझे आग्रह करके रोक लिया और कामाख्या देवी के दर्शन करके ही वापिस जाने का अनुरोध किया। दूसरे दिन जब मैं दर्शन करके वापिस जाने का उपक्रम कर ही रहा था, कि उनके परिचित एक तांत्रिक और एक प्रकार से उनके पारिवारिक गुरु का उनके गृहस्थान पर आगमन हुआ। स्वागत-सत्कार के बाद व्यक्तिगत समस्याओं आदि

कागज पर अंकित यंत्र को देखकर तांत्रिक महोदय अनायास ही बोल पड़े– कदाचित् तुम्हें मालूम नहीं, कि तुमने किस अमूल्य सम्पदा की प्राप्ति कर ली, इस यंत्र का पूजन करने वाले व्यक्ति के जीवन में बिना किसी विशेष प्रयास के धन का अजस्र प्रवाह बना रहता है।

की चर्चा चल पड़ी। मुझे इसमें कोई रुचि नहीं थी, क्योंकि मेरा सहज झुकाव मात्र पारम्परिक पूजा पद्धति में ही था, किसी अन्य पद्धति अथवा तंत्र-मंत्र में नहीं।

वे तांत्रिक महोदय इस बात को ताड़ गए और उन्होंने मुझसे भी स्वत: ही चर्चा प्रारम्भ कर दी। मैंने कुछ उपहास उड़ाते हुए उनसे पूछ लिया, कि क्या वे किसी ऐसे अंकन को जानते हैं, जिसे मैंने अपने उन्हीं सजातीय बंधु की तिजोरी में देखा था।

मेरा यह पूछना था, कि उनके चेहरे का रंग ही बदल गया और उन्होंने अन्य सभी को बाहर जाने की आज्ञा देकर, मुझसे इस विषय में विस्तारपूर्वक जानना चाहा।

चूंकि मैंने तो केवल यों ही एक बात कह दी थी और मुझे वह उत्कीर्णन या अंकन स्पष्ट रूप से याद भी नहीं था, अत: मैं स्मृति के बल पर अस्पष्ट रूप से ही उन्हें कुछ बता सका।

उत्तर में उन तांत्रिक महोदय ने मुझे बताया, कि यदि मैं वह उत्कीर्णन उन्हें स्पष्ट रूप से बता सकूँ, तो वे भी मुझे एक अत्यन्त दुर्लभ रहस्य बतायेंगे, जिसके फलस्वरूप फिर मुझे किसी की नौकरी करने की आवश्यकता नहीं रह जायेगी।

यह सुनकर मेरी दबी भावनाएं जाग्रत हो उठीं, क्योंकि भले ही सब कुछ हों, धन-धान्य ही पूर्णता हो, किंतु स्वयं को किसी का अधिनस्थ बनाने में मुझे एक प्रकार की ग्लानि का अनुभव तो होता ही रहता था। मैंने उनकी बात स्वीकार कर ली तथा उनका पता लेकर अगली बार मिलने का दिन भी निर्धारित कर लिया।

मैंने पटना जाने पर प्रयास कर इस विषय में अपने उन्हीं बन्धु से आज्ञा भी ले ली, कि मैं उनकी तिजोरी में बने उस यंत्र की अनुकृति ले लूँ। शायद ईश्वर मुझ पर दयालु थे, अत: उन्होंने मुझे यह अनुमति पता नहीं किस प्रेरणा के वशीभूत होकर दे भी दी। सम्भवत: उन्होंने सोचा होगा, कि मैं इसकी नकल उतार भी लेता हूँ, तो उनकी क्या हानि होगी। मैं यह नकल बिना उनकी अनुमति के भी उतार सकता था, किंतु मेरा साहस न हुआ और मेरी इस याचना से उनका विश्वास मेरे ऊपर बढ़ ही गया। शायद इसी भावना से उन्होंने मुझे आज्ञा दे

डॉ. श्रीमालीजी के विशेष प्रयास स्वरूप मुझे इस साधना की दुर्लभ सामग्री तो उपलब्ध हो ही सकी, साथ ही अब मैं प्रतिवर्ष कम-से-कम दीपावली के अवसर पर उनके सान्निध्य में रहकर उस साधना को तो सम्पन्न करता रहा। शेष उनके सम्पर्क में रहकर मैंने जो कुछ प्राप्त किया, वह अलग विषय है।

दी हो; कारण कुछ भी रहा हो, मैं उस यंत्र अंकन की प्रति लेकर शीघ्र ही उन तांत्रिक महोदय से मिला, जिनसे मेरी भेंट कुछ दिन पहले हो चुकी थी।

उस अंकन को देखते ही उनका चेहरा खिल उठा और वे एक जीण-शीर्ण भोजपत्र का मिलान, मेरे द्वारा लाये गये अंकन से करने लगे। कुछ क्षण के अध्ययन के उपरांत उन्होंने मुझे मेरे द्वारा लाया गया अंकन तो लौटा ही दिया, साथ ही अत्यंत प्रसन्नता के साथ बोले–'कदाचित् तुम्हें पता नहीं होगा, कि तुमने अनायास किस सम्पदा की प्राप्ति कर ली है।' मैं हतप्रभ होकर उनका मुख देख रहा था। मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था, किंतु उन्होंने कुछ ही वाक्यों में सारा रहस्य प्रकट कर दिया।

उनके अनुसार यह यंत्र तेरहवीं सदी के एक प्रकांड तांत्रिक का रचित है, जिसका जीर्ण-शीर्ण भाग एवं तत्संबंधी मंत्र तो उन्हें भोजपत्र पर अपनी गुरु परम्परा से मिल गया था, किंतु अस्पष्ट होने के कारण वे इसे सम्पन्न नहीं कर पा रहे थे।

उन्हीं तांत्रिक महोदय से मुझे ज्ञात हुआ, कि यह अटूट धन प्राप्ति का एक ऐसा दुर्लभ रहस्य है जिसे उनकी परम्परा में 'नखुनिया प्रयोग' कहा जाता है। जिस किसी के पास इस प्रकार का दुर्लभ प्रयोग रहस्य होता है, उसे धन या किसी भी आवश्यकता के लिए न तो याचना करनी पड़ती है, न ही चिंता; एक प्रकार से उसके सोचे हुए समस्त कार्य स्वत: ही सम्पन्न होते जाते हैं तथा उसके शत्रु और बाधाएं स्वत: ही समाप्त भी होती जाती हैं।

उनकी यह बात सुनकर मेरे सामने अपने उन्हीं सजातीय बन्धु का चित्र खिंच गया। वास्तव में उन्हें न तो किसी बात या आवश्यकता की चिंता करनी पड़ती थी, न ही किसी संकट के समाधान के लिए कभी चिंतित होते ही मैंने देखा था।

अपने वचन के अनुसार उन तांत्रिक महोदय ने मुझे न केवल इस प्रयोग की सारी साधना विधि समझाई वरन आवश्यक उपकरण एवं रहस्यमय मंत्र की भी उपलब्धि करवाई। उन्होंने मुझे इस साधना हेतु दुर्लभ सामग्री 'षोडश पद्म चरण' उपलब्ध करवाई और अपने साहचर्य में ही इस साधना को सम्पन्न करने हेतु अमावस्या की रात्रि में आने को कहा, क्योंकि यह अमावस्या की रात्रि में ही सम्पन्न की जाने वाली साधना है।

अमावस्या की रात्रि में उनके समीप पहुँचने पर उन्होंने मुझे यह साधना सम्पन्न कराई और अगले वर्ष पुन: अपने साहचर्य में ही इसे सम्पन्न करने की आज्ञा दी।

दुर्भाग्यवश उस अमावस्या के दो माह बाद ही उनका देहावसान हो गया और मेरी यह साधना एक प्रकार से अधूरी ही रह गयी।

मुझे इस साधना के मंत्र एवं यंत्र के विषय में तो रहस्य ज्ञात हो चुका था, किंतु इसमें प्रयोग किए जाने वाले आवश्यक षोडश पद्म चरणों के रहस्य, उनकी प्राण-प्रतिष्ठा आदि के विषय में कोई ज्ञान नहीं था, जिनके अभाव में सब कुछ व्यर्थ ही था। मैंने छटपटाहट में कई जगह हाथ-पैर मारे, किंतु एक-से-एक उच्चकोटि के तांत्रिकों ने अपनी असमर्थता प्रकट कर दी।

इन्हीं दिनों मेरा सम्पर्क 'डॉ. नारायणदत्त श्रीमालीजी' से हुआ। मैं प्रारम्भ में यह बताना भूल गया, कि मूलत: मैं भी राजस्थान का ही निवासी हूँ और मेरा जन्म 'कोटा' जिले के एक सुदूर क्षेत्र में हुआ। इस कारणवश अपने गृह स्थान आते-जाते मैं स्थानीय निवासियों से डॉ. श्रीमालीजी के विषय में बहुत कुछ सुन चुका था। मैंने अपने प्रयासों की एक कड़ी के रूप में उनसे भी मिलना उचित समझा और एक उपयुक्त अवसर पर उनसे भेंट भी की।

डॉ. श्रीमालीजी ने मेरे समस्त विवरणों को सुना और मुझे षोडश पद्म चरण की मंत्रसिद्धि, प्राण-प्रतिष्ठा तथा इस साधना विशेष के लिए चैतन्यता के सम्पूर्ण क्रम से परिचय कराया, और मैंने भी इस साधना से सम्बन्धित समस्त रहस्य अर्थात् यंत्र रहस्य एवं दुर्लभ मंत्र उनकी पत्रिका के पन्नों के माध्यम से स्पष्ट करने की उनकी आज्ञा मान ली।

मैं एक प्रकार से ऐसा करने के लिए विवश ही था, साथ ही मैंने अनुभव किया, कि मेरे सामने उपस्थित यह व्यक्तित्व अपने लिए तो कुछ मांग ही नहीं रहा है, अत: मैंने आज्ञा मानने की वचनबद्धता प्रकट की। डॉ. श्रीमालीजी के विशेष प्रयास स्वरूप मुझे इस साधना की दुर्लभ सामग्री तो उपलब्ध हो ही सकी, साथ ही अब मैं प्रतिवर्ष कम-से-कम किसी भी अमावस्या पर या दीपावली के अवसर पर उनके सान्निध्य में रहकर उस साधना को तो सम्पन्न करता रहा। शेष उनके सम्पर्क में रहकर मैंने जो कुछ प्राप्त किया, वह अलग विषय है।

आज मैं उन्हीं के प्रयासों से समाज में उस स्थान पर हूँ, जहाँ मुझे किसी की नौकरी करने की आवश्यकता नहीं रही, अब मैं स्वयं अनेक व्यक्तियों को नौकरी देने में समर्थ हूँ।

साधना विधान

मैं आगे इस महत्त्वपूर्ण साधना के रहस्य को स्पष्ट कर रहा हूँ, जो 21.01.23 (मौनी अमावस्या) को या किसी भी अमावस्या की रात्रि में सम्पन्न की जा सकती है। इस साधना को सम्पन्न करने के लिए साधक को दो महत्त्वपूर्ण साधना सामग्रियों की आवश्यकता पड़ती है—मंत्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त 'षोडश पद्म चरण' एवं 'सफेद हकीक माला'।

साधक अमावस्या की रात्रि में लगभग बारह बजे साधना कक्ष में प्रवेश करे। साधना कक्ष में पूर्ण एकांत का होना आवश्यक है। वह स्वयं पीले वस्त्र धारण करे तथा पीले आसन पर उत्तर मुख बैठ, अपने समक्ष ताम्र के बने पात्र को रख, उस पर कुंकुम से निम्न दुर्लभ यंत्र अंकित करें—
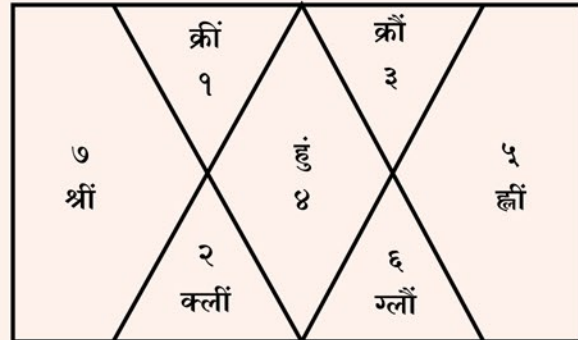
यदि ताम्रपात्र छोटा हो, तो इसे किसी पीले वस्त्र अथवा भोजपत्र पर भी बनाया जा सकता है। भोजपत्र पर बना यंत्र आठ वर्षों तक प्रयुक्त कर सकते हैं, जबकि कपड़े पर बना यंत्र प्रतिवर्ष बनाना पड़ता है। इसके उपरांत षोडश पद्म चरण रखें तथा मंत्र-जप का उच्चारण 'सफेद हकीक माला' के माध्यम से ही करें। षोडश मंत्रोच्चारण के उपरांत शेष मंत्र-जप उसी हकीक की माला से एक माला मंत्र-जप सम्पूर्णहोने तक करें। कहने का तात्पर्य यह है, कि मंत्र-जप की कुल संख्या 108 होनी चाहिए, जो हकीक की माला से ही हो। प्रथम सोलह बार के मंत्रोच्चारण के साथ-साथ एक-एक पद्म चरण भी यंत्र पर अर्पित करते रहना है। इस साधना हेतु दुर्लभ मंत्र इस प्रकार हैं—

मंत्र

।। टिकुली की पवन लहर झकझोर, डाकिनी साकिनी रानी के छोर, नखिनी के लिखली बाड़ै चंदनियां के जोर, गोरख दुआरे रहें, मछिंदर के हुंकारे बोल।।

यह वस्तुत: साबर मंत्र ही है तथा इसी को नाथ जोगी 'नखनिया' या 'नखुनिया' प्रयोग भी कहते हैं। अमावस्या की रात्रि में सम्पन्न किए जाने वाले साबर प्रयोगों में यह विशिष्ट स्थान रखता है। यदि इसे सर्वांगीण उन्नति की साधना कहें, तभी उपयुक्त होगा। साधना के पश्चात् साधक दूसरे दिन प्रात: सभी पद्म चरण एवं हकीक की माला घर से बाहर किसी गुप्त स्थान पर गड्ढा कर मिट्टी में दबा दें। अगले वर्ष यही प्रयोग साधक नयी साधना सामग्रियों के साथ करें और कम-से-कम तीन वर्ष तक अवश्य ही करें। रात्रि में साधना चाहे जब समाप्त हो, यथासम्भव उसके बाद निद्रा न लें। मंत्र-जप के काल में दीपक लगा लेना उचित माना गया है। यह साबर साधनाओं में तंत्र का स्थान रखने वाला प्रयोग है।

साधना सामग्री न्यौछावर- 600/-

भगवान गणपति की पूजा जीवन में मंगलकारी एवं अत्यन्त अनुकूल होती है। जो व्यक्ति किसी अन्य देवी-देवता की पूजा नहीं कर सकता उसे गणेश पूजन अवश्य ही करना चाहिए। मेरा व्यक्तिगत अनुभव यह रहा है कि यदि हम नित्य प्रातः उठते समय गणपति का स्मरण कर लें तो सारा दिन प्रसन्नता से बीतता है और दिन में विशेष फलदायक समाचार मिलते हैं।

सनातन वैदिक हिन्दूधर्म के उपास्य देवताओं में भगवान् श्रीगणेश का असाधारण महत्त्व है। कोई भी धार्मिक या मांगलिक कार्य बिना उनकी पूजा के प्रारम्भ नहीं होता। इतना ही नहीं, किसी भी देवता के पूजन और उत्सव-महोत्सव का प्रारम्भ करते ही महागणपति का स्मरण और उनका पूजन करना अनिवार्य है। इतना महत्व अन्य किसी देवता को नहीं प्राप्त होता।

गणेश शब्द का अर्थ है–गणों का स्वामी।

हमारे शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और चार अन्तःकरण हैं, इनके पीछे जो शक्तियाँ हैं, उन्हीं को चौदह देवता कहते हैं। इन देवताओं के मूल प्रेरक हैं भगवान् श्रीगणेश। वस्तुतः भगवान् गणपति शब्दब्रह्म अर्थात् ओंकार के प्रतीक हैं, इनकी महत्ता का यह मुख्य कारण है।

श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में कहा गया है कि ओंकार का ही व्यक्त स्वरूप गणपति देवता हैं।

इसी कारण सभी प्रकार के मंगल-कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं के आरम्भ में श्री गणपति की पूजा की जाती है जिस प्रकार प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ में ओंकार का उच्चारण आवश्यक है, उसी प्रकार प्रत्येक शुभ अवसर पर भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य है। यह परम्परा शास्त्रीय है। वैदिक धर्मान्तर्गत समस्त उपासना-सम्प्रदायों ने इस प्राचीन परम्परा को स्वीकार कर इसका अनुसरण किया है।

कुछ लोग शंका करते हैं कि गणेश तो शिवजी के पुत्र हैं, भगवान् शंकर के विवाह में वे पैदा नहीं हुए थे, फिर उनका पूजन वहाँ कैसे हुआ?

वास्तव में भगवान् गणेश किसी के पुत्र नहीं, वे अज, अनादि एवं अनन्त हैं। ये जो शिवजी के पुत्र गणेश हुए, वे तो उन गणपति के अवतार हैं। जैसे विष्णु अनादि हैं, परन्तु राम, कृष्ण, नृसिंह, वामन, हयग्रीव–ये सब उनके अवतार हैं। मनु, प्रजापति, रघु, अज–ये सभी राम की उपासना करते थे। दशरथनन्दन श्रीराम उन अनादि राम के अवतार हैं। इसी प्रकार शिवतनय गणपति उन अनादि अनन्त भगवान् गणेश के अवतार हैं।

भगवान् गणपति का स्वरूप अत्यन्त मनोहर एवं मंगलदायक है। वे एकदन्त और चतुर्बाहु हैं। वे अपने चारों हाथों में पाश, अंकुश, दन्त और वरमुद्रा धारण करते हैं। उनके ध्वज में मूषक का चिह्न है। वे रक्तवर्ण, लम्बोदर, शूर्पकर्ण तथा रक्त वस्त्रधारी हैं। रक्तचन्दन के द्वारा उनके

भगवान् गणपति का स्वरूप अत्यन्त मनोहर एवं मंगलदायक है। वे एकदन्त और चतुर्बाहु हैं।
वे अपने चारों हाथों में पाश, अंकुश, दन्त और वरमुद्रा धारण करते हैं।
उनके ध्वज में मूषक का चिह्न है।
वे रक्तवर्ण, लम्बोदर, शूर्पकर्ण तथा रक्त वस्त्रधारी हैं।
रक्तचन्दन के द्वारा उनके अंग अनुलिप्त रहते हैं। वे रक्तवर्ण के पुष्पों द्वारा सुपूजित होते हैं।
अपने स्वजनों, उपासकों पर कृपा करने के लिये वे साकार हो जाते हैं।

अंग अनुलिप्त रहते हैं। वे रक्तवर्ण के पुष्पों द्वारा सुपूजित होते हैं। अपने स्वजनों, उपासकों पर कृपा करने के लिये वे साकार हो जाते हैं। भक्तों की कामना पूर्ण करने वाले, ज्योतिर्मय, जगत् के कारण अच्युत तथा प्रकृति और पुरुष से परे हैं। वे पुरुषोत्तम सृष्टि के आदि में आविर्भूत हुए।

भगवान् श्रीगणेश उमा-महेश्वर के पुत्र हैं। वे अग्रपूज्य हैं, गणों के ईश हैं, स्वस्तिक-रूप हैं तथा प्रणवरूप हैं। उनके अनन्त नामों में—सुमुख, एकदन्त, कपिल (जिनके श्रीविग्रह से नीले और पीले वर्ण की आभा का प्रसार होता रहता है), गजकर्णक, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाशन, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र तथा गजानन——ये बारह नाम अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। इन नामों का पाठ अथवा श्रवण किसी भी संकट के समय किया जा सकता है।

मैं संकटनाश के लिये गणपति से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण स्तोत्र 'संकटनाशन स्तोत्र' दे रहा हूँ जिसका नित्य पाठ कर साधक लाभ उठा सकते हैं। यह स्तोत्र अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं दुर्लभ है। व्यक्ति के जीवन में कितना ही बड़ा संकट क्यों न आया हो, यदि इस स्तोत्र का पाठ नित्य श्रद्धापूर्वक करे तो वह उस संकट से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। इस स्तोत्र के प्रभाव से मुकदमे में सफलता मिलते देखा है।

शत्रु बाधा में यह स्तोत्र कल्पवृक्ष के समान है। इस स्तोत्र का नित्य ग्यारह बार पाठ करें और इसे कार्य सिद्धि होने तक चालू रखें, शत्रु विजय मुकदमे में सफलता हेतु नित्य इसका पाठ करे।

नारद उवाच

संकट नाश के लिये

संकटनाशन स्तोत्रम्

प्रणम्य शिरसा दैवं गौरीपुत्रं विनायकम्। भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायु: कामार्थसिद्धये।।
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्। तृतीयं कृष्ण पिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्।।
लम्बोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च। सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टकम्।।
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्। एकादशं गणपति द्वादशं तु गजानानम्।।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं य: पठेन्नर:। न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम्।।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्। पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम्।।
जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासै: फलं लभेत्। संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशय:।।
अष्टभयो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा य: समर्पयेत्। तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादत:।।

Uchhisht Ganpati Sadhana

No other deity finds such a revered place in not only spiritual literature but also the hearts and minds of the people of India as does Lord Ganpati. So much so that the start of any auspicious or good venture is termed Shree Ganesh. No worship or venture could be complete without the worship of Lord Ganpati at the very start. And if one forgets to procure an idol of the Lord, then worry not ! The priest takes a betelnut and contemplates in it the form of Lord Ganpati.

No matter which place in India one lives, the worship of Lord Ganpati forms an inseparable part of every auspicious occasion. And the reason for this is that Lord Ganpati is called Vighnaharta or one who banishes all problems, obstacles and negative influences. Propitiating the Lord at the beginning of some venture means ensuring a smooth and hurdle-free time ahead.

While in general Lord Ganpati sure helps one overcome all obstacles, but when it comes to facing some major hurdle in life the best course suggested by the scriptures is Sadhana of Uchhisht Ganpati i.e. Ganpati in a standing pose ready to take on and destroy all evil.

Whether it is a court case, a legal battle, enemies, unknown fears, competition from adversaries or evil rituals tried against you by unscrupulous individuals in all such circumstances Ucchisht Ganpati is the deity who could ensure peace, safety and victory.

This Sadhana should be started on a Wednesday and should be tried at night after 9 p.m. The Sadhak should have a bath and wear yellow clothes. Then he should sit on a yellow mat facing North. Before himself he should place a wooden seat covered with yellow cloth.

On it place a **Uchhisht Ganpati Yantra** and offer rice grains, flowers and vermilion on it. Then he should light a ghee lamp and thereafter chant the following verse after taking some water in the hollow of the right palm.

Om Asyochhisht Ganpati Mantrasya Kankol Rishis Viraat Chhandah Uchhisht Ganpati Devataa Sarvaabhisht Siddhaye Jape Viniyogah.

The let the water flow to the ground speaking out the problem you are facing and praying for its remedy.

Then meditate on the form of Uchhisht Ganpati who has four hands, is red complexioned, has three eyes, stands on a lotus, holds a lasso in one hand and is ready to strike the evil ones.

Offer Ladoos to the Lord. Chant one round of Guru Mantra. After that with a **red coral rosary** chant 21 rounds of the following Mantra.

Hreem Gam Hasti-pishaachi-likhe Swaahaa.

Do this daily for eleven days at the same time. On the last night make 108 oblations of mustard seeds in the holy fire chanting the same Mantra. After the Sadhana on 12th day drop the Yantra and rosary in a river or pond.

Sadhana Articles- 500/-
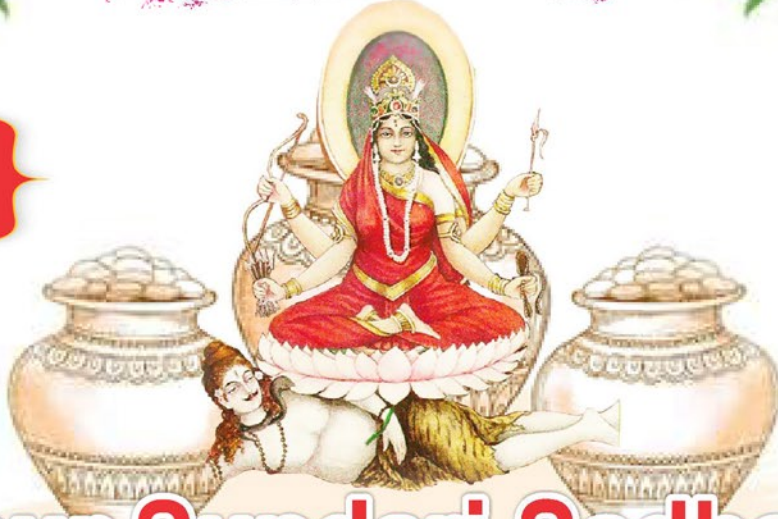
Tripur Sundari Sadhana

Sadhana means to ever keep rising in life. A person who has chosen the path of Sadhanas never has to face defeat or disappointment provided he uses the Sadhanas and their powers for creative purpose and not to harm anyone or to fulfil wrong wishes.

There are thousands forms of Sadhanas of Shakti or the Divine Mother. But among all these rituals the Sadhana of Tripur Bheiravi holds a distinct position. Such is the power of Mother Tripur Sundari that even while accomplishing Sadhana the Sadhak becomes replete with divine energy. Even the ancient Rishis highly acclaimed this wonderful Sadhana. The great Rishi Vashishth once said-Very lucky are those who get to try Tripur Sundari Sadhana.

Maharishi Vishwamitra goes a step forward and states-**Unfortunate are those who overlook this Sadhana and try other small rituals.**

Guru Gorakhanath once commented-My life would have remained unfulfilled if I had missed trying the Tantra form of Tripur Sundari Sadhana.

Jagadguru Shankaracharya said-**The essence of spiritual Sadhanas is Tripur Sundari Sadhana. Through it one could succeed in all other Sadhanas in the world.**

The Goddess Tripur Sundari, one of the ten Mahavidyas, brings good luck, beauty, magnetism, wealth, health and all comforts in life along with spiritual upliftment.

The Sadhana can be tried on any Friday. After 10 pm. in the night take a bath and wear fresh white clothes. Take water in the left palm and sprinkle it with wooden seat covered with white cloth place a betel nut in a copper plate and worship it in the form of Lord Ganpati. Offer on it vermilion, flowers and incense. Light a ghee lamp. Then pray to the Guru for success in the Sadhana. Chant one round of Guru Mantra. Then in another plate place ***Tripur Sundari Yantra.*** On either side of the Yantra place ***Swarnnavati Gutika*** and ***Mrityunjay Rudraksh.***

Take water in the right palm and pledge thus-I (speak your name) am trying this Sadhana of Goddess Tripur Sundari. May the Mother Goddess bestow success upon me.

Then let the water flow to the floor. Next chant thus with the palms joined together and the eyes fixed on the Yantra.

Baalaarkaayutatejasam Trinayanaam
RAktaambarollaasinee, Naanaalankritiraaj-
maanavpusham Baaloduraatshekhraam.
Harateirikshudhanah Srinnim Sumashram
Paasham Mudraa Vibhrateem Shree
Chakraasthitsundareem Trijagataamaadhaar-
bhotaam Smaret.

Next offfer vermilion, rice grains and flowers on the Yantra. Also offer some sweet made from milk. Thereafter chant 21 rounds of the following Mantra with ***Navdurga Tribhuvan Mohini rosary.***

Om Bhagwti Tripur Sundari Sarva Kaarya Siddhi Dehi Dehi Kaameshvaryei Namah.

After Sadhana place the Yantra, Gutika, Rudraksh and rosary in your worship place. Through this Sadhana one can have Dharma (righteousness). Arth (wealth). Kaam (wordly pleasures) and Moksha (spiritual totality) in one's life. If the Sadhana is repeated after 21 days then the results are even better. After the second round of the Sadhana drop all the articles in a river or pond.

Sadhana Articles- 660/-

मातंगी दीक्षा

आज के इस मशीनी युग में जीवन यंत्रवत्, ठूंठ और नीरस बनकर रह गया है। जीवन में सरसता, आनन्द, भोग, विलास, प्रेम, सुयोग्य पति-पत्नी प्राप्ति के लिए मातंगी दीक्षा अत्यन्त उपयुक्त मानी जाती है।

इसके अलावा साधक में वाक् सिद्धि के गुण भी आ जाते हैं। उसमें आशीर्वाद व श्राप देने की शक्ति आ जाती है। उसकी वाणी में माधुर्य और सम्मोहन व्याप्त हो जाता है और जब वह लोगों के बीच बोलता है, तो सुनने वाले उसकी बातों से मुग्ध हो जाते हैं। इससे शारीरिक सौन्दर्य एवं कान्ति में वृद्धि होती है, रूप यौवन में निखार आता है।

इस दीक्षा के माध्यम से हृदय में जिस आनन्द रस का संचार होता है। उमंग, प्रेम और हास्य का संचार होता है, उसके फलतः हजार कठिनाई और तनाव रहते हुए भी व्यक्ति प्रसन्न एवं आनन्द से ओत-प्रोत बना रहता है।

।। ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा।।

योजना केवल 18, 26 एवं जनवरी 2023 इन दिनों के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- **'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'**, जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे।

14 जनवरी 2023

सूर्य लक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल :

माँ कमला उत्सव हॉल,

मीठापुर बस स्टैण्ड, बाईपास मोड़, विग्रहपुर, पटना (बिहार)

आयोजक मण्डल – इंद्रजीत राय–8210259711, 9199409003, महेन्द्र शर्मा–9304931127, देवेन्द्र कुमार, (बरबीगाह)–9661696982, संजय शर्मा–9934682563, टुनटुन यादव–9905022385, अनुराग शर्मा–7834999000, आलेक चौ.–7014701115, जीतू–9308473285, मुन्ना सिंह, पंकज, मनोज मिश्रा, कौशलेन्द्र प्रसाद, डॉ.. संजय जी, डॉ. मधुरेन्द्र कुमार रंजनकुमार गुप्ता, खगौल तारकेश्वर, **एकगर सराय**–मुकेश विश्वकर्मा, अरविन्द, **गया**–उमाशंकर यादव, सुरेश पण्डित, रविन्द्र कुमार, निखिल, धर्मेन्द्र कुमार, **औरंगाबाद**–कामता प्रसाद सिंह, धनंजय सिंह, **कुदरा**–शिवशंकर गुप्ता, आ. सि. साधक परिवार बिदुपुर के समस्त गुरू भाई–बहन, आ.सि. साधक परिवार **मुजफ्फरपुर**–पंकज कुमार, रजनी रंजन त्रिवेदी, रमन झा, प्रकाश कुमार, धीरज झा, धर्मेश, आ.सि. साधक परिवार, **दरभंगा** – अभय कुमार सिंह, **ताजपुर**–प्रभुजी, **लगनिया**–संजीव चौधरी, राजकुमार दास, **मोतिहारी**–सुरेश भारती, रामेश्वर भगत, **हत्था कलौजर**–अरूण कुमार सिंह, रामसियार भंडारी, आ.सि. साधक परिवार **बेगुसराय**–अनिल पासवान, **ढोली**–प्रवीण कुमार, पुसा प्रेमलाल पासवान, **परबत्ता**–अनिरूद्ध झा, आ.सि. साधक परिवार मुरलीगंज के समस्त गुरू भाई–बहन, **मुंगेर** – निवास सिंह, मंजु देवी, **तोई मजरोई (बरबीगाह)** – तरूण कुमार प्रभाकर, विपिन कुमार सिंह, डॉ. रमाकान्त सिंह, पप्पू जी, **बरबीगाह** – सुभाष पण्डित, डॉ. बिरमनी कुमार, प्रवेश दास, सुधीर कुमार, प्रभानन्द पासवान, नवादा–दिनेश कुमार पण्डित, **नादिर गंज (राजगीर)**–बारहन विश्वकर्मा, रामअवतार चौधरी, शम्भूजी, **शेखपुरा**–प्रवीण कुमार और चंदन, अ.सि. साधक परिवार लक्खीसराय के समस्त गुरू भाई–बहन, **बाढ़**–प्रहलाद सिंह, **मोकामा**–रोजकानंद बत्स, **कटिहार**–शैलेष सिंह, **मधेपुरा**–आनंद लिखिल, **पुरनिया**–दयानंद शर्मा, आदित्य जी, **भागलपुर**–शिवानंद झा, सुनील यादव

15 जनवरी 2023

जीवन सिद्धि सूर्य साधना शिविर

शिविर स्थल :

कमला भवन (गेस्ट हाऊस) नियर, जार्ज टाऊन थाने के पास,

सोहबतिया बाग, संगम पेट्रोल पम्प के बगल में,

प्रयागराज (उत्तरप्रदेश)

आयोजक मण्डल – प्रयागराज – इन्द्रजीत राय–8210257911, 9199409003, सूर्यनारायण दुबे एवं विद्या देवी, 7408169214, बिजय शुक्ला, 9415905993, अजीत श्रीवास्तव, 9889041343, सदानन्द राय, राजेश श्रीवास्तव एवं स्वेता श्रीवास्तव–7985467138, सिद्धनारायण त्रिपाठी, अजय दुबे, गयाप्रसाद यादव, ज्ञानचंद जयसवाल, मनीष शेखर, अतिन्द्र सिंह, रामचन्द्र केशरवानी, विनय कुमार, सिपाही लाल, हरिशंकर शर्मा, आश सिंह, विनीता श्रीवास्तव, बृजेश कुमार श्रीवास्तव, सन्तोष निगम, गायत्री बाजपेयी, एस.ए. अवस्थी, विजय शुक्ला, ए.के. साहू, गाटगी राय, चन्द्रबाला, भोलेश्वर मिश्रा, **चित्रकूट**–राजेश दुबे, **मिर्जापुर**–अनिल जयसवाल, मनीष सेठ, मनोज शर्मा, रामआचार्य पाण्डे, विजयनंद गिरी, देवेन्द्र नाथ मिश्रा, मुनमुन दुबे, अमित, अंशु मिश्रा, संतोष मिश्रा, **आ.सि.सा. परिवार मुगलसराय**–सुनील सेठ, जयदेव घोष, मनोज पाण्डे, पप्पू, शिवकुमार जयसवाल, भानुप्रताप यादव, **आ.सि. साधक परिवार वाराणसी**–अजय जयसवाल, प्रेमनंदन पाण्डेय, निदेश सेठ, आशीष दुबे, लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी, ललन शर्मा, **जौनपुर**–अमरनाथ पाण्डे, राजपत सिंह, डॉ. जयप्रकाश, प्रभात, **सुल्तानपुर**–महन्त त्रिपाठी, राजेश मिश्रा, पावन तिवारी, **बादशाहपुर**–अजय गुप्ता, राजू गुप्ता, **लखिमपुर**– चन्द्र कुमार रसतोगी, बाबा सूरज मालदास, बबेरू, सोनुजी, **लखनऊ**– अजय सिंह, सतीश टण्डन, आ.सि. साधक परिवार **अजमगढ़, लाटघाट, रौनापार, अम्बेड़कर नगर, बरहलगंज, दोहरी घाट** के समस्त गुरू भाई–बहन, **गोरखपुर**–के.के. शुक्ला, **बलिया**–विंद्याचल पाण्डे, **सतना (म.प्र.)** – डी.के. पाण्डे।

22 जनवरी 2023

धूमावती सायुज्य माँ बगलामुखी साधना शिविर

शिविर स्थल :

वृन्दावन धाम, सीतासागर के सामने, गैस एजेन्सी के पास,

दतिया, (म.प्र.)

(नोट : 21 जनवरी को पूज्य गुरुदेव के सानिध्य में हवन सम्पन्न होगा)

मुख्य आयोजक :– इन्द्रजीत राय–8210257911, 9199409003, गिरीस शर्मा विद्रोही– 9755833301, रविन्द्र शर्मा, रमाशंकर तिवारी –7974917887, शिवराम मिणा (महोवा) राजस्थान–7055064356, अनुराग द्विवेदी (बुढ़ार) म.प्र.–9826612023, संजीव बुन्दडेला (ग्वालियर), 9406989519, संतोष सिंह (ग्वालियर) 9639419445, राकेश श्रीवास्तव (कटनी म.प..)– 8839566954, जगदीश जी, मकवाना (धार म.प्र.)–9893868418, बागसिंह पवार (खलगाट म.प्र.)–9826860921, बासुदेव ठाकरे (नागपुर विदर्भ महाराष्ट्र), 97646 62006, सत्यनारायण शर्मा (जयपुर)– 9352010718, राजेन्द्र वैष्णव (चित्तौड़गढ़) राजस्थान – 9649350821, चैतन्य गुंजन योगी (भुवनेश्वर, उड़ीसा), **झांसी** – विनोद रायक – 8004274246, प्रमिला शर्मा, राकेश तिवारी–मिसरी लाल मिश्रा, विनय कुमार श्रीवास्तव, राजीव पाठक। **ग्वालियर** – सुमित अहुजा, गौरव चौधरी, विनोद कुमार गुप्ता, हरी शंकर तिवारी। **टिकमगढ़** – अजय केवट, रामलाल वारण, पन्नालाल रावत। **शिवपुर** – मरदान सिंह धाकर। **भोपाल (नरसिंहगढ़)**–मांगीलाल शर्मा। **भोपाल** – सूर्यदेव सोलंकार, अरूण कोरासिया, कृति सोनलकार, पीयुष सोलंकार, मीष्ठी सोनलकार, श्रृष्टि सोनलकार, कल्पना ठाकुर। **इंदौर**–रूपल छावड़ा, रूपेश लकशरी, चंचला शर्मा, संजय शर्मा। **खलगाट** – रवि सोलंकी, अंतिम शुक्ला, मुकेश खंडेलवाल, जितेन्द्र पटेल। **धार** – विजय जी दनगाया, नारायण जी चरण, जगदीश जी तवंर, शांति लाल जी

पाटीदार, सीताराम जी पटेल, लालराम पाटीदार, निखिल कुमरावत। **देवास** – संतोष पठारे जी। **उज्जैन** – सुरेश खत्री जी। **कटनी** – अभिषेक तिवारी। **बरही** – सुभाष पटेल, मधुरानन्द। **सतना** – डी.के. पाण्डेय, ए.पी. मिश्रा। **रिवा** – अमित मिश्रा, डॉ. राजेश्वर वर्मा, संजय शर्मा। **प्रयागराज** – अजित श्रीवास्तव, सुर्यनारायण दुबे। **वाराणसी** – वेद प्रकाश जयसवाल। **आजमगढ़**–विंध्याचल पाण्डेय। **लालघाट** – दुर्गा प्र. मौया, विध्वाशनीराय, डॉ. सुमन चौरासिया। **गोरखपुर** – के.के. शुक्ला। **मिर्जापुर** – अनिल जयसवाल। **कानपुर** – महेन्द्र यादव, शैलेन्द्र सिंह। **मथुरा** – मदन मोहन जी। **वृंदावन** – रेवती रमन जी। **उन्नाव** – प्रभात जी। लखनऊ – अजय सिंह, सतीश टंडन, आ.सि.सा. परिवार आगरा के समस्त गुरू भाई एवं गुरू बहन। **आगरा सिकरी** – मुकेश जी, चित्रकुट (म.प्र.), गायत्री तिवारी-सरोज सिंह, शिव बाबू सिंह। **बबेरू**–अरूणेश गुप्ता, रामचरण कुशवाहा। **मऊरानीपुर(उ.प्र.)**–जगदीश अग्रवाल। **ओरछा (म.प्र.)**– जितेन्द्र सिंह। **गुरसराय**–उमाकांत गुप्ता, नरेन्द्र अग्रवाल। **अंबिकापुर (छत्तीसगढ़)** – राजकुमार यादव, विवेक श्रीवास्तव, कृष्णा गोस्वामी, देवदत्त साहु, सरजू राम, राजकुमार सत्यनारायण जयसवाल, कैलाश प्र. देंवागन। **शक्ति (छत्तीसगढ़)** – समेलाल चौहन। **चांपा (छत्तीसगढ़)** –अजय पटेल। **महोवा (राज.)**–दिलीप कुमार शैनी-8058420359, जगमोहन मिश्रा। **जयपुर** – निरज शर्मा, परम शिवम शर्मा, रघु शर्मा। **डबोक उदयपुर (राजस्थान)**– बंसीलाल मेनारिया, लीला पलिवाल, लोगर लाल मली, लक्ष्मण लाल मली, शंकर लाल रावत, नाना लाल जी मेघावल, रतन लाल जी सोनी, रमेश चन्द्र वैष्णव, श्रीमति सीमा वैष्णव। **अजमेर**–श्रीमति सुशीला बाथम। **आसाम** – पवन दत्ता। **बैंगलोर** – बाडु पदमगोड्डा, दिनदयाल जी, **ललितपुर**–पुष्पलता ठाकुर, मुन्नालाल कुशवाह, कल्पना नामदेव (कोलारस शिवपुरी), संजय सोनी ग्वालियर, संजीव सागौरिया डबरा, जयदीप चौहान डबरा, अभिषेक पुरोहित सेवड़ा (दतिया)

28-29 जनवरी 2023

महालक्ष्मी-काली-सरस्वती त्रिशक्ति साधना शिविर

शिविर स्थल :

कृषि उपज मंडी, बसंतपुर, राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)

मुख्य आयोजक :- अंतर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, छत्तीसगढ़ एवं श्री भगवती-नारायण धर्मार्थ सेवा समिति जिला **राजनांदगांव**– महेश देवांगन-9424128098, जी.आर. घाटगे-9425525748, लखेश्वर चन्द्रा- 98274 92838, चन्द्रकान्त /चेतन साहू-9329682817, सन्तोष मण्डलोई- 94062 39700, गनपत नेताम -9406012157, ज्ञानेश तुमरेकी- 9907102649, यादव राम कोठारी-9753941224, रामनारायण सोनवानी-9827413295, डॉ. भूषण आनन्द साहू-9399782421, तेजेश्वर गौतम-9827950765, लेखराम सेन-9826957606, हितेश ध्रव-9826541021, सहदेव साहू-9893637680, एन.के. कंवर-9644334011, राधेश्याम साहू- 94255 41600, संतोष साहू-9300768605, जनक यादव-9630207072, विकेश वर्मा-7869092221, रमेश निषाद-6265568273, देवलाल सिन्हा-9009490734, प्रतापसिंह प्रधान-7566555111, पिताम्बर ध्रुव-9993242093, सियाराम बरेठ-9755836240, अशोक साहू-93991 35408, अजय साहू-9009579631, **राजनांदगांव**–बेनीराम गजेन्द्र-94076 08711, भगवनती प्रसाद देवांगन-9827181863, संतोष देशमुख-7869325370, दिनेश यादव-7389045471, गणेश श्रीवास्तव-9827800329, लीलेश निषाद-9300681684, चित्ररेखा नकुल सिन्हा-9827810161, बी.ए. राजू, कान्ती साहू, चन्द्रकान्त रामटेके, टी. नुकैया, सूर्या साहू, भागवत गंधर्व, शैलेन्द्र बघेल, जगत क्षत्री, दुर्गेश यादव, प्रदीप यादव, उमेंद्र पटेल, धीरू गावरे, दिनेश प्रजापति, भगत राम साहू, महेश्वर टेमरे, लोमेश देवांगन, नरेश यादव, राजेश सोनी, भावेश देवांगन-8109450621, शांतनु देवांगन-7000395637, चंचल साहू-7898120703, निलेश गजेन्द्र-8817260425, रोहित श्रीवास्तव-9827952535, फूलचंद वर्मा, सुरेश निर्मलकर, कोमल वर्मा, मूलशंकर वर्मा, खिलेश्वर साहू, अमृत इन्दौरिया, ज्योत सोनकर, भोलाराम साहू, मनोज निषाद, राजू साहू, **डोगरगढ क्षेत्र**–लेखराम वर्मा-9981180036, शरद विजयवार-9425565747, कार्तिक साहू-88272 75161, ज्योति भूधर साहू-7647855190, कैलाश महोबिया- 982663 8464, बी.एल. सिन्हा-9406296718, धनुष राम डढ़सेना, सविता दरगढ़, गिरवर साहू-7898351638, छोटू सिन्हा-9406058375, चांदमल अग्रवाल, के.के. पटेल, भगवती देवांगन-9425510147, मोहन सिन्हा, बिकहत देवांगन-7587716589, ओंकार सिन्हा-8103658512, मंशाराम देवांगन, संतोष वर्मा-9407944699, रंजीत वर्मा-9406352013, परमेश्वर उइके, देवनारायण साहू, जयचंद ठाकुर-7879289419, प्रकाश सिन्हा, दिलीप वर्मा, **खैरागढ़ क्षेत्र**–गोवर्धन वर्मा-7771802940, गणेश सिन्हा-8435854897, दावेन्द्र देशमुख-9406060693, मुकेश देशमुख-9174830776, रामकुमार वर्मा-9926946938, पुखराम श्रीवास-9926132675, मेघराज साहू, मेघा यादव, प्रेमेन्द्र कर्महे, कृष्णा साहू-8349050822, दिनेश वर्मा, संदीप गौतम, प्रभा वर्मा-8817096887, पी.एस. सूर्या, चक्रधर देवांगन-9098862348, सुखदास वर्मा-9691078296, टीकाराम वर्मा-8103288589, डॉ. हरिशंकर जंघेल, ठाकुर राम श्रीवास, प्रकाश श्रीवास, गजाधर साहू, **डोंगरगांव क्षेत्र**–हेमंत साहू-6232256666, राजू यदु-9893463106, संतोष चक्रधारी, डी.आर. वर्मा-9009085597, सुंदर लाल साहू-9165044529, गोविन्द साहू, गोवर्धन उर्वशा-9981072223, रुखमण देवांगन-9993104600, डॉ. जितेन्द्र सिंह-9589445714, डाकवर साहू-8349514324, अशोक निषाद-6261284718, यशवंत यदु, रेखा यदु, चतुर यादव, ललित साहू, टीकाराम ठाकुर, भूपेन्द्र साहू, **छुरिया क्षेत्र**–भोलेशंकर साहू-8878909969, गोपाल साहू-8819974252, मनराखन श्याम-7477002531, सुमन सिन्हा-8349090446, दुर्गेश साहू, चन्द्रभान साहू, श्याम साहू, **अम्बागढ़ चौकी**–एम. पी. तिवारी-9098157841, कार्ति कराम कोमा-9111769650, श्रीमती थानेश्वरी तुमरेकी-9406422720, नन्दूराम धनेन्द्र-7772831646, केतुलाल चन्देले, शशीकान्त बाजपेयी, मंगतूराम भारद्वाज-9907948125, महेन्द्र सारथी-9907129567, बाबा शिव गंधर्व, रामजी लाल विश्वकर्मा, प्रहलाद मांडवे, लेखू राम सिन्हा, अशोक निषाद, लोकेश कुमार सिन्हा, पवन सिन्हा, तुलसी वर्मा, जयंत्री सलामे, रामप्रसाद गजेन्द्र, गणेश देवांगन, सुरजन कुंजाम, **रायपुर**–सेवाराम वर्मा-9977928379, संजय शर्मा-9111342100, दिनेश फुटान-7804940001, विजय यादव-9907625184, महेन्द्र वर्मा-9406403210, दुर्गा यादव, मेहतरू यादव, मुकेश चुरहे, दशरथ यादव, संतोष राव लहने, **बलौदा बाजार**–लेखराम चन्द्राकर-9926114722, देवचरण केंवट-8435112361, अग्रहीत धीवर-9754664556, निर्मला पुरुषोत्तम कर्ष-9993371529, लक्ष्मीप्रसाद वर्मा, **धमतरी**–सत्यनारायण मिनपाल-8982551422, दिलीप मीनपाल-7000981779, बी.एल. साहू-

9691368518, डी.आर. दीवान-9340605060, बालोद-डॉ. महेश्वरनाथ योगी-9993316290, इंजी. शिव मरकाम-9424123804, डॉ. जगजीवन निषाद-9977026040, कौशल गजमल्ला-9826935021, चुरामन लाल राव-9406160087, के.के. पटवा-8103344414, धनेश देवांगन- 81033 44414, महेशपुरी गोस्वामी-9981496566, रूद्रेश साहू- 9893243481, दुर्ग-खेदू देवांगन-9993102516, गौरव टंडन- 81098 49856, हेमा साहू-9039800097, वंदना चक्रवर्ती- 7722858100, तेजराम देवांगन-6265565071, दिलेश्वर चन्द्राकर-8305656776, जांजगीर चाम्पा-अजय पटेल-7869775546, जागेन्द्र निर्मलकर-9340436174, थानसिंह जायसवाल, शक्ति-समयलाल चौहान-7722870684, गरियाबंद-शिवमूर्ति सिन्हा, संतोष जैन-7415537926, महासमुंद-खेमन कन्नौजे-9993377750

5 फरवरी 2023

लक्ष्मी गणपति साधना शिविर

शिविर स्थल : शुभ लाभ लॉन एण्ड मैरिज हॉल, पॉलिटेक्निक चौराहा - **जौनपुर (उत्तरप्रदेश)**

मुख्य आयोजक :- इंद्रजीत राय-8210257911, 9199409003, मीरा सिंह-9721115819, रीता गुप्ता-9415326087, दुर्गेश तिवारी- 99190 07780, श्याम जी निखिल-7007079451, अमरनाथ पाण्डेय - 8858803955, प्रमोद दुबे एवं रूबी दुबे-9865112589, प्रेमचन्द पाण्डेय, आरती पाण्डेय, मनोज दुबे, राकेश तिवारी, कलश, महेश, अरुण कुमार मिश्रा, आ.सि.सा. परिवार जगदीशपुर-बदलापुर (जौनपुर)-विभासिंह, शिवानी मिश्रा, दुर्गेश विश्वकर्मा, मनोज विश्वकर्मा, डॉ. शुभम, स्वभाग्य यादव, धर्मेन्द्र यादव, सूरज यादव, अवनिश यादव, अभिषेक यादव, नीरज लाला, प्रेमनाथ सिंह, हरिहरपुर (जौनपुर)-रंजन मिश्रा, रामनगर (जौनपुर)- आनन्द तिवारी, रामपुर (बदलापुर)-सभाजीत तिवारी, सुल्तानपुर-डॉ. शलेन्द्र त्रिपाठी, महन्त त्रिपाठी, पवन तिवारी, राजेश मिश्रा, विनोद मिश्रा, अशोक पाण्डेय, रत्नजय मिश्रा, जयशंकर यादव, कोइरीपुर सुल्तानपुर-अरविन्द विश्वकर्मा, मुकेश विश्वकर्मा, रामगंज सल्तानपुर-डॉ. जयप्रकाश प्रजापति, मुगराबाद साहपुर (जौनपर)-अजय गुप्ता-9519820376, सुनील गुप्ता, जयप्रकाश गुप्ता, राजकमार गुप्ता, राकेश जयसवाल, विशेष कुमार, मनोज कुमार, नन्हेजी, सुनील कुमार, प्रतापगढ़-राजेन्द्र प्रताप सिंह, रायमुदारी दुबे, धर्मेन्द्र कुमार मिश्रा, पवन कुमार, निक्कू, रामचन्द्र मिश्रा, प्रमोद मिश्रा, श्यामलाल गुप्ता, सुभाष शर्मा, लखनऊ-अजयसिंह, सतीश टण्डन, जेबीन पाण्डेय, ममता पाण्डेय, प्रयागराज-सूर्यनारायण दुबे, गया प्रसाद यादव, हरिशंकर तिवारी, मिर्जापुर-मनोजजी, राम आश्रेय पाण्डेय, मनिव सेठ, विजयानन्द गिरी, देवेन्द्र मिश्रा, वाराणसी-अजय जयसवाल, लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, आशीष दुबे, दिनेश सेठ, अविनाश सिंह, मुगलसराय-सुनील सेठ, भानु यादव, शिव जयसवाल, मनोज पाण्डेय, भदोई-मेवालाल निखिल, लल्लू हलवाई, झगरू हलवाई, राधेश्याम प्रजापति, वीरचन्द्र, केराकत जौनपुर-संजय सेठ, त्रिभुवन सेठ, अमित सेठ, संजय शर्मा, प्रेमनाथ सिंह, आजमगढ़-रामदर्शन यादव, विन्ध्याचल पाण्डेय, घनश्याम तिवारी, संजय पाण्डेय, रवि उपाध्याय, जितेन्द्र यादव, चुन्नीलाल चौहान, पूजा यादव, लाटघाट-दुर्गा प्रसाद मौर्या, डॉ. सुमन चौरसिया, विन्ध्यवासनी राय, व्यास मिश्रा, हेमंत दुबे, दोहरी घाट- दयाशंकर तिवारी, डॉ. राजीव पाण्डेय, बडहलगंज-राजकुमार राय, अजय राय, संतोष राय, संतोष गुप्ता एवं बडहलगुज सि.सा. परिवार के समस्त गुरु भाई, रौनापार-रविशंकर यादव, गौरखपुर-के.के. शुक्ला, शेतभान जी, अमरनाथ जी, महाराजगंज-डॉ. रोहित प्रजापति, डॉ. रविप्रताप प्रजापति, जहांगीरगंज-इन्द्रजीत सिंह, रामनगर-अशोक शुक्ला (मैनजर साहेब), अक्षयलाल यादव, खलीलाबाद-रूदल चौधरी, मंतोष जी, मऊ-अशोक कुमार गौण्ड, विन्ध्याचल चौहान, मऊ घोसी-रामभजन चौहान, बलिया-सरोज जी, प्रवीण प्रजापति, सिद्धार्थनगर-आनन्द शुक्ला, नालन्दा (बिहार)-राकश कुमार, चित्तौड़गढ़-राजेन्द्र वैष्णव

11 फरवरी 2023

सर्वत्र विजय प्राप्ति माँ त्रिपुर सुन्दरी साधना शिविर

शिविर स्थल :

श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर, अग्रवाल धर्मशाला, लौंगवुड, - **शिमला (हि.प्र.)**

मुख्य आयोजक :- चमनलाल कौण्डल-9816508757, मंजीतसिंह कंवर-8219416288, अशोक शर्मा-9459960098, तुलसीराम कौण्डल-9418694858, दुनी चन्द-9418400059, सुरेन्द्र कंवर-9418025976, दीपक धरमाईक-9736238855, शुभम-8350877994, बिट्टू गप्ता-7876579590, टेक सिंह चौहान-9418096013, सुन्दर शर्मा-94180 21914, गोपी राम शर्मा-9418030917, मदनलाल-9817299226, राजेश-9418392512, भगवती शर्मा-9418232602, टी.डी. वर्मा-94188 55025, वेदप्रभा मेहता-9816345843, रत्न ठाकुर-94186 16001, राज गिरी-8219342818, विजिन्द्र वर्मा विट्टू-9816128250, सूरजमणी -9318501175, संजय माहेश्वरी-9816043606, शारदा गुलेरिया-9418136341, नरेश शर्मा-94181522967, रामेश्वर शर्मा-9805145051, जीतराम-9418670463, राजकमल भारद्वाज-7973039437, मीना फूल-9816505052, हेमराज-9817168794, राकेश-9418033033, आर. एस. मिन्हास-8894245685, ओमप्रकाश शर्मा-9418250674, दिनेश-9418294383, रघुवीर सिंह-9815986613, पुरुषोत्तम सिंह-8968030635, नन्दलाल-9418009920, शैलेन्द्र शैली-9736050900, संध्या (धर्मशाला), संजीव कुमार, विकास सूद, देव गौतम, संजीत नाग (काँगड़ा), सुनील नाग, निर्मला देवी (हमीरपुर), जाहू सागररत्न चमन, सुन्दर नगर, बंशीराम ठाकुर, जयदेव शर्मा, नूरपुर-पीताम्बर

12 फरवरी 2023

गणपति साधना शिविर

शिविर स्थल : राधा-कृष्ण मन्दिर, **जाहू (वतैल)**, जिला हमीरपुर **(हि.प्र)**

मुख्य आयोजक :- आर.एस. मिन्हास-8894245685, सागरदत्त-9816279816, प्रभदयाल-9882678869, अशोक कुमार-9816026608, चमनलाल-9816398533, ज्ञानचन्द-9816619893, राजकुमार, सुरजीत

सिंह, मोहनलाल शास्त्री, रोशनलाल द्विवेदी, ज्ञानचन्द गौतम, राजेन्द्र कुमार, विजयसिंह, बलदेव सिंह, पूरण चन्द, महेन्द्र सिंह, अमीचन्द, भागीरथ, बृजलाल, अनिल बनियाल। **पालमपुर**-देव गौतम-8894075015, वृन्दा गौतम, संजय सूद, ओंकार राणा, **कांगड़ा**-अशोक कुमार, सुनील नाग, **धर्मशाला**-केसर गुरंग, संध्या, जुल्फीराम, **चौंतड़ा**-संजीव कुमार, अजय कुमार, विनीत कुमार, **हमीरपुर**-निर्मला देवी, राजेन्द्र शर्मा, सुशील भाटिया, **सुन्दरनगर**-जयदेव शर्मा-9816314760, बंशीराम ठाकुर, नीलम, **शिमला**-चमनलाल कौण्डल, टी.एस. चौहान, सुरेन्द्र कंवर, तुलसीराम कौण्डल, **घुमारवीं**-ज्ञान चन्द रतन-9418090783, धर्मदेव शर्मा, सोहनलाल, राजेश कुमार

18 फरवरी 2023

महाशिवरात्रि साधना शिविर

शिविर स्थल :
वैद्यनाथ धाम, देवघर (झारखण्ड)

आयोजक मण्डल-इन्द्रजीत राय-8210257911, 9199409003, सौरभ दास गुप्ता (चितरंजन)-9932858697, कुन्तल मित्रा- 89722 49536, सुनील देवदर्शी (देवघर)-8825105774, विजय कुमार - (देवघर)-7979886176 अनुप चेल (बुण्डू) - 7535817357, भुनेश्वर प्रमाणिक (बुण्डू)- 97713 33701, आभा रानी एवं मुटाई कुदादा - (रांची), 8340 317589, गौतम कुमार (टाटा नगर), डॉ. आर.के. हाजरा (रांची)-6205169797, महेन्द्र बिरूउली-(चाईबासा)-77080 10608, अमरेन्द्र कुमार सिंह (रांची)-9162155183, अरूण कुमार मुण्डा (फुसरो)-8863866106, हरेन्द्र कुमार महतो (गोमिया)-98012 84131, प्रमोद कुमार साव (गोमिया)- 8210885811, दिनेश नायडु (फुसरो)-7992215965, सत्येन्द्र भारती (सिंजुआ)-98351 21114, शम्भु प्रसाद यादव (हटरगंज)-7488154775, राम मनोज ठाकुर-9431357893, धनबाद- शिवानन्द झा (भागलपुर)- 9334738354, सुनील यादव (भागलपुर)-9934583245, शैलेस कुमार सिंह, (कठिहार)-9934635279, देवेन्द्र कुमार (बड़बिगहा)-7079858420, पंकज कुमार (मुज्जफरपुर)-9631099909, प्रेम लाल पासवान (पुसा)- 7294009781, निवास सिंह मुंगेर, चैतन गुंजन योगी जी (लखिसराय)- 8144904640, आ.सि.सा. परिवार चित्ररंजन, बंगाल के समस्त गुरू भाई एवं गुरू बहन, भागलपुर, राजकुमार जी, अनील यादव, जयराम सिंह, शैलेस सिंह, राजेश जी, कैलाश साव, अजय आमर, सरस्वती कुमारी, पंचदेव मण्डल, अरूण कुमार मण्डल, बिरेन्द्र तिवारी, गौतम कुमार, नरेश कुमार रजक, धनंजय जी, कहांलागांव- मोहन यादव, दुर्गादत्त तिवारी, देवघर-भोला खतरी, पुरुषोत्तम सिंह, कार्तिक जी, धनबाद-अरुण सिंह, यूपी सिंह, सुभाष भदानी, कृष्ण मुरारी पाण्डेय, अमलेश पाण्डेय, ममता देवी, बासता कोला धनबाद- गंगा वर्मा, वैजनाथ साव, बिरजू जी, मंजीत सोनी, सुरेश मण्डल, बलियापुर धनबाद- शांति लाल जी सुजन महतो, दुमका-नन्दकिशोर शाह नन्दु, काठीकुण्ड, दुमका - चुन्नू कैवट, कुमुद गुप्ता, सिजुआ-जानेश्वर प्रसाद अनुज सिन्हा, मधुबन- श्याम किशोर सिंह, गोमिया-किस्टो प्रसाद, फुसरो- मनोज सवांसी सोहराई लोहार, आ. सि.सा. परिवार फुसरो के समस्त गुरू भाई/बहन, बोकारो- मोहन सिंह लामा, आर.एन. प्रसाद, अरूण वर्मा, सुभाष कुमार पण्डित, विष्णुगढ-निर्मल विश्वकर्मा, झुमरा पहाड़ क्षेत्र-रामेश्वर महतो, धनेश्वर महतो, सुरेन्द्र महतो, टेकलाल महतो, देवनारायण महतो, हजारीबाग-बसुन्दर नाथ दुवेदी, हंटरगंज-सत्येन्द्र सिंह, कृष्णा सिन्हा, दिलीप कुमार, शम्भू सिन्हा, सचिदानन्द सिन्हा आ.सि.सा. परिवार, आयरूगेरूआ बलुरी डेभो के समस्त गुरू भाई एवं गुरू बहन, चतरा-अर्जुन रजक, गुमला-विरवल भगत, जनार्दन भगत, रामेश्वर बागेल, धनराज साई टैकरा, बन्धन महतो, अनील पाण्डेय बिनु महतो, राहुल राम, बिनोद मांझी, सुनील सिंह, संजय तिवारी, राँची- चंद्रशेखर पाण्डेय, मनीश राज, मुनमुन सिंह, ध्रुव कुमार वर्मा एवं रांची के समस्त गुरूभाई एवं गुरू बहन आ.सि.सा. परिवार, बुण्डू के समस्त गुरू भाई एवं गुरू बहन, स्वप्न चेल, झंटु चेल, गोपीनाथ महतो, विष्णु सिन्हा, अशोक जी, तमाड़ - सुरेश चन्द्र महतो दिनेश प्रजापति-आ.सि.सा. परिवार, टाटा के समास्त गुरू भाई एवं गुरू बहन, नीरज कुमार श्रीवास्तव, मनोज कुमार, सरायकेला, श्याम सरण गोडसोरे, दीपक जी, चाईबासा, श्रीमति लक्ष्मी बिरूली, जोलेन ठोयसे, जुरिया कुदादा, पप्पू सिंह, डामु हेम्ब्रम, मोना चन्द स्वामी, बिहार- पटना- संजय सिंह, महेन्द्र शर्मा, टुनटुन यादव, मुन्ना सिंह, आ.सि.सा. परिवार बिदुपुर एवं हाजीपुर, समास्त गुरू भाई-बहन, मुज्जफरपुर, रजनी रंजन त्रिवेद्वी, रमन झा, रामानेक सिंह, प्रकाश कुमार, अजय कुमार पाण्डेय, राजीव कुमार, प्रवीण कुमार, रामानन्द झा, संजय कुमार श्रिवास्तव, सितामढ़ी- विकास मिश्रा, संजय राय, हत्था कनौजर समस्तीपुर, अरूण कुमार सिंह, राम श्रृंगार भण्डारी दिलीप कुमार, ताजपुर- प्रभु जी, दरभंगा, अमरिश कुमार अभय सिंह, लखिसराय -निकु कुमार, गुलशन कुमार, टोनी शर्मा, बेगुसराय-अनील कुमार (जनरेटर) गिरस जी- काटीहार, राजेश कुमार, पुर्णिया - दयानन्द शर्मा , मधेपुरा, आनन्द जी , बिरेन्द्र ठाकुर - आ.सि.सा. परिवार के मधेपुरा एवं मुरलीगंज के समास्त गुरू भाई गुरू बहन, शेखपुरा- प्रमानन्द पासवान, प्रवीन कुमार, बरबिगहा- डॉ. बीरमणी कुमार, सुभाष कुमार पण्डित, तरूण कुमार प्रभाकर, सुधीर पण्डित गया उमाशंकर यादव, सुरेश पण्डित, रामाधार चौधरी, धमेन्द्र कुमार, मिलेट्री मेन, रविन्द्र निखिल, सचिदानन्द जी, मदनपुर - देवनारायण प्रजापति, औरंगाबाद कामता प्रसाद सिंह, वृजकिशोर पाठक, धनंजय सिंह, कुदरा - शिवशंकर सिंह, आ.सि. सा. परिवार नरकटिया मोतिहारी के समास्त गुरू भाई-बहन। जमुई से अनील वर्मा, कुणैली सुपौल, उमेश्वर यादव, रामसेवक यादव, कमलपुर धातेन्द्र जी, कांटीकुन्द-दुमका-संदीप, राजविराज (नेपाल)- घनश्यामदास निखिल।

5-6 मार्च 2023

होली महोत्सव साधना शिविर

गुरुधाम

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी

जोधपुर

आयोजित साधना शिविर के दृश्य

दिल्ली कार्यालय – सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 December, 2022
Posting Date : 21-22 December, 2022
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2022-2024
Licensed to post without prepayment
Licensed No. RJ/WR/WPP/14/2022
Valid up to 31.12.2024

माह : जनवरी एवं फरवरी में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
18 जनवरी
24 फरवरी

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)
26-27 जनवरी
25-26 फरवरी

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002